केंद्रीय कृषि विवि से 35 छात्र खेल के लिए हुए रवाना

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

समूह में छात्र–छात्राएं व वैज्ञानिक.

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा की स्पोर्ट्स टीम 22वें अखिल भारतीय कृषि खेल प्रतियोगिताओं में शिरकत करने के लिए हैदराबाद रवाना हुई. निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमन त्रिवेदी ने समारोहपूर्वक टीम को फैजाबाद के लिए रवाना किया. अखिल भारतीय कृषि खेल प्रतियोगिता फैजाबाद कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित की जा रही है. इसमें देश भर के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालय की टीम शिरकत करेगी. पूसा विश्वविद्यालय की टीम में विभिन्न विभागों और महाविद्यालयों के 35 छात्र-छात्राएं शामिल हैं.

प्रभात खबर
Thursday, May 1, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6812751a681a70f7f1875d74

विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स टीम जाएगी हैदराबाद

पूसा : डा . राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा की स्पोर्ट्स टीम 22वें अखिल भारतीय कृषि खेल प्रतियोगिताओं में शिरकत करने के लिए हैदराबाद जा रही है। निदेशक छात्र कल्याण डा . रमन त्रिवेदी ने समारोहपूर्वक टीम को रवाना किया। अखिल भारतीय कृषि खेल प्रतियोगिता फैजाबाद कृषि विश्वविद्यालय में हो रहा है। पूसा विश्वविद्यालय की टीम में विभिन्न महाविद्यालयों के 35 छात्र-छात्राएं शामिल हैं। (जास)

Dainik Jagran 01-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 4 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल आ सकते हैं। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा की संभावना बनी रह सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
01 मई	31.0	21.0
02 मई	31.0	21.5
दरभंगा		
01 मई	31.0	21.5
02 मई	32.0	21.0
पटना		
01 मई	34.0	22.0
02 मई	34.0	22.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 01-05-2025

शहद की मार्केटिंग व उचित मूल्य पाने को प्रबंधन के गुर सीखें किसान : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में छह दिवसीय मधुमक्खी पालन कार्यक्रम की शुरुआत की गई. जिसका विषय मधु उत्पादन में वैज्ञानिक पद्धति द्वारा उद्यमों को मजबूत बनाना और मधु का मूल्य संवर्धन है. इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को मधुमक्खी पालन और मधु उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमी बनाने को लेकर प्रशिक्षित करना है. जिससे वे अपने व्यवसाय को मजबूत बना सकें. अधिक आय अर्जित कर सकें. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि मधु उत्पादन एक लाभकारी एवं कृषि से संबंधित व्यवसाय है. उन्होंने कहा कि किसानों को शहद की मार्केटिंग और उचित मूल्य पाने के लिए प्रबंधन के गुर सीखने होंगे.

संबोधित करते कुलपति डा पीएस पांडेय.

कुलपति डा पांडेय ने बताया कि प्रबंधन और मूल्य संवर्धन के कारण जो मधु विश्वविद्यालय में तीन सौ रुपए किलो बेचा जा रहा था वह आज आठ सौ रुपए किलो तक बिक रहा है. विश्वविद्यालय मघु के जीआइ टैगिंग को लेकर भी प्रयास कर रहा है.

निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों के हित में लगातार कार्य कर रहा है. मधु किसानों को विश्वविद्यालय से जुड़कर अपना व्यवसाय करना चाहिए. निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने कहा कि मधुमक्खीपालन एक कल्याणकारी व्यवसाय है.कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संकाय के निदेशक डॉ. रामदत्त ने मधु के मूल्य संवर्धन के बारे में चर्चा की.

सहायक प्राध्यापक डॉ. मोहित कुमार के निर्देशन में किया गया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ. साईं रेड्डी ने किया. कार्यक्रम के दौरान कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ यू. मुखर्जी, डॉ रश्मि सिन्हा थे.

प्रभात खबर
Saturday, May 3, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/681516078bbaa8c83adfed8f

दैनिक भास्कर - 3/05/25 P-22

कार्यक्रम • मधु उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमों को मजबूत बनाने एवं मधु के मूल्य संवर्धन विषय पर प्रशिक्षण

मधु की मार्केटिंग व उचित मूल्य प्राप्त करने के लिए किसानों को गुर सीखने की जरूरत : वीसी

मधु उत्पादन लाभकारी कृषि व्यवसाय, किसानों को इस क्षेत्र से जुड़कर आय हासिल करना चाहिए

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पंचतंत्र भवन सभागार में वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मधु उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमों को मजबूत बनाने एवं मधु के मूल्य संवर्धन विषय पर किसानों के लिए छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दो मई से सात मई तक चलने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को मधुमक्खी पालन और मधु उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमी बनाने के लिए उन्हें प्रशिक्षित करना है जिससे वे अपने व्यवसाय को मजबूत बना सकें और अधिक आय अर्जित कर सकें। प्रशिक्षण का उद्घाटन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे विवि के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थी व वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि मधु उत्पादन एक लाभकारी कृषि व्यवसाय है। किसानों को इस क्षेत्र से जुड़कर आय हासिल करना चाहिए। हालांकि उन्होंने कहा कि किसानों को मधु की मार्केटिंग और उचित मूल्य प्राप्त करने के लिए उन्हें खासकर प्रबंधन के गुर सीखने चाहिए।

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति और कार्यक्रम में मौजूद प्रशिक्षणार्थी।

विश्वविद्यालय मधु के जीआई टैगिंग को लेकर भी प्रयास कर रहा

उन्होंने बताया कि प्रबंधन और मूल्य संवर्धन के कारण जो मधु विश्वविद्यालय में तीन सौ रुपए किलो बेचा जा रहा था। वो आज आठ सौ रुपए किलो तक बिक रहा है और देश भर में इसकी इतनी मांग है कि विश्वविद्यालय इसे पूरा नहीं कर पा रहा है। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय मधु के जीआई टैगिंग को लेकर भी प्रयास कर रहा है। जीआई टैगिंग के बाद मधु के दाम में और बढ़ोतरी होगी जिससे किसानों को फायदा होगा। निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों के हित में लगातार कार्य कर रहा है। मधु उत्पादन में रुचि रखने वाले किसानों को विश्वविद्यालय से जुड़ कर अपना व्यवसाय शुरू करना चाहिए। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने कहा कि मधुमक्खी पालन एक कल्याणकारी व्यवसाय हैं। इस व्यवसाय से न सिर्फ पर्यावरण को संरक्षित रखने में सहयोग मिलता है बल्कि इससे फसलों और फलों के उत्पादन में भी वृद्धि होती है। कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संकाय के निदेशक डॉ. रामदत्त ने मधु के मूल्य संवर्धन के बारे में विस्तार से चर्चा की।कार्यक्रम का आयोजन सहायक प्राध्यापक डॉ. मोहित कुमार के निर्देशन में किया गया जिसे राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड द्वारा प्रायोजित किया गया था। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. साईं रेड्डी ने किया।

नवीनतम तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई

छह दिवसीय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में किसानों को मधुमक्खी पालन और मधु उत्पादन के क्षेत्र से जुड़े नवीनतम तकनीकों और प्रबंधन पद्धतियों के बारे में जानकारी दी जाएगी जिससे किसान अपने व्यवसाय को और अधिक लाभदायक बना सकेंगे। कार्यक्रम के दौरान कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. उदयन मुखर्जी, डॉ. रश्मि सिन्हा समेत विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी मौजूद थे।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 30 अप्रैल तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में इस दौरान आसमान में बादल आ सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 38-40 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 25-29 डिग्री के आसपास रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
03 मई	39.0	22.0
04 मई	39.8	22.5
दरभंगा		
03 मई	39.8	22.5
04 मई	40.0	22.8
पटना		
03 मई	41.0	23.0
04 मई	41.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 03-05-2025

मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण शुरू

कृषि विवि के पंचतंत्र के सभागार में संबोधित करते कुलपति व अन्य।

पूसा,निसं। डॉ.राजेंद्रप्रसाद केंद्रीय कृषि विवि कें कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि मधु उत्पादन एक लाभकारी कृषि व्यवसाय हैं। इससे बेहतर लाभ के लिए मधु उत्पादको को इसकी मार्केटिंग के गुर सीखने की जरूरत है। बेहतर प्रबंधन व मूल्य संवर्धन कर विवि 3 सौ रूप्ये बिकने वाला शहद अब 8 सौ रूपये तक बेच रहा है। इसकी मांग देश भर में है।

मौका था मधु उत्पादन में वैज्ञानिक पद्धति सें उद्यमो को मजबूत बनाना और मूल्य संवर्धन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। निदेशक अनुसंधान डॉ.एके सिंह ने कहा कि विवि किसानों के हित में लगातार कार्य कर रहा है। डीन डॉ.मयंक राय ने कहा कि मधुमक्खी पालन एक कल्याणकारी व्यवसाय है। कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संकाय के निदेशक डॉ.रामदत्त ने मधु के मूल्य संवर्धन पर चर्चा की। संचालन डॉ.मोहित शर्मा व धन्यवाद डॉ.साई रेड्डी ने किया। मौके पर डॉ.उद्यन मुखर्जी, डॉ.रश्मि सिन्हा व अन्य मौजूद थे।

Hindustan 03-05-2025

शहद के विपणन एवं मूल्य संवर्धन के लिए प्रबंधन ज्ञान जरूरी : कुलपति

समस्तीपुर (एसएनबी)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के पंचतंत्र भवन सभागार में मधु उत्पादन में वैज्ञानिक पद्धति द्वारा उद्यमों को मजबूत बनाने और मधु का मूल्य संवर्धन विषय पर आधारित छह दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण का कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को मधुमक्खी पालन और शहद उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमी बनाने को लेकर प्रशिक्षित करना है, जिससे मधुमक्खी पालक किसान अपने व्यवसाय को मजबूत बना सकें और अधिक आय अर्जित कर सकें। कार्यक्रम में उपस्थित कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि मधु उत्पादन एक लाभकारी कृषि व्यवसाय है। इसकेलिए किसानों को शहद की मार्केटिंग और उचित मूल्य पाने के लिए प्रबंधन के गुर सीखने होंगे। कुलपति ने कहा कि प्रबंधन और मूल्य संवर्धन के कारण जो मधु विश्वविद्यालय में तीन सौ रुपए किलो बेचा जा रहा था, वो आज आठ सौ रुपए किलो तक बिक रहा है और देश भर में इसकी मांग इतनी है कि विश्वविद्यालय इसे पूरा नहीं कर पा रहा है। कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय मधु के जीआई टैगिंग को लेकर भी प्रयास कर रहा है और जीआई टैगिंग मिलने के बाद शहद के मुल्य में और बढ़ोतरी होगी जिससे किसानों को फायदा मिलेगा। इस अवसर पर निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों के हित में लगातार कार्य कर रहा है और मधु उत्पादक किसानों को विश्वविद्यालय से जुड़ कर अपना व्यवसाय बढाना चाहिए। वहीं निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने कहा कि मधुमक्खी पालन एक कल्याणकारी व्यवसाय है। इससे न सिर्फ पर्यावरण को संरक्षित रखने में सहयोग मिलता है, बल्कि फसलों और फलों के उत्पादन में भी वृद्धि होती है। कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संकाय के निदेशक डॉ. रामदत्त ने मधु के मूल्य संवर्धन के बारे में चर्चा की। सहायक प्राध्यापक डॉ. मोहित कुमार के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. साईं रेड्डी ने किया। मौके पर कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ उदयन मुखर्जी, डॉ रश्मि सिन्हा समेत कई वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षु मौजूद थे।

प्रशिक्षण शिविर का उद्‌घाटन करते वीसी व अन्य।

कैशलेस सिस्टम से लैस हुआ बीज बिक्री केंद्र

पूसा .डा राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ बीज निदेशालय के माध्यम से खरीफ फसलों की बीज बिक्री की शुरुआत हो चुकी है. इसमें मुख्य रूप से धान के विभिन्न प्रभेदों में बीपीटी 5204, प्रभात, राजेन्द्र भगवती, राजेन्द्र कस्तुरी, राजेन्द्र महसुरी -1, राजेन्द्र नीलम, राजेन्द्र सरस्वती, राजेन्द्र सुवासिनी, राजेन्द्र स्वेता, राजश्री, सहभागी, सुधा, स्वर्णा सब-1, वैदेही, सीआर धान 315, बीआरआरआई-84, सांवा आरएयू 5 एवं ढ़ोली सांवा 1, रागी बीआर-407, राजेन्द्र मडुआ-1, आरएयू-3, आरएयू-8, मक्का शक्तिमान -5, कौनी :- राजेन्द्र कौनी 1, चीना बीआर-7, काऊ पी काशी निधि; भिण्डी काशी कांति एवं ढैचा के बीजों की बिक्री शुरू कर दी गई है. डा डीके राय, निदेशक बीज निदेशालय ने बताया के किसान बीज निदेशालय के कृषि सेवा केन्द्र (बीज बिक्री केन्द्र) से गुणवतापूर्ण उपरोक्त फसलों के विभिन्न प्रभेदों के बीज खरीद सकते हैं. किसानों की सुविधा के लिए बीज बिकी के लिए कैशलेस सुविधा की भी व्यवस्था की गई है.

प्रभात खबर
Sunday, May 4, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/681659b569f3f524e860407d

भास्कर 4/5/25 पेज 20

कृषि • केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

शाही लीची अब कलर ब्रेक स्टेज में पहुंची, बागों में नमी बनाएं रखें

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार की प्रसिद्ध शाही लीची अब अपने निर्णायक चरण यानी कलर ब्रेक स्टेज में प्रवेश कर चुकी है। यह वही समय होता है जब लीची के कच्चे हरे फलों का रंग धीरे-धीरे गुलाबी या लालिमा युक्त होने के साथ-साथ उसकी मिठास बढ़ने लगती है। इस महत्वपूर्ण अवस्था पर लीची उत्पादकों को विशेष सावधानी बरतने के साथ-साथ बाग में वैज्ञानिक प्रबंधन करने की आवश्यकता होती है। बागों के वैज्ञानिक प्रबंधन से फलों की गुणवत्ता बेहतर होने के साथ-साथ उसकी मिठास और विपणन मूल्य में भी उल्लेखनीय वृद्धि होती हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. एसके सिंह ने दी है। डॉ. सिंह के अनुसार कलर ब्रेक स्टेज लीची उत्पादन का वह मोड़ होता है जहां थोड़ी सी वैज्ञानिक सूझबूझ लीची को एक सामान्य फल से एक प्रीमियम ब्रांड में परिवर्तित कर सकती है।

इस समय लीची के बाग में निर्धारित मात्रा में सिंचाई यानी जल प्रबंधन काफी महत्वपूर्ण मायने रखता हैं। किसान इस समय हल्की सिंचाई सप्ताह में 2 से 3 बार करें। तापमान यदि 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो तो बागों में नमी बनाए रखना आवश्यक है। जलभराव से बचें और यदि संभव हो तो ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाएं। पौधों को पोषक तत्व की आपूर्ति प्रदान करने के लिए किसान इस समय पेड़ के जड़ो के करीब तीन से चार फीट की दूरी पर एक गोलाकार गड्ढा खोदकर उसमें निर्धारित मात्रा में पोटाश और कैल्शियम आधारित उर्वरक डालें। यह उर्वरक फल की त्वचा को मजबूत और रंग को गहरा करने में सहायक होगा। इसके अलावे किसान 0.2 प्रतिशत बोरॉन का फोलियर स्प्रे भी पेड़ो पर करें।

रखें ध्यान : सप्ताह में 2-3 बार करें हल्की सिंचाई

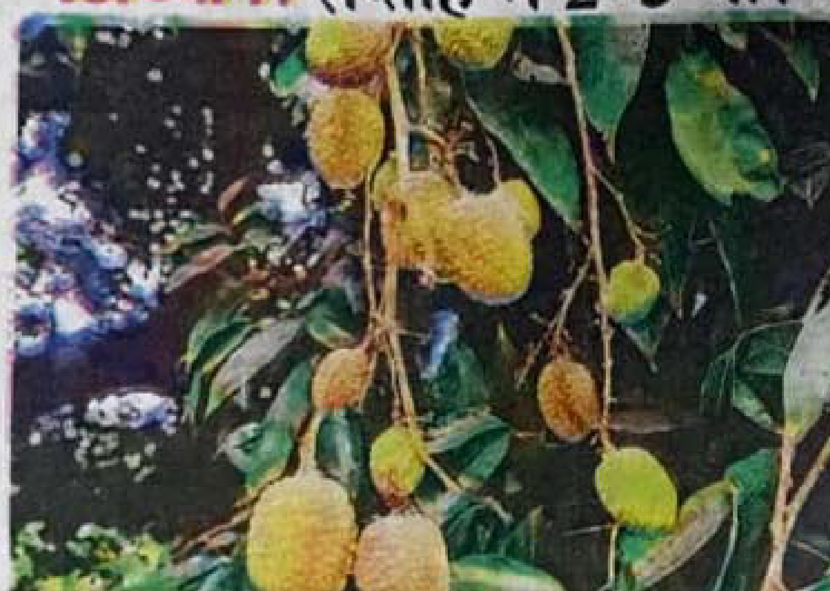

कलर ब्रेक स्टेज में पहुंची लीची।

पोषक तत्वों का समुचित वितरण सुनिश्चित करें

किसान पेड़ पर लगे अत्यधिक फलों को हटाकर शेष फलों में पोषक तत्वों का समुचित वितरण सुनिश्चित करें। इस समय बाग में नाइट्रोजन की अधिकता न करें वरना पत्तियां घनी होकर फल का रंग व मिठास कम कर देंगी। अनियंत्रित सिंचाई या झटकों से फल गिराना नुकसानदायक हो सकता है। फल तुड़ाई से 15 दिन पूर्व सभी रासायनिक छिड़काव बंद कर दें। अपरिपक्व फल तोड़ने से बचें तथा शाही लीची की तुड़ाई का उपयुक्त समय 20 मई के बाद है। इसलिए उसी समय पर फलों की तुड़ाई करें।

कीट व रोग प्रबंधन के लिए दी ये सलाह

इस समय लीची में फल छेदक कीट, एन्थ्रेक्नोज और पाउडरी मिल्ड्यू रोग के लगने की संभावना बनी रहती हैं। इन रोगों से बचाव के लिए नीम तेल, ट्राइकोडर्मा या जैविक एजेंट्स का उपयोग करें। गंभीर संक्रमण की स्थिति में अंतिम रासायनिक छिड़काव तुड़ाई से 12 से 15 दिन पूर्व करें। इसके लिए निम्न विकल्पों में से कोई एक उपयोग करें जैसे नोवल्यूरॉन दवाई (10 प्रतिशत इसी) की 1.5 एमएल मात्रा प्रति लीटर या इमामेक्टिन बेन्जोएट (5 प्रतिशत एसजी) की 0.7 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन (5 प्रतिशत इसी) की मात्रा 0.7 एमएल प्रति लीटर पानी में घोलकर पेड़ों पर छिड़काव करें। इन दवाओं में स्टिकर यानी गोंद या डिटर्जेंट अवश्य मिलाएं तथा वर्षा की स्थिति में छिड़काव दोहराएं।

कृषि विवि में खरीफ फसलों की बीज बिक्री हुई शुरू

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के बीज निदेशालय, ढोली में खरीफ फसलों के बीजों की बिक्री शुरू हो गई है।

निदेशालय के निदेशक डॉ.डीके राय ने बताया कि धान की बीपीटी 5204, प्रभात, राजेन्द्र भगवती, राजेन्द्र कस्तुरी, राजेन्द्र महसुरी-1, राजेन्द्र नीलम, राजेन्द्र सरस्वती, राजेन्द्र सुवासिनी, राजेन्द्र स्वेता, राजश्री, सहभागी, सुधा, स्वर्णा सब-1, वैदेही, सीआर धान 315, बीआरआरआई-84 प्रभेद उपलब्ध है। इसके अलावा सांवा के आरएयू 5, ढ़ोली सांवा 1, रागी के बीआर-407, राजेन्द्र मड़ुआ-1, आरएयू-3, आरएयू-8; मक्का के-शक्तिमान-5; कौनी के राजेन्द्र कौनी 1, चीना के बीआर-7, काऊ पीरू काशी निधि; भिण्डी काशी क्रांति एवं ढ़ैंचा के बीजों की बिक्री शुरू कर दी गई है।

डॉ. राय ने बताया कि किसान बीज निदेशालय के कृषि सेवा केन्द्र (बीज बिक्री केन्द्र) से गुणवतापूर्ण फसलों के बीज खरीद सकते हैं। किसानों की सुविधा के लिए बीज बिक्री के लिए कैशलेस सुविधा की भी व्यवस्था की गई है।

Hindustan 04-05-2025

किसानों ने वीडियो फिल्म से सीखी मृदा प्रबंधन की तकनीक

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के सहयोग से वैशाली जिला में कृषि ज्ञान वाहन का सफलतापूर्ण परिचालन किया गया. इस वाहन के तहत किसानों को खेतों में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए आधुनिक कृषि ज्ञान और तकनीकी सहायता मुहैया कराई गई. वाहन ने दो प्रखंड लालगंज और हाजीपुर के तीन पंचायत में पहुंच कर करीब 120 किसानों को कृषि तकनीकों से लाभान्वित किया. इसकी मदद से किसानों को कृषि विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक के द्वारा कृषि उपकरणों की जानकारी दी गई. विशेषज्ञों ने इस वाहन की विशेषता के बारे में किसानों को बताया. कैसे यह वाहन किसानों को फसल उगाने से लेकर, रोग नियंत्रण बीज चयन, पानी की बचत और मृदा प्रबंधन के बारे में वीडियो फिल्म के माध्यम से जानकारी देंगे. जिससे किसानों के उत्पादन में वृद्धि होगी और उनकी आय में सुधार आयेगा. किसानों ने इस परियोजना को लेकर उत्साह व्यक्त किया. इस तरह की सुविधाओं की कमी को महसूस करते हुए इसे एक बड़ा कदम बताया. कार्यक्रम में उपस्थित किसानों ने विश्वविद्यालय की इस पहल की सराहना करते हुए इसे कृषि विकास की दिशा में एक बड़ा कदम बताया. उन्होंने कहा कि ऐसे ज्ञानवर्धक प्रयास न केवल कृषि को लाभकारी बनायेंगे, बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर भी बनायेंगे.

प्रभात खबर
Monday, May 5, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhat

धान की दो नई किस्मों से बढ़ जाएगा 30% उत्पादन

- यह किस्में बिहार, झारखंड, बंगाल, यूपी, एमपी, छत्तीसगढ़ आदि के अनुरूप तैयार
- जीनोम संपादित धान की किस्में बनाने वाला विश्व का पहला देश बना भारत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) ने जीनोम एडिटिंग (संपादित) कर धान की दो नई किस्में विकसित की हैं, जिनकी विशेषता कम लागत, कम पानी और कम समय में अधिक उत्पादन है। इससे 30 प्रतिशत तक धान का उत्पादन बढ़ जाएगा और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को भी कम करने में मदद मिलेगी। पहली किस्म का नाम कमला (डीआरआर-100) है और दूसरी का नाम डीएसटी राइस-1 है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रविवार को इसे जारी किया। भारत जीनोम संपादित धान से चावल की किस्में विकसित करने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। चौहान ने इसे कृषि शोध के क्षेत्र में भारत की ऐतिहासिक उपलब्धि बताया और कहा कि ये किस्में राष्ट्र में दूसरी हरित क्रांति का बिगुल बजाने में अग्रणी भूमिका निभाएंगी। जल्द ही किसानों को उपलब्ध करा दिया जाएगा।

देश में विकसित विश्व की पहली दो जीनोम संपादित धान की किस्मों का विकास वैज्ञानिक शोध में नवाचार की शुरुआत है। इस तकनीक के जरिये मूल डीएनए में सूक्ष्म बदलाव कर फसलों की नई किस्म तैयार की जाती है। सामान्य फसलों में ऐसे परिवर्तन को केंद्र सरकार के जैव सुरक्षा नियमों के तहत मंजूरी प्राप्त है। आइसीएआर 2018 से दोनों किस्मों को विकसित करने के लिए काम कर रहा था। इन किस्मों को बिहार, झारखंड, बंगाल, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु और महाराष्ट्र की कृषि परिस्थितियों के अनुरूप विकसित किया गया है। इन राज्यों में इन किस्मों की खेती से लगभग 45 लाख टन अधिक धान का उत्पादन होगा। ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन में 20 प्रतिशत यानी 32 सौ टन कमी आएगी। फसल तैयार होने में 20 दिन कम लगने से लगभग तीन सिंचाई कम लगेगी।

सांबा महसूरी से विकसित कमला, एमटीयू से बना पूसा: कमला को जीनोम तकनीक के जरिये आइसीएआर के भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान (हैदराबाद) ने बारीक दाने वाली किस्म सांबा महसूरी (बीपीटी 5204) से विकसित किया है।

Dainik Jagran 05-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 7 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल देखे जा सकते है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 22-25 डिग्री रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
05 मई	29.0	22.0
06 मई	29.5	22.0
दरभंगा		
05 मई	29.5	22.0
06 मई	30.5	22.5
पटना		
05 मई	31.0	23.0
06 मई	31.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 05-05-2025

शहद के विपणन एवं मूल्य संवर्धन के लिए प्रबंधन ज्ञान जरूरी : कुलपति

समस्तीपुर (एसएनबी)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय, पूसा के पंचतंत्र भवन सभागार में मधु उत्पादन में वैज्ञानिक पद्धति द्वारा उद्यमों को मजबूत बनाने और मधु का मूल्य संवर्धन विषय पर आधारित छह दिवसीय मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण का कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को मधुमक्खी पालन और शहद उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमी बनाने को लेकर प्रशिक्षित करना है, जिससे मधुमक्खी पालक किसान अपने व्यवसाय को मजबूत बना सकें और अधिक आय अर्जित कर सकें। कार्यक्रम में उपस्थित कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि मधु उत्पादन एक लाभकारी .षि व्यवसाय है। इसकेलिए किसानों को शहद की मार्केटिंग और उचित मूल्य पाने के लिए प्रबंधन के गुर

प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन करते वीसी व अन्य।

सीखने होंगे। कुलपति ने कहा कि प्रबंधन और मूल्य संवर्धन के कारण जो मधु विश्वविद्यालय में तीन सौ रुपए किलो बेचा जा रहा था, वो आज आठ सौ रुपए किलो तक बिक रहा है और देश भर में इसकी मांग इतनी है कि विश्वविद्यालय इसे पूरा नहीं कर पा रहा है। कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय मघु के जीआई टैगिंग को लेकर भी प्रयास कर रहा है और जीआई टैगिंग मिलने के बाद शहद के मुल्य में और बढ़ोतरी होगी जिससे किसानों को फायदा मिलेगा। इस अवसर पर निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों के हित में लगातार कार्य कर रहा है और मधु उत्पादक किसानों को विश्वविद्यालय से जुड़ कर अपना व्यवसाय बढाना चाहिए। वहीं निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने कहा कि मधुमक्खी पालन एक कल्याणकारी व्यवसाय है। इससे न सिर्फ पर्यावरण को संरक्षित रखने में सहयोग मिलता है, बल्कि फसलों और फलों के उत्पादन में भी वृद्धि होती है। .षि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संकाय के निदेशक डॉ. रामदत्त ने मधु के मूल्य संवर्धन के बारे में चर्चा की। सहायक प्राध्यापक डॉ. मोहित कुमार के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. साईं रेड्डी ने किया। मौके पर कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ उदयन मुखर्जी, डॉ रश्मि सिन्हा समेत कई वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षु मौजूद थे।

Rashtriya Sahara 05-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 7 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल देखे जा सकते है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 22-25 डिग्री रह सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
06 मई	29.0	22.0
07 मई	29.5	22.0
दरभंगा		
06 मई	29.5	22.0
07 मई	30.5	22.5
पटना		
06 मई	31.0	23.0
07 मई	31.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagaran 06-05-2025

आंधी-पानी से मौसम हुआ सुहाना, जिले में 11.8 मिमी हुई बारिश, कई जगह नुकसान

रोसड़ा में सबसे अधिक 22.2 मिमी बारिश

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

जिले में सोमवार की रात आयी आंधी पानी से मौसम सुहाना हो गया. रात में जिले में झमाझम बारिश हुई. शाम तक लोग गर्मी से परेशान थे. वहीं देर रात शुरू हुई बारिश और आंधी ने मौसम में बदलाव ला दिया है. बारिश के कारण सब्जी, दलहन सहित कई फसलों को लाभ पहुंचा है. वहीं आंधी के कारण आम की फसलों को नुकसान पहुंचा है. जिले में औसतन 11.8 मिली बारिश हुई है.इसमें सबसे अधिक बारिश रोसड़ा प्रखंड में हुई है.

रोसड़ा प्रखंड में 22.2 मिमी बारिश हुई है. वहीं सबसे कम बारिश पूसा प्रखंड में 2.4 मिमी हुई है. बारिश के कारण एनएच 322 पर एलौथ के पास जलजमाव हो गया है. वहीं कई अन्य सड़कों पर भी वर्षा का पानी लग गया है. रबी फसल की कटाई के बाद खाली पड़े खेतों में नमी आ जाने से किसान को खेत की जुताई में सहुलियत होगी. किसान बारिश से खुश है.

किसान खेत की जुताई के लिये वर्षा का इंतजार कर रहे थे. किसानों का कहना है कि बारिश हो जाने के बाद खेत की जुताई अच्छे से होती है. किसान गेहूं व अन्य रबी फसलों से खाली पड़े खेतों की जुताई शुरू कर दिये हैं. खेत को आगे की फसल के लिये तैयार कर रहे हैं. किसान कृषि कार्य में बरते सावधानी

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण मौसम सेवा केन्द्र के मुताबिक अगले 24 घंटे में गरज वाले बादल बनने और हल्की वर्षा की संभावना है.मौसम विभाग के मुताबिक अगले 12 से 24 घंटे में गरज वाले बनने के साथ-साथ वर्षा होने की संभावना को देखते किसान कृषि कार्य में सावधानी बरते. रबी मक्का की कटनी तथा सुखाने का काम सावधानी पूर्वक करें. कीटनाशक का छिड़काव किसान आसमान साफ रहने पर करें. जिले में पिछले कुछ दिनों में अच्छी बारिश हुई है, इस कारण खेतों में पर्याप्त नमी है, जो बोआई लिये अनुकूल है. किसान हल्दी व अदरक की बोआई 15 मई से करें. हल्दी की राजेन्द्र सोनिया, राजेन्द्र सोनाली किस्में उत्तर बिहार के लिये अनुसंशित है. वहीं अरदक की मरान और नादियां किस्में अनुशंसित है.

अधिकतम तापमान सामान्य 5.5 डिग्री नीचेः बारिश के बाद मौसम में बदलाव के साथ-साथ तापमान में भी गिरावट आयी है. अधिकतम तापमान सामान्य से 5.5 डिग्री सेल्सियस कम रिकार्ड किया. वहीं न्यूनतम तापमान भी सामान्य से 3.9 डिग्री सेल्सियस कम रहा. आज का अधिकतम तापमान 30.2 डिग्री सेल्सियस रहा, वहीं न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस रहा.विदित हो इधर कुछ दिनों में मौसम बदलाव आने से पूर्व अधिकतम तापमान 40 तक पहुंच गया था. लोग गर्मी से बेहाल थे.

किस प्रखंड में हुई कितनी मिमी बारिशः विभूतिपुर - 11.6, बिथान - 4.5, दलसिंहसराय - 20.2, हसनपुर - 12.6, कल्याणपुर - 19.2, खानपुर - 11.4, मोहनपुर - 17.4, मोहिउद्दीननगर- 4.4, मोरवा - 11.2, पटोरी - 7.4, पूसा - 2.4, रोसड़ा - 22.2, समस्तीपुर - 6.6, सरायरंजन - 9.0, शिवाजीनगर- 18.4, सिंघिया - 3.0, ताजपुर - 9.6, उजियारपुर - 14.4, विद्यापतिनगर - 20.4, वारिसनगर - 10.8

तेज आंधी के साथ हुई जोरदार बारिश से खेतों में नमी लौटी

हसनपुर . तेज हवा के साथ सोमवार की देर रात आयी बारिश से लोगों को भीषण गर्मी से निजात मिली. वहीं कई फसलों को नुकसान भी पहुंचा है. बताते हैं कि तेज आंधी के साथ हुई जोरदार बारिश से खेतों में नमी लौट गयी है. निचली भूमि के खेतों में पानी लगने से फसल को नुकसान होने का खतरा है. आम व लीची के टिकोले भी काफी गिरे हैं. इससे आर्थिक क्षति हुई है. लोग बताते हैं इस वर्ष मंजर के साथ ही कई बार आंधी व वर्षा होने से फसल को नुकसान पहुंचा. हाल ही में तेज आंधी व बारिश के कारण गेहूं के पके हुए फसल को भी नुकसान पहुंचा था. जबकि वर्षा से गन्ना फसल को फायदा होने की बात बताते हुए लोगों ने कहा कि बैसाख महीने में लगातार सिंचाई करने के बीच में अच्छी बारिश होने से कुछ दिनों तक सिंचाई नहीं करनी पड़ेगी. इधर, हल्की बारिश होने के साथ ही प्रखंड क्षेत्र की मुख्य सड़क सहित ग्रामीण सड़कें कीचड़युक्त जलजमाव से लोगों को परेशानी में डाल रही है. लोग प्रशासन से मुख्य सड़क व ग्रामीण सड़कों के पास से जल निकासी की व्यवस्था नियमित रूप से करने की मांग की है. बुद्धिजीवियों की मानें तो लोग सड़क किनारे अपनी जमीन को ऊंचे करते जा रहे हैं. ऐसे में प्रशासन को सड़क के बगल में नाला निर्माण कराकर जल जमाव की समस्या का समाधान निकाला जा सकता है. एटीएम अवधशरण यादव ने बताया कि 12.6 मिमि वर्षा हुई है. किसान सलाहकार सुभाषचंद्र झा उर्फ विदुर झा ने बताया कि बारिश से आम, लीची के टिकोले के गिरने, निचली भूमि के मूंग, लत्तीदार सब्जी के फसल को नुकसान होने का अनुमान है. उन्होंने बताया कि अक्टूबर प्लांट मक्का को नुकसान नहीं हुआ है. फरवरी प्लांट मक्के के नुकसान होने का अनुमान जताया.

भास्कर 7/5/25 पेज 18

वैज्ञानिक तकनीक से करें आम के बागों का प्रबंधन, बड़ा फल व अधिक उपज होगी

रखें ध्यान : आने वाले दिनों में आम के आकार, वजन, स्वाद, रंग व मिठास में तेजी से वृद्धि होगी, किसान बागों की करें निगरानी, कीट दिखने पर करें छिड़काव

भास्कर न्यूज | पूसा

आम उत्पादन के दृष्टिकोण से मई और जून का महीना आम के बागों में वैज्ञानिक प्रबंधन करने के लिए काफी निर्णायक होता हैं। इस दो महीनों में आम के फल अपने विकास की अंतिम अवस्था में पहुंचते हैं और उनके आकार, वजन, स्वाद, रंग व मिठास में तेजी से वृद्धि होती है।

इस समय अगर आम के पौधों को संतुलित पोषण, पर्याप्त नमी और कीट-रोगों से सुरक्षा मिल जाए तो न केवल आम का उत्पादन बढ़ जाएगा बल्कि फलों की गुणवत्ता भी काफी अच्छी हो जाएगी। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. एस के सिंह ने दी है। कृषि वैज्ञानिक के अनुसार इस समय आम के बागों की देखभाल में आम उत्पादकों को काफी सावधानी बरतने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि आम के फलों के विकास के समय पेड़ो का पोषण प्रबंधन बेहद जरूरी होता हैं। गर्मी के इन महीनों में आम के पौधे पोषण की मांग बढ़ा देते हैं। बागवानी विशेषज्ञ के सलाह के अनुसार इस समय पर आम के पेड़ों पर सल्फेट ऑफ पोटाश का 1 प्रतिशत घोल तैयार कर आम के पेड़ों व खासकर उसके पत्तियों पर छिड़काव करें। इससे न सिर्फ फलों में मिठास बढ़ती है बल्कि उनका रंग और स्वाद भी निखरता है। बारिश होने से फसल को काफी फायदा होगा।

फल मक्खी कीट से संक्रमित आम के फल।

फल मक्खी पर विशेष नजर, कीट नियंत्रण में लापरवाही से नुकसान

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि मई-जून के दौरान आम की फसल पर फल मक्खी का खतरा मंडराने लगता है। यह कीट फलों में डंक मारकर फल के अंदर गड्ढा बनाते हुए उसमें अंडे दे देती है जिससे फल सड़ जाते हैं और बाजार मूल्य घट जाता है। फल मक्खी कीट के नियंत्रण के लिए किसान मिथाइल यूजेनॉल ट्रैप यानी प्रत्येक एकड़ में 10 से 15 फेरोमोन ट्रैप लगाकर नर मक्खियों को आकर्षित करते हुए उसे नष्ट कर सकते है। फल मक्खी कीट का रासायनिक नियंत्रण करने के लिए किसान डेल्टामेथ्रिन दवाई का 1 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ और उसमें 10 ग्राम प्रति लीटर के अनुसार गुर मिलाते हुए उसका घोल बनाकर पेड़ो पर छिड़काव करें। उन्होंने बताया कि गर्मी में आम में लगने वाले रोगों का खतरा काफी बढ़ जाता हैं। इस समय फल मक्खी कीट के अलावे तेज गर्मी और उमस के कारण एन्थ्रेक्नोज व सूटी मोल्ड जैसे फफूंद रोग भी उभर आते हैं। ये दोनों रोग फलों की गुणवत्ता पर बुरा असर डालते हैं। इसके प्रबंधन के लिए किसान कॉपर ऑक्सीक्लोराइड दवाई का 0.3 प्रतिशत या मैन्कोजेब 0.25 प्रतिशत का छिड़काव प्रत्येक 15 दिनों पर आम के बागों में करें। नीम तेल 0.5 प्रतिशत या स्टार्च घोल से भी छिड़काव करके मोल्ड को बढ़ने से रोका जा सकता है।

बागों में नमी बनाए रखना चुनौती होगी

वैज्ञानिक ने बताया की तेज धूप और गर्म हवाओं के कारण बाग के मिट्टी की नमी तेजी से खत्म हो जाती है। ऐसे में दो प्रमुख उपाय कारगर साबित हो सकते हैं। पहला मल्चिंग इस प्रक्रिया में पौधों के चारों ओर सूखी घास, पुआल या प्लास्टिक मल्च बिछाकर नमी के वाष्पन को रोका जा सकता

भास्कर 7/5/25 पेज 15

बदल रहा मौसम • 10 से 12 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी

24 घंटे में गरज के साथ बारिश के आसार इसके बाद 38-41 डिग्री पहुंचेगा तापमान

खेतों में नमी बढ़ी... बीते 24 घंटों में 1.2 एमएम बारिश रिकॉर्ड हुई

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

जिले में सोमवार की शाम तेज आंधी बारिश और ठनका गिरने से कई इलाकों में बिजली बाधित हो गई। इस बीच पिछले 24 घंटों में 1.2 एमएम वर्षा रिकॉर्ड किया गया। वहीं पूसा में संयोग से तार के पेड़ ठनका गिरने आग लग गयी जबकि पास में बस्ती थी जहां कुछ ऐसी घटना नहीं हुई। तार के पेड़ पर गिरने से घरों पर कोई जानमाल की क्षति नहीं हुआ। वहीं शहर से लेकर जिले के विभिन्न इलाकों में बिजली बाधित रही। इसमें दो से कहीं चार और इससे भी ज्यादा बिजली बाधित रही। बाद में बिजली सेवा जगह-जगह दुरुस्त कर बहाल किया गया। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा मौसम विभाग के अनुसार उत्तर बिहार के जिलों में 11 मई तक आसमान में हल्के से मध्यम बादल देखे जा सकते हैं। अगले 24 घंटों में गरज वाले बादल बनने के साथ कहीं-कहीं हल्की वर्षा होने की सम्भावना बनी रहेगी। उसके बाद मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है। इस अवधि में मौसम शुष्क तथा पछिया हवा चलने के कारन तापमान में 2-3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो सकती है। इसके चलते यह तापमान 38-41 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की सम्भावना है। जबकि न्यूनतम तापमान 23-26 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 12 कि.मी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

पूसा के मोरसंड गांव में ठनका गिरने से कई तार के पेड़ जले।

किसानों के लिए सलाह... खेतों में पर्याप्त नमी हल्दी की बुआई के लिए वर्तमान समय अनुकूल

विगत कुछ दिनों में उत्तर बिहार के जिलों में अच्छी वर्षा हुई है। इसके चलते खेतों में पर्याप्त नमी आ गई है जो बुआई के लिए अनुकुल है। हल्दी की बुआई किसान 15 मई से करें। हल्दी की राजेन्द्र सोनिया, राजेन्द्र सोनाली किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है। खेत की जुताई में 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद, नेत्रजन 60 से 75 किलोग्राम, स्फूर 50 से 60 किलोग्राम, पोटास 100 से 120 किलोग्राम एवं जिंक सल्फेट 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करे। हल्दी के लिए बीज दर 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। बीज प्रकन्द का आकार 30-35 ग्राम जिसमें 4 से 5 स्वस्थ कलियां हो। रोपाई की दूरी 30x20 से.मी. तथा गहराई 5 से 6 से.मी रखे। अच्छे उपज के लिए 2.5 ग्राम डाईथेन एम. 45+ 0.1 प्रतिशत कारबेन्डाजीम प्रति किलोग्राम बीज की दर से घोल बनाकर उसमें आधा घंटे तक उपचारित करने के बाद बुआई करे।

अलर्ट... ठनका को लेकर रहें सतर्क

अगले 12-24 घंटों में गरज वाले बादल बनने के साथ-साथ वर्षा होने की संभावना को देखते हुए किसानों को कृषि कार्य में सावधानी बरतने की सलाह दी गयी है। बारिश के दौरान ठनका गिरने की आशंका है। इसको लेकर लोगों को सतर्क रहने को कहा गया है। रबी मक्का की कटनी तथा सुखाने का काम सावधानी पूर्वक करें। जिस किसान को कीटनाशकों का छिड़काव करना है वो किसान आसमान साफ रहने पर करें या वर्षा न होने की स्थिति में करें।

लीची में छाने लगी लाली।

बारिश से लाभ... आम की फसल को फायदा, लीची में आई लाली

जिले में सोमवार रात हुई अच्छी बारिश ने किसानों के चेहरे पर खुशी ला दी है। मौसम वैज्ञानिक के अनुसार इस बारिश ने वैसे फल उत्पादक किसान जिनके आम व लीची के बागों में सिंचाई की आवश्यकता थी। उनको बहुत हद तक फायदा पहुंचाया है। इसके अलावे इस बारिश ने खेतो में लगी मक्के की फसल और अभी लगाएं जाने वाले मक्का के खेत दोनों को फायदा पहुंचाया हैं। मूंग की फसल के लिए तो इस बारिश ने अमृत के जैसा फायदा पहुंचाने का काम किया हैं। डॉ. अब्दुस सत्तार ने बताया कि ऐसे किसान जो आने वाले समय में विभिन्न तरह के सब्जियों की खेती करना चाहते हैं। उनके खेतों को भी इस बारिश ने काफी फायदा पहुंचाया हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 11 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल बनने के साथ कई स्थानों पर हल्की वर्षा की संभावना है। उसके बाद मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस दौरान पारा बढ़ेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
06 मई	30.2	20.0
07 मई	30.2	20.5
दरभंगा		
06 मई	30.2	20.5
07 मई	31.0	20.5
पटना		
06 मई	32.0	21.0
07 मई	32.0	21.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 07-05-2025

उम्मीद | फलों का आकार बढ़ने के साथ स्वाद में मीठापन आने से बागान मालिकों को होगा मुनाफा, रोग से बचाव की भी एडवाइजरी जारी

अप्रैल की बारिश आम और लीची के लिए वरदान

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। अप्रैल में हुई बारिश ने आम और लीची के बागान मालिकों के चेहरे पर मुस्कान ला दी है। पिछले वर्ष की तुलना में फसलों में सुधार दिख रहा है। फलों का आकार बढ़ेगा। स्वाद में मीठापन आएगा। फल में गुदा ज्यादा होंगे और गुठली छोटे रहने की उम्मीद है। हालांकि उद्यान विशेषज्ञों का कहना है कि यही समय रोग से बचाने के लिए उपाय करने का भी है। देश में बिहार लीची का सबसे बड़ा और आम का तीसरा बड़ा उत्पादक है। यहां की शाही लीची और जर्दालु आम का निर्यात भी होता है। राज्य में लीची की खेती 39 हजार हेक्टेयर और उत्पादन 3 लाख 22 हजार टन होता है। आम की खेती 1 लाख 64 हजार हेक्टेयर में हो रही है, जबकि उत्पादन करीब 16 लाख टन है। इस बार उत्पादन इससे ज्यादा होने की संभावना है। राजेंद्र केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अनुसार, मार्च और अप्रैल 2024 की तुलना में इस वर्ष मौसम ज्यादा अनुकूल है। अप्रैल 2024 में तापमान 41 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था, बारिश नहीं हुई थी। वहीं, अप्रैल 2025 में पांच या अधिक बार बारिश हुई। अधिकतम तापमान दो से तीन दिन ही 40 डिग्री के करीब रहा। इससे फलों की वृद्धि को बेहतर वातावरण मिला। लीची अनुसंधान केंद्र निदेशक विकास दास का कहना है कि इससे लीची की गुणवत्ता और आकार दोनों में वृद्धि होने की संभावना है। स्वाद में मीठापन आएगा। केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट, प्लांट पैथोलॉजी एवं नेमेटोलॉजी विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. एसके सिंह का कहना है कि लीची के साथ आम के फल के लिए भी बारिश वरदान साबित हुई है। फलों के आकार बड़े होंगे। गुदा ज्यादा आएगा और गुठली छोटी रहेगी। उन्होंने बताया कि पिछले वर्ष ज्यादा गर्मी होने की वजह से गुठली बड़े और गुदा कम आए थे। इससे किसानों को नुकसान झेलना पड़ा था।

प्रचंड तापमान में था फल छोटे होने का डर : लीची आमतौर पर मुजफ्फरपुर, पूर्वी चंपारण, वैशाली, सीतामढ़ी, सीवान, समस्तीपुर जिले में होती है। आम दरभंगा, पूर्वी चंपारण, वैशाली, भागलपुर, पटना सहित पूरे राज्य में होती है।

पिछले वर्ष अप्रैल में नहीं हुई थी बारिश, इस कारण गुठली बड़े और गुदा कम हो गया था

रोग से बचाएं किसान

डॉ. एसके सिंह का कहना है कि ऐसे मौसम कीड़े के लिए भी मुफीद होते हैं। 35 से 36 डिग्री तापमान और कम आर्द्रता वाले मौसम में आम और लीची दोनों में कीड़े लगने की आशंका रहती है। लीची के फल बड़े होने के चलते बाद में धूप से फटने लगते हैं। लीची में फल छेदक नियंत्रण के लिए थायाक्लोप्रिड या इमिडाक्लोप्रिड का दो बार छिड़काव करें। अंतिम छिड़काव तुड़ाई से 12-15 दिन पूर्व करें। वर्षा की स्थिति में छिड़काव दोहराएं। वहीं, राष्ट्रीय लीची अनुसंधान संस्थान ने भी एडवाइजरी जारी की है। इसके अनुसार कीट नियंत्रण के लिए नोवाल्यूरॉन प्रति लीटर पानी में 1.5 मिली मिलाकर छिड़काव करना फायदेमंद रहेगा। इसके साथ प्रति लीटर पानी में 2 मिली बोरॉन मिलाकर छिड़काव करने से फल की त्वचा मजबूत होगी।

Hindustan 07-05-2025

भास्कर 8/5/25 पेज 15

कृषि • जून में बाग लगाने के लिए अभी से ही शुरू करें तैयारी, अच्छी मिट्टी के साथ सिंचाई की सुविधा जरूरी

आम के नए बागों को लगाना किसानों के लिए दीर्घकालिक निवेश : कृषि वैज्ञानिक

सलाह : बाग के लिए खेत में खोदे गए गड्ढे में 15 दिनों तक धूप लगने दें

भास्कर न्यूज़ | पूसा

मौजूदा समय आम के नए बागों को लगाने के लिए काफी उपयुक्त हैं। उत्तर और पूर्वी भारत के किसान जून से सितंबर माह तक कृषि वैज्ञानिकों के महत्वपूर्ण सलाह को अपनाकर आम के नए बाग लगा सकते हैं। वैसे किसान जिन्हें आम का बाग जून में लगाना हैं वे अभी से ही इसकी तैयारी शुरू कर दें। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि आम के नए बागों की स्थापना किसानों के लिए एक दीर्घकालिक निवेश है। आम के बागों को लगाने से पूर्व किसानों के द्वारा तैयार की गई उचित योजना और लेआउट आम के बागों को स्थापित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि आम के नए बागों को लगाते समय किसानों को कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान देना होता है। सबसे पहले किसानों को आम के नए बागों को लगाने के लिए भूमि (साइट) का चयन करना होता हैं। नए लगाएं जाने वाले आम के बाग अगर मुख्य सड़क और स्थानीय बाजार के समीप होते है तो इसे काफी अच्छा माना जाता हैं। इससे किसानों को विपरीत मौसम में भी आम को वाहन के माध्यम से मंडियों तक पहुंचाने तथा उसे बेचने में काफी सहुलियत होती है। उन्होंने बताया कि आम के पेड़ों की वृद्धि और बेहतर फल उत्पादन के लिए चयनित स्थल पर सिंचाई की सुविधा, उपयुक्त जलवायु और अच्छी मिट्टी का होना भी अति आवश्यक होता है। उन्होंने बताया कि इसके बाद किसानों के लिए दूसरी तैयारी चयनित खेत व प्लाट के संदर्भ में होती है।

नर्सरी में रखे गए आम के पौधे।

सुझाव... आम के पेड़ों के बीच उचित दूरी काफी महत्वपूर्ण

वैज्ञानिक ने बताया कि आम के नए बागों को स्थापित करने में लेआउट और पेड़ो के बीच की दूरी काफी मायने रखती है। पर्याप्त दूरी से पौधों को सामान्य विकास के लिए पर्याप्त स्थान के अलावे हवा और सूरज की रोशनी भी पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं। उन्होंने बताया कि किसानों को लंबी प्रजाति वाले आम जैसे मालदा या लंगड़ा, चौसा, फजली आदि के पौधों को प्लॉट में 12 मीटर गुने 12 मीटर की दूरी पर लगाना चाहिए। जबकि बौनी प्रजाति के आम दशहरी, नीलम, तोतापुरी और मुंबई ग्रीन जैसे प्रजाति को 10 मीटर गुने 10 मीटर की दूरी पर लगाना चाहिए। यह दूरी आम के प्रजाति के अनुसार काफी उपयुक्त मानी जाती है। उन्होंने बताया की किसान आम की एक और बौनी प्रजाति जैसे आम्रपाली सहित अन्य बौनी प्रजाति के आम को ढाई मीटर गुने ढाई मीटर की दूरी पर ही लगाना चाहिए। दूरी के मुताबिक किसान एक हेक्टेयर में 1600 पौधें बौनी किस्म के आम के पौधें आसानी से लगा सकते हैं।

आम के नए बाग लगाने के लिए किसान वैज्ञानिक विधि अपनाएं

कृषि वैज्ञानिक डॉ.एसके सिंह ने बताया कि आम के नए बाग लगाने वाले किसान अभी से ही तैयारी आरंभ कर दें। सबसे पहले चयनित खेत की गहरी जुताई करें तथा हैरो चलाकर खेत को भुरभुरा कर दें। खेतों से खरपतवार निकाल दें। इसके बाद भूमि को समतल करते हुए जल निकासी के उद्देश्य से प्लॉट को एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर हल्की ढलान बना दें। इसके बाद उसमें गड्ढे की खुदाई शुरू करें। हालांकि गड्ढे का आकार मिट्टी के प्रकार पर निर्भर करता है। यदि मिट्टी का हार्ड पैन आधे मीटर की गहराई में है तो किसान गड्ढे का आकार 1 मीटर लंबा, 1 मीटर चौरा और 1 मीटर गहरा गड्ढा खोदें। अगर मिट्टी उपजाऊ है और हार्ड पेन नहीं है तो किसान गड्ढे की खुदाई का आकार 30 सेंटीमीटर लंबा, 30 सेंटीमीटर चौरा और 30 सेंटीमीटर गहरे ही गड्ढे की खुदाई करें। गड्ढे की खुदाई के दौरान किसान गड्ढे वाले मिट्टी के ऊपरी आधे हिस्से और निचले आधे हिस्से को अलग-अलग जगहों पर रखें। इसके बाद खेत में खोदे गए गड्ढे में 15 दिनों तक धूप लगने दें।

पौधा लगाने के लिए गड्ढे में उचित मात्रा में डालें जैविक उर्वरक

किसान खोदे गए प्रत्येक गड्ढे में 25 किलो सड़ी हुई गोबर की खाद, 100 ग्राम एसएसपी और 100 ग्राम एमओपी डालकर गड्ढे को मिट्टी से भर दें। सभी प्रक्रियाओं को पूरी करने के बाद किसान गड्ढे में आम के पौधों को लगा दें तथा जरूरत के अनुसार उसमें सिंचाई करते रहें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 11 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल बनने के साथ कई स्थानों पर हल्की वर्षा की संभावना है। उसके बाद मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस दौरान पारा बढ़ेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
06 मई	30.2	20.0
07 मई	30.2	20.5
दरभंगा		
06 मई	30.2	20.5
07 मई	31.0	20.5
पटना		
06 मई	32.0	21.0
07 मई	32.0	21.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 08-05-2025

शहद उत्पादन संग ब्रांडिंग को दें बढ़ावा : कुलसचिव

पूसा। केन्द्रीय कृषि विवि के कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि मधुमक्खी पालन एक कला है। जरूरत है मधुमक्खी पालन के वैज्ञानिक तरीकों का ज्ञान लेकर गुणवत्तायुक्त शहद उत्पादन से लेकर मार्केटिंग तक के कार्य को गति देने की। इसमें विवि से दिया गया तकनीकी व व्यवसायिक ज्ञान काफी लाभकारी साबित होगा। वे बुधवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में समस्तीपुर समेत सात जिले से आए प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे।

Hindustan 08-05-2025

गन्ना उत्पादक किसानों को दी गयी नयी तकनीक की जानकारी

कार्यशाला में उपस्थित किसान .

हसनपुर . चीनी मिल के प्रांगण में एक दिवसीय कृषक कार्यशाला की गयी. संचालन गन्ना उपाध्यक्ष सुरेंद्र पाल सिंह ने किया. डॉ राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वैज्ञानिक डॉ नवनीत कुमार एवं डॉ बलवंत कुमार ने गन्ना की खेती के नवीनतम तकनीक को समझाया. संयुक्त ईखा आयुक्त जय प्रकाश नारायण सिंह एवं सहायक ईख पदाधिकारी कैलाश नाथ व ईख पदाधिकारी पुष्कर राज ने योजनाओं की जानकारी किसानों को दी. स चीनी मिल के कार्यपालक अध्यक्ष अशोक कुमार मित्तल ने किसान को गन्ना की खेती में यंत्रीकरण एवं नई तकनीक को शामिल करने का सुझाव दिया. मौके पर गन्ना उपाध्यक्ष सुरेंद्र पाल सिंह, अमित कुमार, शोभित शुक्ला, प्रमोद मणि त्रिपाठी, शंभू चौधरी, रामकृष्ण प्रसाद, मनोज महतो, श्रवण चौबे, अनिल कुमार, सुधीर शाही, हरेराम प्रसाद आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Friday, May 9, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/681d1544d16cdbeccc2ac760

भास्कर 9/5/25 पेज 18

खेती-किसानी • किसान वैज्ञानिकों की सलाह को अपना कर कीट का समय पर प्रबंधन कर सकते हैं

केले के पौधे में लगने वाला खतरनाक तना भेदक कीट केला उत्पादक किसानों के लिए प्रमुख समस्या : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज़ | पूसा

केले के पौधे में लगने वाला तना भेदक कीट केला उत्पादक किसानों के लिए एक प्रमुख समस्या है। हाल के वर्षों में इस कीट ने केले के उत्पादन को बुरी तरह से प्रभावित करने का काम किया है। बिहार के केला उत्पादक किसान वैज्ञानिकों के सलाह को अपनाकर इस कीट का ससमय प्रबंधन कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने बातचीत के दौरान कही। उन्होंने कहा कि यह कीट केले में फूल और गुच्छा बनने के दौरान केले के पौधे पर हमला करता है जिससे गुच्छा यानी (बंच) का विकास रुक

केले के पौधे में लगा तना भेदक कीट।

जाता है और केले का उपज बुरी तरह से प्रभावित होने लगता है। इस कीट के प्रारंभिक लक्षण में केले के तने से जेली जैसा स्राव निकलने लगता हैं। कीट का ग्रब्स केले के तने को अंदर से खा जाता है। इससे स्यूडोस्टेम यानी (आभासी तना) खोखला हो जाता है और हवा के एक झोंके से केले का तना प्रभावित जगह से टूटकर गिर जाता है। केले के आभासी तने में यह कीट लंबी-लंबी सुरंगें बना देता है जिससे ग्रब को अधिक नुकसान पहुंचता है। इस बीमारी से संक्रमित केले के पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाती है तथा मुरझा जाती है जिससे केले का फल अपरिपक्व हो जाता है। उन्होंने बताया कि गर्मी और मानसून के मौसम में इस कीट का प्रकोप अपने चरम पर होता है। केले के बागों में इस कीट का हमला आमतौर पर केला लगाने के लगभग चार महीने बाद शुरू हो जाता है जो बढ़ते पौधों के साथ लगातार बढ़ता रहता है।

किसान ऐसे करें तना बेधक कीट का प्रबंधन

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस बीमारी से केले के बाग और पौधों को बचाने के लिए किसान केले की खेती को बिल्कुल स्वच्छ और साफ सुथरे तरीके से करें। बागों में जब इस बीमारी का संक्रमण फैल जाए तो संक्रमित पौधों को उखाड़कर बाग से बाहर ले जाकर उसे जलाकर नष्ट कर दें। किसान कीट के अंडे और ग्रब्स की संख्या को कम करने के लिए सर्वोत्तम रोपण सामग्री का चयन करें। क्लोरोपाइरीफॉस 20 ईसी दवाई का 2.5 एमएल मात्रा एवं 1 एमएल वेटिंग एजेंट या एजेडिरैचिन दवाई का 5 एमएल प्रति लीटर पानी में घोलकर 2 या 3 बार 3 सप्ताह के अंतराल पर लगातार स्प्रे करते रहें।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 11 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में बादल बनने के साथ कई स्थानों पर हल्की वर्षा की संभावना है। उसके बाद मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। मौसम विज्ञानी डा . ए सत्तार ने कहा कि इस दौरान पारा बढ़ेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
09 मई	37.0	26.0
10 मई	37.5	26.0
	दरभंगा	
09 मई	37.5	26.0
10 मई	37.5	26.5
	पटना	
09 मई	39.0	27.8
10 मई	39.0	27.8

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagaran 09-05-2025

हिन्दुस्तान 9/5/25 पेज 8

कृषि विवि में खुलेगा क्लाइमेट स्मार्ट एग्रो टेक्सटाइल्स डेमोंस्ट्रेशन केंद्र

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में क्लाइमेट स्मार्ट एग्रो टेक्सटाइल डेमोंस्ट्रेशन केंद्र की स्थापना होगी। जिसके सहयोग से पर्यावरण संतुलन के साथ किसान लाभकारी कृषि के प्रति जागरूक हो सकेंगे। केन्द्रीय वस्त्र मंत्रालय से जुड़े नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल्स मिशन के तहत इस केन्द्र का संचालन होगा।

शुक्रवार (9 मई) को विवि एवं संस्था के बीच एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर होगा। इस दौरान केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरीराज सिंह समेत विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय, कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार, वस्त्र मंत्रालय के संयुक्त सचिव अजय गुप्ता, संयुक्त मिशन निदेशक अजय पंडित एवं द सिन्थेटिक एंड आर्ट सिल्क मिल्स रिसर्च एसोसिएशन के डीजी डॉ.अशोक तिवारी, सहायक निदेशक रविप्रकाश सिंह, वैज्ञानिक प्रमोद सालुंखे मौजूद रहेंगे। सहायक निदेशक रवि प्रकाश सिंह ने बताया कि इस केन्द्र के सहयोग से किसानों को एग्रो टेक्टाईल्स के उपयोग, गुणवत्ता, नये फसल की जानकारी व प्रशिक्षण दिया जायेगा। जो आने वाले समय में कृषि क्षेत्र में क्रांति लाने में अहम भूमिका निभायेगा।

उन्होंने बताया कि बदलते समय में जलवायु परिवर्तन एक बड़ी चुनौति है।इसमें बढता प्रदूषण अहम भूमिका निभा रहा है। जिसे संतुलित करनें में एग्रो टेक्टाईल्स अहम भूंमिका निभायेगा। तो दूसरी ओर छोटे व कम रकबे वाले किसानो के लिए अच्छी आमदनी देकर यह संजीवनी का कार्य करेगा। विवि के कुलपति व केन्द्रीय मंत्री गिरीराज सिंह की खास पहल पर केन्द्र सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को पूसा में स्थापित किया जा रहा है।

हिन्दुस्तान 01.3.25. पेज 8

नई तकनीक से करें खेती उत्पादन भी अधिक होगा

हसनपुर, निसं। गन्ना उद्योग विभाग के निर्देश पर हसनपुर चीनी मिल में एक दिवसीय कृषक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें गन्ने की खेती में मजदूरों की समस्या दूर करने, कम लागत में अधिक उत्पादन करने के लिए नवीनतम तकनीक अपनाने पर चर्चा हुई।

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा से आये वैज्ञानिक डा. नवनीत कुमार एवं डा. बलवंत कुमार ने गन्ना की खेती के नवीनतम तकनीक एवं गन्ना की फसल को रोग, कीट से बचाव करने की जानकारी दी। संयुक्त ईखायुक्त जय प्रकाश नारायण सिंह ने कहा कि कम लागत में अधिक उत्पादन करने के लिए यांत्रीकरण विधि अपनाने की जरूरत है। उन्होंने किसानों को बिहार सरकार की कृषि योजनाएं की जानकारी देते हुए इससे लाभ उठाने की बात कही। चीनी मिल के नये कार्यपालक अध्यक्ष अशोक कुमार मित्तल ने किसानों को सुझाव देते हुए कहा कि गन्ना की खेती में यंत्रीकरण एवं नई तकनीक को शामिल करें। कार्यशाला का संचालन उपाध्यक्ष गन्ना सुरेंद्र पाल सिंह ने किया। मौके पर संयुक्त ईखायुक्त जय प्रकाश नारायण सिंह, कार्यपालक अध्यक्ष अशोक कुमार मित्तल आदि थे।

किसानों के लिए कृषि ज्ञान वाहन वरदान : डॉ सतपथी

प्रतिनिधि, पूसा

कृषि ज्ञान वाहन से तकनीकी ज्ञानवर्धन करते किसान.

अगर किसान एकजुट हो जाएं तो कोई भी लक्ष्य दूर नहीं. इसी मुहिम के साथ किसानों को संगठित और तकनीकी रूप से सशक्त बनाने का कार्य कृषि ज्ञान वाहन निरंतर कर रहा है. इसी कड़ी में डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के माध्यम से बेगूसराय जिले के किसानों के बीच सकारात्मक कृषि ज्ञान वाहन का सफलता पूर्ण परिचालन चार प्रखंड खुदाबांदपुर, चैरिया बरियारपुर, मंझौल, नावकोठी में किया गया. इस वाहन के तहत किसानों को खेतों एवं पशुओं में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए आधुनिक कृषि ज्ञान और तकनीकी सहायता मुहैया कराई गई. इस वाहन ने करीब पांच पंचायत में पहुंच कर करीब 250 किसानों को लाभान्वित करने का कार्य किया. इस वाहन की मदद से किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र, बेगूसराय के वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉ रामपाल एवं कृषि विशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक के द्वारा कृषि उपकरणों की जानकारी प्रदान की गई. साथ ही साथ कृषि ज्ञान वाहन की नोडल पदाधिकारी डॉ विनिता सतपथी ने किसानों के द्वारा कृषि संबंधित प्रश्नों के समस्याओं का समाधान बताकर उन्हें वैज्ञानिकी विधि से खेती करने के लिए प्रेरित किया.

विशेषज्ञों ने इस वाहन की विशेषता के बारे में किसानों को बताया की कैसे यह वाहन किसानों को फसल उगाने से लेकर, रोग नियंत्रण बीज चयन, पानी की बचत और मृदा प्रबंधन के बारे में वीडियो फिल्म के माध्यम से जानकारी देंगे. इससे किसानों के उत्पादन में वृद्धि होगी और उनके आय में सुधार आयेगा. किसानों ने इस परियोजना को लेकर उत्साह व्यक्त किया. इस तरह की सुविधाओं की कमी को महसूस करते हुए इसे एक बड़ा कदम बताया. कार्यक्रम में उपस्थित किसानों ने विश्वविद्यालय की इस पहल की सराहना करते हुए इसे कृषि विकास की दिशा में एक बड़ा कदम बताया.

उन्होंने कहा कि ऐसे ज्ञानवर्धक प्रयास न केवल कृषि को लाभकारी बनाएंगे, बल्कि किसानों को आत्मनिर्भर भी बनायेंगे.

प्रभात खबर
Saturday, May 10, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/681e553b6b298d4be74b7d47

कृषि विवि पूसा. साइलेज मक्का को बढ़ावा के लिए संगोष्ठी की गयी

मसीना बीज के साथ-साथ साइलेज मक्का को बढ़ावा दें : गिरिराज सिंह

वैज्ञानिकों को संबोधित करते केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह.

सभागार में मौजूद वैज्ञानिक.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन, वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत एग्रोटेक्सटाइल पर केंद्रित विशेष पहल एवं साइलेज मक्का को बढ़ावा के लिए संगोष्ठी की गयी. मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन और कृषि एक साथ मिलकर काफी काम कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि इसको लेकर नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन और पूसा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के साथ एक एमओयू भी किया जा रहा है. यह ऐतिहासिक है. उन्होंने कहा कि इससे अतिरिक्त विश्वविद्यालय मसीना बीज के साथ साइलेज मक्का को बढ़ावा देने को लेकर भी एक समझौता किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से मक्का के एक ऐसे प्रभेद का विकास किया गया है जिसकी ऊंचाई लगभग चौदह फुट होती है. एक हेक्टेयर में इसका उत्पादन तीन सौ टन से ज्यादा है जबकि अभी वर्तमान प्रभेद चालीस से पचास टन ही उत्पादन दे पाते हैं. इसके अतिरिक्त इस मक्का में इथेनॉल का प्रतिशत भी चालीस से अधिक है जो कि एक रिकार्ड है. उन्होंने इस प्रभेद के विकास के लिए कुलपति डॉ पीएस पांडेय और वैज्ञानिक डॉ मृत्युंजय कुमार की तारीफ की और कहा कि पिछले दो वर्षों से विश्वविद्यालय में काफी अच्छा कार्य हो रहा है. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को आक (मंदार) से धागा बनाने पर भी शोध करना चाहिए. केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने भारत के सेना की तारीफ की और कहा कि देश में एक मजबूत प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अभूतपूर्व सफलता हासिल कर रहा है. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने वस्त्र मंत्रालय को विश्वविद्यालय के साथ समझौता के लिए धन्यवाद दिया. उन्होंने कहा कि टेक्सटाइल का मार्डन एग्रीकल्चर में क्या उपयोग हो सकता है इसका प्रदर्शन वस्त्र मंत्रालय के इस केंद्र के माध्यम से किया जायेगा. उन्होंने विश्वविद्यालय के डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विकास के बारे में भी जानकारी दी. वस्त्र मंत्रालय के संयुक्त सचिव अजय कुमार गुप्ता ने कहा कि उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि पूसा विश्वविद्यालय में कई ऐसे नये अनुसंधान चल रहे हैं जो आने वाले समय में देश की कृषि को एक नई दिशा देंगे. कार्यक्रम की शुरुआत में निदेशक अनुसंधान ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और विश्वविद्यालय के अनुसंधान के बारे में विस्तार से जानकारी दी. कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय ने जिस मक्का के प्रभेद का विकास किया है वो ऐतिहासिक है. उन्होंने कहा कि इसके पेटेंट की प्रक्रिया चल रही है इसलिए इसके डिटेल पर आने वाले अनुसंधान परिषद की बैठक में विस्तार से चर्चा की जायेगी. मसीना बीज के मार्गदर्शक अनिल मिश्रा ने अपने संबोधन में विश्वविद्यालय के योगदान के बारे में बताया. कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ अंजनी कुमारी ने किया. कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉ रामसुरेश, डॉ रत्नेश कुमार झा, डॉ मुकेश कुमार, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी मौजूद थे.

प्रभात खबर
Saturday, May 10, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/681e553b6b298d4be74b7d50

भास्कर 10/5/25 पेज 15

मौसम पूर्वानुमान • तीन से 10 किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलेगी, मौसम शुष्क रहेगा

उत्तर बिहार के जिलों में 14 मई तक हॉट डे बने रहने की आशंका, अधिकतम तापमान 43 डिग्री तक पहुंचेगा

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने के साथ-साथ गर्म दिन (हॉट डे) बने रहने की सम्भावना है। शुक्रवार का का अधिकतम तापमान 38.2 और 24.0 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इस दौरान हवा में अधिक मात्रा में नमी रहने के कारण गर्मी का एहसास ज्यादा हो सकता है। मौसम पूर्वानुमान में आसमान प्रायः साफ रहने का अनुमान है। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा मौसम विभाग के अनुसार इस अवधि में अधिकतम तापमान 40 से 43 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 29-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 10 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है तथा 13-14 मई के आसपास पुरवा हवा भी चल सकती है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है।

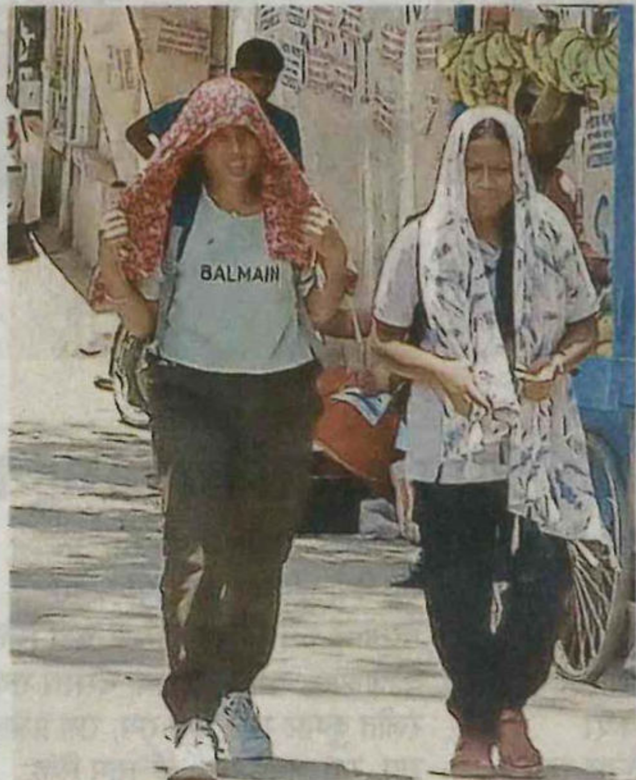

धूप से बचाव कर जाती छात्राएं।

नर्सरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें

रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि सूर्य की तेज धूप मिट्टी में छिपे कीड़ों के अण्डे, प्युपा एवं घास के बीजों को नष्ट हो जाये। खरीफ चान की नर्सरी के लिए खेत की तैयारी करें। स्वस्थ पौधे के लिए नर्सरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें। खरीफ मक्का की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में 10 से 15 टन गोबर की सड़ी खाद प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करे। खरीफ मक्का की बुआई 25 मई से करें। खरीफ चान की नर्सरी के लिए खेत की तैयारी करें। स्वस्थ पौध के लिए नर्सरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करे। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई हेतु 800- 1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में बीज गिरावें। नर्सरी में क्यारी की चौराई 1.25-1.5 मीटर तथा लम्बाई सुविधा अनुसार रखें। बीज की व्यवस्था प्रमाणित स्त्रोत से करें। देर से पकने वाली किस्मों की नर्सरी 25 मई से लगा सकते हैं।

मौसम पूर्वानुमान में आसमान प्रायः साफ रहने का अनुमान है एवं उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने के साथ-साथ गर्म दिन बने रहने की सम्भावना है।

– डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी, मौसम विभाग, पूसा

भास्कर 10/5/25 पेज 16

कार्यक्रम • एग्रो टेक्सटाइल पर केंद्रित विशेष पहल एवं साइलेज मक्का को बढ़ावा के लिए संगोष्ठी का आयोजन

नेशनल टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन और कृषि मिल कर काफी काम कर सकता है

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में नेशनल टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन, वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत एग्रो टेक्सटाइल पर केंद्रित विशेष पहल एवं साइलेज मक्का को बढ़ावा के लिए संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केंद्रीय मंत्री, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार गिरिराज सिंह ने कहा कि नेशनल टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन और कृषि एक साथ मिलकर काफी काम कर सकता है। उन्होंने कहा कि इसको लेकर नेशनल टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन और पूसा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के साथ एक एमओयू भी किया जा रहा है। यह ऐतिहासिक है। उन्होंने कहा कि इससे अतिरिक्त विश्वविद्यालय मशीना बीज के साथ साइलेज मक्का को बढ़ावा देने को लेकर भी एक समझौता किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से मक्का के एक ऐसे प्रभेद का विकास किया गया है जिसकी उंचाई लगभग चौदह फीट होती है। एक हेक्टेयर में इसका उत्पादन तीन सौ टन से ज्यादा है जबकि अभी वर्तमान प्रभेद चालीस से पचास टन ही उत्पादन दे पाते हैं। इसके अतिरिक्त इस मक्का में इथेनॉल का प्रतिशत भी चालीस से अधिक है जो कि एक रेकार्ड है। उन्होंने इस प्रभेद के विकास के लिए कुलपति डॉ पी एस पांडेय और वैज्ञानिक डॉ मृत्युंजय कुमार की तारीफ की और कहा कि पिछले दो वर्षों से विश्वविद्यालय में काफी अच्छा कार्य हो रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को आक (मंदार) से धागा बनाने पर भी शोध करना चाहिए। केंद्रीय मंत्री ने भारत के सेना की तारीफ की और कहा कि देश में एक मजबूत प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अभूतपूर्व सफलता हासिल कर रहा है।

विवि के डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विकास के बारे में भी जानकारी दी

संगोष्ठी को संबोधित करते केंद्रीय मंत्री, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार गिरिराज सिंह व मंच पर मौजूद अन्य अतिथि।

वस्त्र मंत्रालय को विश्वविद्यालय के साथ समझौता करने के लिए धन्यवाद दिया

कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने वस्त्र मंत्रालय को विश्वविद्यालय के साथ समझौता के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि टेक्स्टाइल का माडर्न एग्रीकल्चर में क्या उपयोग हो सकता है इसका प्रदर्शन वस्त्र मंत्रालय के इस केंद्र के माध्यम से किया जायेगा। उन्होंने विश्वविद्यालय के डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विकास के बारे में भी जानकारी दी। वस्त्र मंत्रालय के संयुक्त सचिव अजय गुप्ता ने कहा कि उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि पूसा विश्वविद्यालय में कई ऐसे नये अनुसंधान चल रहे हैं जो आने वाले समय में देश की कृषि को एक नई दिशा देंगे। वैज्ञानिक इसकी चर्चा पेटेंट हासिल करने के बाद ही करना चाहते हैं ताकि कोई अनुसंधान का दुरूपयोग न कर सके।

विश्वविद्यालय ने जिस मक्का के प्रभेद का विकास किया है, वो ऐतिहासिक है

कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय ने जिस मक्का के प्रभेद का विकास किया है, वो ऐतिहासिक है। उन्होंने कहा कि इसके पेटेंट की प्रक्रिया चल रही है। इसलिए इसके डिटेल पर आने वाले अनुसंधान परिषद की बैठक में विस्तार से चर्चा की जायेगी। मशीना बीज के मार्गदर्शक अनिल मिश्रा ने संबोधन में विश्वविद्यालय के योगदान के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ अंजनी कुमारी ने किया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा, डॉ रत्नेश कुमार, डॉ मुकेश कुमार, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

टेक्सटाइल मिशन व कृषि विभाग मिलकर करें कार्य : गिरिराज

डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने कृषि मंत्रालय के टेक्सटाइल मिशन और साइलेज मक्का के लिए किए दो करार

- विश्वविद्यालय में खुलेगा स्मार्ट टेक्सटाइल्स डेमोस्ट्रेशन केंद्र
- नवीनतम तकनीक के माध्यम से किसान किए जाएंगे प्रशिक्षित

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में केंद्रीय कपड़ा मंत्रालय के नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन के एग्रोटेक्सटाइल पर केंद्रित विशेष पहल एवं साइलेज मक्का को बढ़ावा के लिए संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन और कृषि एक साथ मिलकर काफी काम कर सकती है। एनटीटीएम और पूसा विश्वविद्यालय एक एमओयू भी कर रहा है। यह ऐतिहासिक है। इससे अतिरिक्त विश्वविद्यालय मसीना बीज के साथ साइलेज मक्का को बढ़ावा देने के लिए भी एक समझौता कर रही है।

एक दूसरे को एमओयू हस्तांतरित करते अधिकारी • जागरण

कार्यक्रम को संबोधित करते केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह व मंचासीन वैज्ञानिक • जागरण

दो समझौते पर हुआ हस्ताक्षर : इस संगोष्ठी के बीच विश्वविद्यालय और एनटीटीएम एवं विश्वविद्यालय एवं मसीना बीज निगम के साथ दो करार हुआ। नेशनल टेक्सटाइल मिशन के तहत हुए करार के तहत विश्वविद्यालय में स्मार्ट टेक्सटाइल्स डेमोस्ट्रेशन केंद्र खुलेगा। केंद्रीय कपड़ा मंत्रालय से जुड़े नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल्स मिशन इसका संचालन करेगा। इस केंद्र के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा। कृषि कार्य में उपयोग होने वाले टेक्सटाइल को नवीनतम तकनीक के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा। दूसरा करार मसीना बीज निगम से हुआ। इसके तहत विश्वविद्यालय द्वारा विकसित साइलेज का बीज निगम तैयार करेगी।

चौदह फीट वाली है मकई : मंत्री ने कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से मक्का के एक ऐसे प्रभेद को विकसित किया गया है जिसकी उंचाई लगभग चौदह फीट होती है। एक हेक्टेयर में इसका उत्पादन तीन सौ टन से ज्यादा है जबकि अभी वर्तमान प्रभेद चालीस से पचास टन ही उत्पादन दे पाते हैं। इस मक्का में इथेनाल का प्रतिशत भी चालीस से अधिक है जो कि एक रिकार्ड है। उन्होंने इस प्रभेद के विकास के लिए कुलपति और विज्ञानी डा. मृत्युंजय कुमार की तारीफ की। उन्होंने विश्वविद्यालय को आक (मंदार) से धागा बनाने पर भी शोध करने की अपील की। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने वस्त्र मंत्रालय को विश्वविद्यालय के साथ समझौता के लिए धन्यवाद दिया। बताया कि टेक्सटाइल का माडर्न एग्रीकल्चर में क्या उपयोग हो सकता है। इसका प्रदर्शन वस्त्र मंत्रालय के इस केंद्र के माध्यम से किया जाएगा। उन्होंने विश्वविद्यालय के डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विकास के बारे में भी जानकारी दी। वस्त्र मंत्रालय के संयुक्त सचिव अजय गुप्ता ने कहा कि पूसा विश्वविद्यालय में कई ऐसे नए अनुसंधान चला रहा है जो आने वाले समय में देश की कृषि को एक नई दिशा देगा। कहा कि विश्वविद्यालय और वस्त्र मंत्रालय संयुक्त रूप से मिलकर नई सफलता हासिल करेगा।

कार्यक्रम की शुरुआत में निदेशक अनुसंधान ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और विश्वविद्यालय के अनुसंधान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय ने जिस मक्का के प्रभेद का विकास किया है वो ऐतिहासिक है। कहा कि इसके पेटेंट की प्रक्रिया चल रही है इसलिए इसके डिटेल पर आने वाले अनुसंधान परिषद की बैठक में विस्तार से चर्चा की जाएगी । मसीना बीज के मार्गदर्शक अनिल मिश्रा ने अपने संबोधन में विश्वविद्यालय के योगदान के बारे में बताया। मंच संचालन डा. अंजनी कुमारी ने किया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक प्रसार डा. मयंक राय डीन बेसिक साइंस, डा. अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डा. राम सुरेश वर्मा, डा. रत्नेश कुमार, डा. मुकेश कुमार, डा. महेश कुमार, डा. शिवपूजन सिंह समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 10-05-2025

उत्तर बिहार में अभी हाट डे की स्थिति रहेगी बरकरार, 43 डिग्री पर पहुंचेगा तापमान

संस, जागरण ● पूसा : उत्तर बिहार में अभी गर्मी बरकरार रहेगी। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार के अनुसार अगले चार दिनों तक आसमान प्रायः साफ रहेगा। मौसम के शुष्क रहने के साथ-साथ गर्म दिन बने रहने की संभावना है। हवा में अधिक मात्रा में नमी रहने के कारण गर्मी का एहसास ज्यादा होगा। इस अवधि में अधिकतम तापमान 40 से 43 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 29-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। मौसम विभाग के द्वारा अधिकतम तापमान 38.2 एवं न्यूनतम तापमान 24.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। अधिकतम तापमान 2 डिग्री एवं न्यूनतम तापमान लगभग चार डिग्री सामान्य से अधिक रिकार्ड की गई। 3 से 10 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। 13-14 मई तक पुरवा हवा चल सकती है। वैज्ञानिकों के द्वारा किसानों को वर्तमान मौसम को देखते हुए विभिन्न सुझाव दिए गए हैं।

● रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि सूर्य की तेज धूप मिट्टी में छिपे कीड़ों के अण्डे, प्यूपा एवं घास के बीजों को नष्ट हो जाये। खरीफ धान की नर्सरी के लिए खेत की तैयारी करें। स्वस्थ पौध के लिए नर्सरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें।

● खरीफ धान की नर्सरी के लिए खेत की तैयारी करें। स्वस्थ पौध के लिए नर्सरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई हेतु 800- 1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में बीज गिरावें। नर्सरी में क्यारी की चौड़ाई 1.25-1.5 मीटर तथा लम्बाई सुविधा अनुसार रखें। बीज की व्यवस्था प्रमाणित स्त्रोत से करें। देर से पकने वाली किस्मों की नर्सरी 25 मई से लगा सकते हैं।

● अदरक की बुआई 15 मई से शुरू करें। अदरक की मरान एवं नदिया किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है। खेत की जुताई में 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद, नेत्रजन 30 से 40 किलोग्राम, स्फूर 50 किलोग्राम, पोटास 80 से 100 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 20 से 25 किलोग्राम एवं बोरेक्स 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। अदरक के लिए बीज दर 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। बीज प्रकन्द का आकार 20-30 ग्राम जिसमें 3 से 4 स्वस्थ कलियां हो। रोपाई की दूरी 30x20 सेमी रखें। अच्छी उपज के लिए रीडोमिल दवा के 0.2 प्रतिशत घोल से उपचारित बीज की बुआई करें।

● अभी के समय में गलाघोटू एवं लंगड़ी रोग से बचाव के लिए टीकाकरण कराने की आवश्यकता है। सभी दुधारू पशुओ में टीकाकरण अवश्य कराएं। नए गेहूं के भूसा को खिलाने के पूर्व करीब 2 घंटा पानी में फुला लें एवं 50 ग्राम खनिज मिश्रण तथा 50 ग्राम नमक, चारा-दाना मिलाकर दें।

स्थानीय बाजार में जूस की दुकान ● जागरण

जिले में बढ़ती गर्मी से जूस की दुकानों पर बढ़ी भीड़

जासं, समस्तीपुर : जिले में लगातार बढ़ रही गर्मी से लोगों को राहत पाने के लिए जूस की दुकानों का रुख करते देखा जा रहा है। अप्रैल माह से ही गर्मी ने अपने तेवर तीखे कर लिए हैं और जिले का तापमान 38 से 40 डिग्री सेल्सियस के बीच बना हुआ है। ऐसे में चौराहों और मुख्य बाजारों में जूस की अस्थायी दुकानों की संख्या में भी इजाफा देखा गया है। शहर में मुसम्मी, मैंगो शेक, गन्ने का रस, लस्सी, अनार, एप्पल जूस, बादाम शेक और काजू शेक जैसे पेय पदार्थों की मांग में तेजी आई है। दोपहर के समय गन्ने के रस और लस्सी की दुकानों पर सबसे ज्यादा भीड़ देखी जा रही है। लोग गर्मी से राहत पाने और प्यास बुझाने के लिए इन पेयों को प्राथमिकता दे रहे हैं। स्थानीय जूस विक्रेता सूरज ने बताया कि गर्मी के मौसम में पाइनएप्पल, मुसम्मी और संतरे के जूस की मांग सबसे ज्यादा होती है। इसके अलावा तरबूज और खरबूजे का जूस भी शरीर को ठंडा बनाए रखने में मदद करता है। उन्होंने बताया कि जूस की दुकानें पूरे साल चलती हैं, लेकिन गर्मी के मौसम में ग्राहकों की संख्या बढ़ जाती है।

Dainik Jagran 10-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 14 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान साफ रहने का अनुमान है। उसके बाद मौसम शुष्क रहेगा। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में गर्मी का एहसास ज्यादा हो सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
10 मई	38.2	25.0
11 मई	38.2	25.5
दरभंगा		
10 मई	38.2	25.5
11 मई	39.0	26.0
पटना		
10 मई	40.0	27.0
11 मई	40.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 10-05-2025

कृषि विवि | नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल्स मिशन वस्त्र मंत्रालय अर्न्तगत एग्रो टेक्सटाइल्स पर केंद्रीत विशेष पहल एवं साइलेज मक्का को बढ़ावा देने के लिए संगोष्ठी आयोजित

एग्रो टेक्सटाइल्स व साइलेज मक्का से आयेगी कृषि क्रांति : मंत्री

कार्यक्रम

- 14 फीट लम्बा मक्का में 40 प्रतिशत इथनॉल की है मात्रा : वीसी
- मसीना बीज निगम व विवि के बीच समझौता पत्र पर हस्ताक्षर हुए

पूसा, निज संवाददाता। केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि देश में कृषि के साथ पशुपालन को बढ़ावा सबसे बड़ी पूंजी है। दूध की कीमतें अनाज की कीमतों से अधिक है। ऐसे में दोनों को सुदृढ़ व लाभकारी बनाने की दिशा में यह समझौता एक क्रांतिकारी कदम है।

वे शुक्रवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में वैज्ञानिकों व छात्रों को संबोधित कर रहे थे। मौका था नेशनल टेक्निकल टेक्सटाईल्स मिशन वस्त्र मंत्रालय अर्न्तगत एग्रो टेक्सटाईल्स पर केन्द्रीत विशेष पहल एवं साईलेज मक्का को बढ़ावा देने के लिए आयोजित संगोष्ठी का। कहा कि साईलेज खिलाने से 10 से 20 प्रतिशत दूध की बढ़ोतरी होती है। साईलेज मक्का के विस्तार के लिए मसीना बीज निगम व विवि के बीच समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किये गये है। तो दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों में कृषि को लाभकारी बनाने के लिए एग्रो टेक्सटाईल्स को बढ़ावा समय की मांग है। इसको लेकर विवि एवं समसीरा के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किये गये है। उन्होंने विवि से आक (मंदार) से धागा बनाने पर भी शोध करने की अपील की। संबोधन की शुरूआत केन्द्रीय मंत्री ने भारत माता की जय से व देश के वीर जवानो की शौर्य व पराक्रम की चर्चा से की। कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने समझौते को ऐतिहासिक बताते हुए राज्य के किसानों के लिए काफी लाभकारी बताया। उन्होंने विवि से विकसित मक्का की चर्चा करते हुए कहा कि इसकी लंबाई 14 फीट है। उत्पादन प्रति हेक्टेयर उत्पादन 3 सौ टन से अधिक है। साथ ही इथनॉल की मात्रा 40 प्रतिशत से अधिक है। एमएलसी सर्वेश कुमार ने कहा कि इथेनॉल उत्पादक राज्यों में बिहार अग्रणी है।

शुक्रवार को कृषि विवि में संबोधित करते केन्द्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह, वीसी, एमएलसी व अन्य।

राज्य का करीब 20 प्रतिशत दूध उत्पादन समस्तीपुर व बेगूसराय है। यहां पशु चारे की काफी कमी है। इस अवसर पर वस्त्र मंत्रालय के संयुक्त सचिव अजय गुप्ता एवं द सिन्थेटिक एंड आर्ट सिल्क मिल्स रिसर्च एसोसिएशन के डीजी डॉ. अशोक तिवारी ने भी संबोधित किया। स्वागत निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह, संचालन डॉ. कुमारी अंजनी एवं धन्यवाद कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार ने किया। मौके पर सहायक निदेशक रविप्रकाश सिंह, वैज्ञानिक प्रमोद सालुंखे समेत विवि के डीन डायरेक्टर व वैज्ञानिक मौजूद थे।

Hindustan 10-05-2025

43 डिग्री जाएगा दिन का तापमान

पूसा। अगले चार दिनों तक आसमान साफ और मौसम शुष्क रहने की संभावना है। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने 14 मई तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में औसतन 3 से 10 किमी. प्रति घंटा की गति से पछुआ एवं 13-14 मई के आसपास पुरवा हवा चल सकती है। पूर्वानुमान की अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 एवं दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने का अनुमान है। अधिकतम तापमान 40 से 43 डिग्री एवं न्यूनतम 29 से 32 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है।

Hindustan 10-05-2025

नेशनल टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन एवं कृषि मिल कर देश के विकास को देंगे गति : गिरिराज सिंह

एग्रो टेक्स्टाइल व साईलेज मक्का संवर्धन पर आधारित एक दिवसीय संगोष्ठी संपन्न

पूसा (एसएनबी)। राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के परिसर स्थित विद्यापति सभागार सभागार में नेशनल टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन, वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत एग्रो टेक्स्टाइल पर केंद्रित विशेष पहल एवं साईलेज मक्का के बढ़ावा से जुड़े विषय पर आधारित एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अतिथियों का शॉल, पाग, स्मृति चिन्ह आदि से स्वागत, कुलगीत प्रसारण आदि औपचारिक प्रक्रियाओं के बाद मुख्य अतिथि भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के मंत्री गिरिराज सिंह, वीसी डॉ पीएस पाण्डेय व अन्य आगत अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया। अपने संबोधन में कहा कि नेशनल टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन एवं कृषि एक साथ मिलकर देश के विकास में काफी काम कर सकता है। उन्होंने कहा कि इसको लेकर नेशनल टेक्निकल टेक्स्टाइल मिशन एवं केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के बीच एक एम ओ यू किया जा रहा है। जो ऐतिहासिक है। उन्होंने कहा कि इसके अलावे विश्वविद्यालय एवं मसीना बीज प्रा. लिमिटेड के साथ साइलेज मक्का को बढ़ावा देने से जुड़े एक समझौता भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने मक्के का लगभग चौदह फीट उंचा एक नया प्रभेद साईलेज विकसित किया है जिसका उत्पादन प्रति हेक्टेयर तीन सौ टन से ज्यादा है। जबकि अभी के वर्तमान प्रभेद का अधिकतम उत्पादन चालीस से पचास टन है। इसके अतिरिक्त मक्का के इस प्रभेद साईलेज में इथेनॉल का प्रतिशत अधिक है। इस प्रभेद के विकास के लिए श्री सिंह ने कुलपति डॉ पीएस पांडेय और वैज्ञानिक डॉ मृत्युंजय कुमार की तारीफ करते हुए कहा कि पिछले दो वर्षो से विश्वविद्यालय में काफी अच्छा कार्य हो रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को आक द्रुमंदार) से धागा बनाने पर भी शोध करना चाहिए। वहीं कुलपति डॉ पांडेय ने विश्वविद्यालय के डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में विकास के बारे में भी जानकारी और वस्त्र मंत्रालय को विश्वविद्यालय के साथ समझौता के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि, टेक्स्टाइल का मार्डर्न एग्रीकल्चर में क्या उपयोग हो सकता है इसका प्रदर्शन वस्त्र मंत्रालय के इस केंद्र के माध्यम से किया जायेगा। वही उपस्थित बिहार विधान परिषद सदस्य सर्वेश कुमार ने कहा कि साइलेज मक्का के बढ़ावा से बिहार के पशुपालकों को फायदा मिलेगा।

दीप प्रज्वलित करते मुख्य अतिथि व अन्य।

कुलसचिव डॉ मृत्युजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय ने जिस मक्का के प्रभेद का विकास किया है वो ऐतिहासिक है। इससे किसानों की आय बढेगी। उन्होंने कहा कि इसके पेटेंट की प्रक्रिया चल रही है इसलिए इस पर अनुसंधान परिषद की बैठक में विस्तार से चर्चा की जायेगी। इसके पुर्व निदेशक अनुसंधान ने आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय के अनुसंधान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ कुमारी अंजनी ने किया। मौके पर मसीना बीज के अनिल मिश्रा, ससमीरा के अशोक तिवारी, निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा, डीन डॉ उषा सिंह, डॉ रत्नेश कुमार, डॉ मुकेश कुमार, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह सहित शिक्षक वैज्ञानिक एवं छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 10-5-2025

सतायेगा मौसम का तल्ख तेवर, प्रचंड धूप व भीषण गर्मी से बढ़ेगी मुश्किलें

समस्तीपुर (एसएनबी)। आने वाले 5 दिनों में प्रचंड धूप और भीषण गर्मी परेशानी का सबब बनेगा। इस दौरान आसमान साफ और मौसम शुष्क रहने के आसार हैं। जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 14 मई, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार मौसम पूर्वानुमान में आसमान प्रायः साफ रहने का अनुमान है एवं उत्तर बिहार के जिलों में मौसम के शुष्क रहने के साथ-साथ गर्म दिन बने रहने की सम्भावना है। इस दौरान हवा में अधिक मात्रा में नमी रहने के कारण गर्मी का एहसास ज्यादा हो सकता है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 40 से 43 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 29-32 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 3 से 10 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है तथा 13-14 मई के आसपास पुरवा हवा भी चल सकती है।

Rashtriya Sahara 10-5-2025

भास्कर 13/5/25 पेज 13

फसल पर संकट • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी जानकारी

केला उत्पादक किसान थ्रिप्स रोग का वैज्ञानिक विधि से करें बेहतर प्रबंधन

भास्कर न्यूज़ | पूसा

केले में लगने वाला थ्रिप्स रोग काफी घातक और विनाशकारी रोग होता हैं। वातावरण में बनने वाला अत्यधिक नमी इस रोग को बढ़ाने में सहायक होता हैं। इस रोग के आक्रमण के बाद केले के फल पर छोटे और काले धब्बे बन जाते हैं जिससे केला उत्पादक किसानों को केले का उचित मूल्य बाजारों में नहीं मिल पाता है।

बिहार के किसान वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर न सिर्फ केले को इस रोग से बचा सकते हैं बल्कि वे बेहतर और रोगमुक्त केले के फल का उत्पादन भी प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय कृषि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि थ्रिप्स कीट केले के गाभे के अंदर प्रवेश कर कोमल विशिष्ट गहरे वी-आकार का निशान दिखाई देने लगता हैं। इतना ही नहीं केले के घौद में जब केला का फल पूरी तरह से विकसित हो जाता हैं तो थ्रिप्स कीट के प्रभाव और उसके लक्षण जंग के रूप में फलों पर दिखाई देने लगते हैं। उन्होंने बताया कि थ्रिप्स किट केले के पत्ते, फूल और फल सभी को नुकसान पहुंचा सकते है। केले के पत्ते पर थ्रिप्स कीट का आक्रमण होने के बाद (हेलियनोथ्रिप्स कडालीफिलस) के खाने की वजह से पहले तो पीले धब्बे बन जाते है जो बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं। इस कीट के उग्र व गंभीर अवस्था में आने के कारण केले की प्रभावित पत्तियां सूख जाती हैं। उन्होंने बताया कि इस कीट के वयस्क जहां फलों में ही अंडे देने का काम करते है। वही इस कीट के निम्फ फलों को आसानी से खाते रहते हैं। उन्होंने बताया कि अंडा देने और फलों

केले में लगने वाला थ्रिप्स रोग फसल के लिए घातक

थ्रिप्स रोग से संक्रमित केले का फल।

गर्मी के दिनों में इस कीट का प्रकोप अधिक

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि गर्मी के दिनों में इस कीट का प्रकोप काफी अधिक हो जाता है। यह कीट केले के पूवन, मोन्थन, सबा, नेय पूवन और रस्थली जैसे प्रजातियों को खासकर बुरी तरह प्रभावित करता हैं। उन्होंने बताया कि केले के पत्ते पर हमले के बाद थ्रिप्स कीट का हमला केले के फूलों पर होता है। इस दौरान (थ्रिप्स हवाईयन्सिस) कीट के वयस्क और निम्फ केला के पौधे में फूल निकलने से पहले ही फूलों के कोमल हिस्सों और फलों को अपना भोजन बना लेती हैं। इस कीट का आक्रमण केले में फूल के खिलने से दो सप्ताह बाद तक भी आसानी से बना रहता है।

थ्रिप्स कीट पर नियंत्रण के लिए फूल निकलने के समय करें छिड़काव

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस कीट से केले को बचाने के लिए केला उत्पादक किसान केले में फूल निकलने के एक पखवाड़े के भीतर छिड़काव करते रहे। उन्होंने बताया कि जब केले के फूल सीधी अवस्था में हो तो किसान 2 एमएल इमिडावलोप्रिड नामक दवा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर केले पर छिड़काव करें। इसके लिए किसान ब्यूवेरिया बेसियाना दवाई का एक एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर मिट्टी में छिड़काव करें। उन्होंने बताया इन सबके अलावे कि थ्रिप्स के संक्रमण को रोकने के लिए केले के बागों में विकसित हो रहे नए घौद को पॉलीप्रोपाइलीन से ढक केला के बंच (गुच्छों) आभासी तना और सकर

लगातार चढ़ता जा रहा तापमान, जिले में लू का असर बढ़ा

जासं, समस्तीपुर : मई महीने की शुरुआत में राहत देने वाली हल्की ठंडी हवाएं और बारिश अब इतिहास बनती दिख रही हैं। एक मई से लेकर 11 मई तक के तापमान के आंकड़ों पर नजर डालें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जिले में गर्मी का प्रकोप लगातार बढ़ता जा रहा है। महीने के शुरुआती दिनों में जहां अधिकतम तापमान 33 से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा, वहीं छह मई को यह गिरकर 30.2 डिग्री पर आ गया था, जिससे लोगों को थोड़ी राहत मिली थी। लेकिन इसके बाद मौसम ने तेजी से करवट ली और सात मई से तापमान में

- सात मई से तापमान में लगातार वृद्धि, तेज धूप और गर्म हवाओं से दिन में बाहर निकलना मुश्किल
- अभी जिले के पारा में और बढ़ोतरी होने के आसार, दो और छह मई को मौसम रहा सुहावना

लगातार वृद्धि दर्ज की गई। आठ मई को अधिकतम तापमान 39.6 डिग्री, 10 मई को 39.2 डिग्री और 11 मई को 39.8 डिग्री तक पहुंच गया। इसी तरह न्यूनतम तापमान में भी वृद्धि देखने को मिली, जो एक मई को 22.1 डिग्री था, वह 11 मई को बढ़कर 26 डिग्री तक पहुंच गया। तेज धूप और गर्म हवाओं के कारण दिन में बाहर निकलना मुश्किल होता जा रहा है। हालांकि, इस बीच 12 मई को मौसम सामान्य रहा। जहां अधिकतम तापमान 35.5 डिग्री, वहीं न्यूनतम 25.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। गर्मी के इस बढ़ते प्रभाव से स्कूली बच्चों, बुजुर्गों और रोगियों को विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है।

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डा. ए सत्तर ने भी दोपहर के समय में धूप से बचने और पर्याप्त पानी पीने की सलाह दी है। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दिनों में तापमान में और वृद्धि हो सकती है। जिले में लू चलने की भी संभावना जताई जा रही है, जिससे आमजन को सतर्क रहने की जरूरत है।

तारीख	अधिकतम	न्यूनतम
एक मई	33.4	22.1
दो मई	33	20
तीन मई	35	22
चार मई	34.4	22.6
पांच मई	33.5	21.5
छह मई	30.2	20
सात मई	36	26
आठ मई	39.6	23.4
नौ मई	38.2	24
10 मई	39.2	23.5
11 मई	39.8	26
12 मई	35.5	25.2

(डिग्री सेल्सियस में)

Dainik Jagran 13-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 14 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान साफ रहने का अनुमान है। उसके बाद मौसम शुष्क रहेगा। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में गर्मी का एहसास ज्यादा हो सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
13 मई	37.0	26.0
14 मई	37.2	26.0
	दरभंगा	
13 मई	37.2	26.0
14 मई	37.2	26.5
	पटना	
13 मई	39.0	27.0
14 मई	39.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 13-05-2025

केंद्रीय विद्यालय में बारहवीं के शत-प्रतिशत छात्र सफल

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित केंद्रीय विद्यालय पूसा के बारहवीं वर्ग के शत-प्रतिशत छात्र-छात्राएं सफल रहे. इसमें मुख्य रूप से अनुष्का कुमारी ने 88.2 प्रतिशत, साक्षी कुमारी 86.8 प्रतिशत, अंशिका दीप्ति 86.4 प्रतिशत, रितिका रानी 85 प्रतिशत एवं ऋतु सिंह ने 85 प्रतिशत अंक के साथ विद्यालय के टॉपर रहे. विद्यालय के प्राचार्य डॉ टीएन ठाकुर ने सफल बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की है. वहीं शैलेजा कार्यी संस्कृति विद्यापीठ महमदपुर देवपार के बारहवीं वर्ग में कॉमर्स संकाय में कहकंशा परवीन ने 80 प्रतिशत, विज्ञान संकाय में प्रियांशु रंजन 80 प्रतिशत, प्रियोतपाल 74.6 प्रतिशत, श्रीयाम भारद्वाज 71.8 प्रतिशत एवं प्रियंका 71.6 प्रतिशत अंक के साथ विद्यालय टॉपर रहे. प्राचार्य डॉ सुनील कुमार साव ने सफल छात्र-छात्राओं को शुभकामना दी है.

प्रभात खबर
Wednesday, May 14, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6823974103ce8a62d1f3088

संज्ञात्मक, सामाजिक व भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने की जरूरत : डॉ सिंह

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय एवं यूनिसेफ के संयुक्त तत्वाधान से नवांकुर संगम कार्यक्रम का आयोजन को मध्य विद्यालय के प्रांगण में किया गया. इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास को बढ़ावा देना व इससे जुड़े विभिन्न विभागों व हितधारकों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना था. कार्यक्रम में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशा, एएनएम, जनप्रतिनिधि, स्कूल शिक्षक, स्वास्थ्य व पोषण विभाग के अधिकारी, गैर-सरकारी संगठन, विशेषज्ञ तथा बाल कल्याण से जुड़े संस्थानों के प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली. इस अवसर पर सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता सह परियोजना की मुख्य अन्वेषक डॉ. ऊषा सिंह ने बताया कि बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए 14 रचनात्मक स्टॉल्स की स्थापना की गई. जिनमें संज्ञानात्मक, सामाजिक व भावनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियां प्रस्तुत की गईं. आइने में देखा, रंगों की पहचान, ध्वनि से मिलान, स्पर्श अनुभव, रचनात्मक गतिविधियां और कहानी कहने जैसे खेल बच्चों और अभिभावकों दोनों के लिए आकर्षण का केंद्र बने। साथ ही स्वास्थ्य जांच, पोषण परामर्श, वृद्धि निगरानी एवं हाथ की साफ-सफाई के स्टाल से लोगों ने न केवल स्वास्थ्य वरन पोषण एवं साफ-सफाई के भी महत्त्व को समझा. इन इंटरैक्टिव स्टॉल्स ने न केवल बच्चों का मनोरंजन किया, बल्कि उनके सीखने और विकास की प्रक्रिया को भी मजबूत किया. यह मेला बिहार में अपनी तरह का पहला प्रयास था जो ईसीडी के विषय को समुदाय के बीच रोचक और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करता है.

संबोधित करते विशेषज्ञ.

कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों ने बाल्यावस्था विकास की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीवन के पहले छह वर्ष बच्चे के भविष्य की नींव रखते हैं. इस अवधि में पोषण, स्वास्थ्य देखभाल, सुरक्षा और शिक्षा का समन्वित प्रयास अत्यंत आवश्यक होता है. इस अवसर पर अनुमंडल पदाधिकारी बायसी, प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी बायसी, यूनिसेफ के पोषण विशेषज्ञ डॉ. अंतर्यामी दास, पोषण पदाधिकारी शिवानी दर, राज्य समन्वयक अनूप कुमार झा, ईसीडी राज्य समन्वयक राघवेन्द्र कुमार तथा आर पी सी ए यू पूसा से अमित कुमार , प्रोग्राम कंसल्टेंट एवं ईसीडी टीम की उपस्थिति ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की. इनवांकुर संगमइ ने यह सिद्ध किया कि जब समुदाय, शासन और सामाजिक संगठन मिलकर कार्य करते हैं, तो बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में ठोस बदलाव संभव हैं. यह पहल न केवल एक प्रेरणास्पद उदाहरण है, बल्कि प्रदेश के अन्य क्षेत्रों के लिए भी एक मॉडल बन सकती है.

प्रभात खबर
Wednesday, May 14, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6823974103ce8a62d1f3008f

बड़े सपने देखने के लिए छात्र- छात्राओं को प्रेरित करने की जरूरत : डीडीजी

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में नव नियुक्त फैकल्टी सदस्यों के लिए एक महीने के फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम गुरु दक्षता का उद्घाटन किया गया. इसका उद्देश्य फैकल्टी में कौशल व ज्ञान को बढ़ाना है. आईसीएआर नई दिल्ली के उप महानिदेशक (शिक्षा) डॉ. आरसी अग्रवाल ने उच्च शिक्षा संस्थानों में संकाय सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण के महत्व पर जोर दिया. कहा कि किसी भी विश्वविद्यालय की रीढ़ अच्छी मानवशक्ति होती है. शिक्षण के प्रति सहानुभूति के साथ दृष्टिकोण अपनाएं. छात्रों को बड़े सपने देखने के लिए प्रोत्साहित करें. विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति डॉ. आरके मित्तल ने कहा कि विश्वविद्यालय को वैश्विक संस्थान बनाने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत है. कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने देश भर से प्रतिभाशाली दिमागों का चयन किया है.

समूह में मौजूद नवनियुक्त फैकल्टी व वैज्ञानिक.

गुरु दक्षता कार्यक्रम उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है. इस कार्यक्रम में 22 राज्यों के 89 संकाय सदस्य भाग ले रहे हैं. रजिस्ट्रार डॉ. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि गुरु दक्षता कार्यक्रम का उद्देश्य संकाय सदस्यों को उनके संबंधित क्षेत्रों में नवीनतम ज्ञान और कौशल से लैस करना है. फैकल्टी इंडक्शन कोर्स के निदेशक डॉ. रामदत्त ने स्वागत किया. इस कार्यक्रम में शैक्षणिक, अनुसंधान व उद्योग के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा 87 व्याख्यान दिये जायेंगे. संचालन डॉ कुमारी अंजनी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ ऋतंभरा ने किया. निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, प्रभारी डीन इंजीनियरिंग डॉ राम सुरेश वर्मा, डीन कम्युनिटी साइंस डॉ उषा सिंह, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ शिवपूजन सिंह थे.

प्रभात खबर
Wednesday, May 14, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6823974103ce8a62d1f3008f

भास्कर 24/4/25 पेज 17

कार्यक्रम • बीसा संस्थान पूसा में स्वागत व बधाई समारोह का आयोजन, नए महानिदेशक को दी बधाई

जलवायु-संवेदनशील और अनुकूल कृषि तकनीकों से किसानों की बदली स्थिति

भास्कर न्यूज | पूसा

प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. एमएल जाट ने हाल ही में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक एवं भारत सरकार के कृषि सचिव (डेयर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। इस प्रतिष्ठित पद पर उनके नियुक्ति से देश भर के कृषि वैज्ञानिक और कृषकों में खुशी की लहर दौड़ गई है। बिहार में कृषि क्षेत्र में उनके योगदान को लेकर बुधवार को बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा) फार्म पूसा में एक स्वागत एवं बधाई समारोह का आयोजन किया गया। यह आयोजन डॉ. जाट की अनुपस्थिति में किया गया लेकिन वे इस कार्यक्रम में वर्चुअल रूप से जुड़े तथा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। इधर सम्मान समारोह के कर्ता धर्ता बीसा संस्थान के हेड डॉ. राजकुमार जाट ने कहा कि यह आयोजन कृषि अनुसंधान एवं नवाचार में नेतृत्व को सम्मानित करने का एक प्रेरणादायक क्षण रहा। उन्होंने कहा कि डॉ. एमएल जाट को विशेष रूप से बिहार में उनके अमूल्य योगदान के लिए जाना जाता है। बिहार में रहते हुए उन्होंने सिमिट और बीसा जैसे संस्थान के माध्यम से जलवायु-संवेदनशील, संसाधन-कुशल और छोटे किसानों के लिए अनुकूल कृषि तकनीकों को जमीनी स्तर तक पहुचाया। उन्होंने कहा कि डॉ. एमएल जाट का बिहार से गहरा जुड़ाव रहा है। उन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ किसानों की आमदनी और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी सोच हमेशा किसानों को केंद्र में रखकर होती है। इस सम्मान समारोह में आईएआरआई के हेड डॉ. केके सिंह, केवीके तुर्की के हेड डॉ. एमएल मीना, डॉ. शतीश नायक, डॉ. विजय सिंह मीना, डॉ. काजोड़ मल चौधरी, डॉ. मनीष विश्कर्मा आदि थे।

किसानों की आमदनी और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में रही भूमिका

पूसा में सम्मान समारोह में वर्चुअल रूप से जुड़े आईसीएआर के महानिदेशक व कृषि वैज्ञानिक।

शून्य जुताई तकनीक, डायरेक्ट सीडेड राइस, फसल अवशेष प्रबंधन समेत कई तकनीकों को प्रोत्साहित कर किसानों तक पहुंचाया

बिहार में रहने के दौरान डॉ.एमएल जाट ने किसानों के लिए एक से बढ़कर एक कार्य कर तमाम तरह की उपलब्धियां हासिल की। डॉ. एमएल जाट ने शून्य जुताई तकनीक, डायरेक्ट सीडेड राइस, फसल अवशेष प्रबंधन, फसल विविधिकरण जैसी संरक्षण कृषि तकनीकों को प्रोत्साहित कर किसानों तक पहुंचाया। इसके अलावे उन्होंने हैप्पी सीडर, जीरो टिलेज, जीरो ड्रिल जैसी यांत्रिक तकनीकों एवं कस्टम हायरिंग सेंटर मॉडल के जरिए यांत्रिक सेवाओं को छोटे-छोटे किसानों तक यानी गांव-स्तर पर उपलब्ध कराया। डॉ. एमएल जाट की उपलब्धियां इतने पर भी खत्म नहीं हुई। उन्होंने मिट्टी स्वास्थ्य प्रबंधन, सटीक पोषण प्रबंधन, डिजिटल कृषि तकनीक का विस्तार, सीएसआईएसए, एसआरएफएसआई, सात निश्चय और जीविका जैसी योजनाओं में भी तकनीकी समर्थन देकर उसके लिए बेहतर कार्य किए। उनके इन प्रयासों से हजारों किसान लाभान्वित हुए। किसानों के खेती में लागत में कमी आई तथा उत्पादन में वृद्धि हुआ। जलवायु जोखिमों से मुकाबले की क्षमता में सुधार हुआ।

सरकारी तंत्र का किया जा रहा दुरुपयोग : माले

समस्तीपुर | भाकपा माले जिला स्थाई समिति सदस्य ने कहा है कि ऐसा पत्र जानकारी के अनुसार जिले के सभी बीडीओ द्वारा जारी कर समस्तीपुर जिले में करीब 2 सौ बस, आदि की व्यवस्था कर टोला सेवक, विकास मित्र, आवास सहायक, स्वच्छता पर्यवेक्षक आदि सरकारी कर्मी को आवास योजना के लाभुक, जनप्रतिनिधि, जीविका आदि कर्मी को रैली में भागीदारी कराने की जिम्मेदारी दी गई है। यह सरकारी तंत्र, का दुरुपयोग एवं लोकतंत्र का हनन है। भाकपा माले के सुरेंद्र प्रसाद सिंह ने कहा कि भाजपा के इस कार्रवाई की निंदा करती है। वायरल पत्र की जांच कर टोला सेवक/विकास मित्र आदि को भीड़ जुटाने की जिम्मेवारी देने वाले पदाधिकारी पर कार्रवाई होनी चाहिए। वहीं ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन 'आइसा' के जिला सचिव सुनील कुमार सिंह व जिला अध्यक्ष लोकेश राज ने संयुक्त रूप से प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कई आरोप लगाए।

मछली पकड़ने के दौरान डूबने से युवक की मौत

हायाघाट | थाना क्षेत्र के बलुआही गांव के एक 49 वर्षीय व्यक्ति की करेह नदी में मछली पकड़ने के दौरान डूबने से मौत हो गई। उसकी पहचान गांव के वार्ड 16 निवासी मग्नू सहनी के पुत्र मन्ना सहनी बताया जाता है। जानकारी के मुताबिक मृतक सहनी सुबह नाव से नदी में मछली पकड़ने गया था। इस दौरान नाव का संतुलन बिगड़ गया और वह गहरे पानी में समा गया।

दो सप्ताह से अधिक समय तक खांसी तो जांच जरूरी

कुपोषित बच्चों पर बीमारी का अधिक प्रभाव

भास्कर न्यूज | शिवाजीनगर

टीबी को क्षय रोग के नाम से भी जाना जाता है। यह माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्लोसिस नामक जीवाणु के कारण होने वाला एक गंभीर संक्रामक बीमारी है जो वयस्क के साथ बच्चों को भी हो सकता है। बच्चों में टीबी के अधिकांश मामले फेफड़ों से जुड़े होते हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र शिवाजीनगर के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर अमित कुमार ने बताया कि बच्चों को टीबी के संक्रमण से बचाने के लिए सरकारी अस्पताल में निःशुल्क मिलने वाला बीसीजी का टीका समय पर अवश्य लगवाना चाहिए। इससे बच्चों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसके अलावा बच्चों को संतुलित आहार का सेवन करवाना चाहिए। घर या आसपास के खांसी या बुखार से पीड़ित लोगों से दूर रखना चाहिए। साफ सफाई का ध्यान रखना चाहिए। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर सुमित कुमार ने बताया कि स्वस्थ बच्चों की अपेक्षा कुपोषित बच्चे जल्दी टीबी का शिकार हो जाते हैं। यदि बच्चे को दो हफ्ते या उससे ज्यादा समय से लगातार खांसी आती है तो टीबी की जांच करानी आवश्यक है। उन्होंने बताया कि टीबी के कीटाणु बच्चे के फेफड़ों से शरीर के अन्य अंगों में बहुत जल्दी पहुंच जाते हैं। शुरुआत में बच्चों में हल्का बुखार बना रहता है। एक्स-रे व मोंटू टेस्ट के द्वारा टीबी की पहचान की जाती है। उन्होंने बताया कि टीबी होने पर सरकारी अस्पताल में चिकित्सक से मिलकर जाँच करवानी चाहिए और दवाओं का पूरा कोर्स लेना चाहिए। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के स्वास्थ्य प्रबंधक अमानुल्ला ने बताया कि टीबी एक गंभीर बीमारी है। इसके शुरुआती लक्षणों को भूलकर भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

सरकारी अस्पतालों में इलाज की पूरी व्यवस्था

उन्होंने बताया कि टीबी विश्व की सबसे बड़ी जानलेवा बीमारियों में से एक है। इसके लक्षण दिखने पर तुरंत सरकारी अस्पताल में जांच कराएं। टीबी के लक्षणों को छुपाना खतरनाक हो सकता है। टीबी संक्रमित व्यक्ति का समय पर सही इलाज होना आवश्यक है। मुख्य तौर पर फेफड़ों में टीबी का संक्रमण ज्यादा गंभीर होता है। टीबी से बचने के लिए प्रोटीन तथा विटामिन से भरपूर भोज्य पदार्थ जैसे रोटी, पनीर, दही, दूध, फल, हरी सब्जी, दाल, अंडा, मछली का सेवन करें। सही इलाज व दवाओं के सेवन से टीबी ठीक हो जाता है। इलाजरत होने पर दवा को बीच में नहीं छोड़ा जाना चाहिए अन्यथा यह गंभीर होकर एमडीआर हो जाता है।

छात्रों को बड़े सपने देखने के लिए करें प्रोत्साहित : अग्रवाल

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में गुरु दक्षता कार्यक्रम का आयोजन, इसका मकसद कौशल ज्ञान बढ़ाना

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में नवनियुक्त फैकल्टी सदस्यों के लिए इंडक्शन एवं गुरु दक्षता कार्यक्रम मंगलवार को आयोजित हुई। कार्यक्रम का उद्देश्य फैकल्टी में कौशल और ज्ञान को बढ़ाना है। मुख्य अतिथि आईसीएआर, नई दिल्ली के उप महानिदेशक (शिक्षा) डा. आरसी अग्रवाल ने उच्च शिक्षा संस्थानों में संकाय सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी विश्वविद्यालय की रीढ़ अच्छी मानव शक्ति होती है। डा. अग्रवाल ने संकाय सदस्यों से आग्रह किया कि वे शिक्षण के प्रति सहानुभूति के साथ दृष्टिकोण अपनाएं और छात्रों को बड़े सपने देखने के लिए प्रोत्साहित करें। कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति डा. आरके मित्तल ने नव नियुक्त संकाय सदस्यों को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का झंडा अब उनके हाथों में है। डा. मित्तल ने उन्हें विश्वविद्यालय को एक विश्व स्तरीय वैश्विक संस्थान बनाने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित किया। अध्यक्षीय संबोधन में राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डा. पुन्यव्रत सुविमलेंदु पांडे ने संकाय सदस्यों की नियुक्ति में शामिल कठोर चयन प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। उन्होंने जोर दिया कि विश्वविद्यालय ने देश भर से प्रतिभाशाली दिमागों का चयन किया है और गुरु दक्षता कार्यक्रम उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में 22 राज्यों के 89 संकाय सदस्य भाग ले रहे हैं, जो विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय एकता और विविधता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि इसमें भाग लेने वाले संकाय सदस्यों में से 39 महिलाएं हैं, जो विश्वविद्यालय के लिंग समावेश पर जोर को दर्शाता है।

कार्यक्रम को संबोधित करते डा. आरसी अग्रवाल व उपस्थित अन्य • जागरण

विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डा. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विशेषज्ञों के साथ व्याख्यान और बातचीत मूल्यवान अंतर्दृष्टि और अनुभव प्रदान करेगी। जिससे संकाय सदस्य अपनी भूमिकाओं में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकेंगे। फैकल्टी इंडक्शन कोर्स के निदेशक डा. रामदत्त ने कहा कि गुरु दक्षता कार्यक्रम विश्वविद्यालय में क्षमता निर्माण और संकाय विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कार्यक्रम में शैक्षणिक, अनुसंधान और उद्योग के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा 87 व्याख्यान दिए जाएंगे। जिनमें शिक्षा शास्त्र, अनुसंधान, बौद्धिक संपदा अधिकार, कापीराइट, प्रशासन, वित्त और अन्य विषयों को शामिल किया जाएगा। इसके अतिरिक्त संकाय सदस्य कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) और अनुसंधान केंद्रों का दौरा करेंगे ताकि उनके कामकाज का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया जा सके। मंच संचालन डा. अंजनी कुमारी ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डा. ऋतंभरा ने किया। मौके पर निदेशक प्रसार डा. मयंक राय, डीन बेसिक साइंस डा. अमरेश चंद्र, पुस्तकालय अध्यक्ष डा. राकेश मणि शर्मा आदि उपस्थित रहे।

Dainik Jagaran 14-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 18 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अनेक स्थानों पर गरज वाले बादल बनने के साथ हल्की वर्षा होने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
14 मई	35.2	24.4
15 मई	36.0	24.4
	दरभंगा	
14 मई	36.0	24.4
15 मई	36.0	26.0
	पटना	
14 मई	38.0	27.0
15 मई	38.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik jagran 14-05-2025

विकसित भारत के लिए युवा वैज्ञानिकों की भूमिका महत्वपूर्ण: डीजीजी

- विवि ने देश के प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों का किया है चयन:कुलपति
- नवचयनित वैज्ञानिकों के एक माह का फैक्लटी इंडक्शन प्रोग्राम शुरू

पूसा, निज संवाददाता। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक(शिक्षा) डॉ.आरसी अग्रवाल ने कहा कि विकसित भारत के सपने को साकार करने में युवा पीढ़ी खासकर वैज्ञानिकों की भूमिका अहम है। वे अपनी प्रतिभा व लगन से निर्धारित लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। इस कड़ी को सशक्त करनें के लिए विवि का नवनियुक्त वैज्ञानिकों का चयन व उनका क्षमता बर्द्धन का प्रयास सराहनीय है। वैज्ञानिकों का यह इंडक्शन प्रोग्राम विवि के शोध, शिक्षा व प्रसार के क्षेत्र में एक नई दिशा देगा। वे मंगलवार को विवि के विद्यापति सभागार में नवचयनित वैज्ञानिकों के एक माह के फैक्लटी इंडक्शन प्रोग्राम गुरु दक्षता के उद्घाटन के मौके पर बोल रहे थे। कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि विवि ने देश भर से प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों का चयन किया है। विवि का गुरु दक्षता कार्यक्रम उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कहा कि इसमें 22 राज्यों से 39 महिला समेत कुल 89 प्राध्यापकों का चयन किया गया। उन्होंने वैज्ञानिकों को शोध शिक्षा के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाने पर बल देते हुए कहा कि इससे विवि, देश व समाज काफी लाभान्वित हो सके। पूर्व कुलपति डॉ.आरके मित्तल ने कहा कि विवि की उम्मीदे युवा वैज्ञानिकों पर टीकी है। जरूरत है विवि को एक विश्व स्तरीय संस्थान बनाने की। कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार ने कहा गुरु दक्षता कार्यक्रम संकाय सदस्यों को कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार स्वागत निदेशक डॉ.रामदत्त, संचालन डॉ.कुमारी अंजनी एवं धन्यवाद डॉ.ऋतंम्बरा ने की।

कृषि विवि में दीप प्रज्जवलित कर प्रशिक्षण का उद्घाटन करते डीडीजी डॉ.आरसी अग्रवाल, कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय व अन्य।

Hindustan 14-05-2025

केवी के ऋतुराज ने 97.6, नवोदय की कल्पना को 96.8% अंक

पूसा,निज संवाददाता। सीबीएससी की 10वीं व 12वीं का परिणाम मंगलवार को घोषित कर दिया गया है।इसमें केन्द्रीय विद्यालय, पूसा की 12वीं कक्षा में शत-प्रतिशत रिजल्ट रहा। यहां अनुष्का कुमारी ने 88.2 प्रतिशत, साक्षी कुमारी 86.8, अंशिका दिप्ती 86.4, ऋतिका रानी व रीतू सिंह ने 85 प्रतिशत अंक लाकर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान पाया। जबकि कक्षा 10 में 97.9 प्रतिशत रिजल्ट रहा।

इसमें ऋतुराज 97.6 प्रतिशत, निखिल भारद्वाज 94.8, रूद्धाक्ष त्रिपाठी 94.6, वैष्णवी कुमारी ने 94.4 प्रतिशत अंक लाकर क्रमशः प्रथम,द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान पाया। इसके अलावा आदित्य कुमार ने 90.4, कृतिका रानी 90.2, अदिति सावर्ण ने 87 प्रतिशत अंक हासिल किया। जानकारी प्राचार्य टीएन ठाकुर ने दी।

इधर पीएमश्री जवाहर नवोदय विद्यालय,बिरौली के उपप्राचार्य आरएस झा ने बताया कि 12वीं कक्षा में (कला) में रौशन कुमार 91.8,सिम्पी साहनी 89.4 एवं शुभम कुमार 88.8 प्रतिशत अंक लाकर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाया। जबकि विज्ञान में सुभाष रंजन 84.6, मणीकांत 84.2 एवं हिमांशु राज 81.6 प्रतिशत अंक पाकर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाया।

संत पॉल सेकेण्ड्री का शत प्रतिशत रहा परिणाम

समस्तीपुर। संत पॉल सेकेण्ड्री स्कूल, वीरसिंहपुर के 12 वीं का परिक्षा परीणाम शत प्रतिशत रहा है। स्कूल के निदेशक अविनाश कुमार ने बताया कि प्रभात रंजन ने 91.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वहीं निशा भारती ने 89.6 प्रतिशत अंक के साथ द्वितीय स्थान एवं अमन कुमार ने 89.4 प्रतिशत अंक लाकर तृतीय स्थान प्राप्त किया है। एकता भारती को 88 प्रतिशत, अराध्या को 87.6 प्रतिशत, पंखुरी को 87.4 प्रतिशत एवं धीरज को 85 प्रतिशत अंक प्राप्त हुआ है।

कक्षा 10 में कल्पना भारती ने 96.8, कृति प्रदीप 96.4 एवं आशुतोष कुमार 94.2 प्रतिशत अंक लेकर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाया।

कैंपस पब्लिक स्कूल, पूसा के कक्षा 12 में शशांक राज 88.2, निष्ठा 87.4 एवं दिव्यांश राज 86.4 प्रतिशत अंको के साथ क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाया। वहीं कक्षा 10 में कृतिका 90.2, सौरभ कुमार 89 एवं आर्यन कुमार 87.8 प्रतिशत अंको के साथ क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाया। जानकारी प्राचार्य अजय कुमार ने दी। इधर ग्रीनवैली इन्टरनेशनल स्कूल, मालीनगर के छात्र सार्थक भारद्वाज ने 94.20 प्रतिशत अंक पाया।

HIndustan 14-05-2025

शिक्षण में सहानुभूति व दृष्टिकोण अपनाए शिक्षक : डॉ आरसी अग्रवाल

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में विवि के विभिन्न महाविद्यालयों के विभिन्न संकाय में नव नियुक्त सदस्यों के लिए इंडक्शन विषय पर आधारित गुरू दक्षता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं आगत अतिथि सहित कुलपति ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आईसीएआर नई दिल्ली के उप महानिदेशक शिक्षा डॉ आरसी अग्रवाल ने संबोधित करते हुए कहा कि वे शिक्षण के प्रति सहानुभूति के साथ दृष्टिकोण को अपनाएं और छात्रों को बड़े सपने देखने के लिए प्रोत्साहित करें उन्होंने कहा कि विकसित भारत बनाने में शिक्षकों की भूमिका अहम होगी। विशिष्ट अतिथि आरएयू पूसा के पूर्व कुलपति डॉ. आर.के. मित्तल ने नव नियुक्त संकाय सदस्यों को बधाई देते हुए

कार्यक्रम में शामिल अतिथि व अन्य।

विश्वविद्यालय को एक विश्व स्तरीय संस्थान बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। विवि के कुलपति डॉ. पुन्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में संकाय सदस्यों की नियुक्ति में अपनाई गई कठोर चयन प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने प्रतिभाशाली दिमागों का चयन किया है, और गुरु दक्षता कार्यक्रम उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक अनुठी पहल है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में 22 राज्यों के 89 संकाय सदस्य शामिल है, जिसमें 39 महिलाएं है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि गुरु दक्षता कार्यक्रम का उद्देश्य संकाय सदस्यों को उनके संबंधित क्षेत्रों में नवीनतम ज्ञान और कौशलयुक्त करना है। कार्यक्रम को फैकल्टी इंडक्शन कोर्स के निदेशक डॉ. रामदत्त ने भी संबोधित करते हुए बताया कि यह कार्यक्रम छात्रों एवं कृषि क्षेत्र को बड़े पैमाने पर लाभान्वित करेगा। इस कार्यक्रम में शैक्षणिक, अनुसंधान व उद्योग के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा 87 व्याख्यान दिया जाएगा। जिसमें शिक्षा शास्त्र, अनुसंधान, बौद्धिक संपदा, कॉपीराइट, प्रशासन, वित्त सहित अन्य विषयों को शामिल किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ अंजनी कुमारी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ ऋतंभरा ने किया। मौके पर निदेशक प्रसार डॉ मयंक राय, निदेशक अनुसंधान डॉ ए के सिंह, निदेशक बीज डॉ डीके राय, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा , डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा, डीन कम्युनिटी साइंस डॉ उषा सिंह, निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ शिवपूजन सिंह अन्य शिक्षक वैज्ञानिक सहित नवनियुक्त संकाय सदस्य उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 14-05-2025

The Times of India 14/05/25

89 RPCAU teachers attend induction prog

B K Mishra | TNN

Patna: Altogether 89 teachers, including 39 women, from 22 states attended the monthlong programme 'Guru Dakhsta' (teacher induction) organised by Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU) at Pusa (Samastipur) on Tuesday to enhance the skills and knowledge of its newly appointed teachers.

Inaugurating the programme, the Indian Council of Agricultural Research (ICAR)'s deputy director general R C Aggarwal emphasized the need for capacity building of teachers in higher education institutions as trained manpower is the backbone of any university. He appealed to the teachers to teach compassionately and encourage students to think big.

BRIGHT BIHAR
EDUCATION IS POWER

Speaking as the guest of honour, RPCAU's former vice-chancellor R K Mittal congratulated the newly recruited teachers and asked them to work hard to turn this institution into a world-renowned university.

In his presidential address, RPCAU's vice-chancellor P S Pandey highlighted the rigorous selection process involved in the appointment of new teachers of the university. "The 'Guru Dakshta' programme has been so designed as to further empower all these bright minds brought from across the country," he said.

RPCAU's registrar Mrityunjay Kumar and programme director Ram Dutt also addressed the participants.

The programme will cover 87 lectures by esteemed experts from academia, research and industry. Additionally, the teachers will also visit Krishi Vigyan Kendras (KVKs) and research stations to gain hands-on experience of their functioning.

लंबी अवधि वाले धान का बिचड़ा गिराने की सलाह

- बिचड़ा अपने निचले खेतों में 25 मई तक गिरायें : कृषि वैज्ञानिक

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के द्वारा किसानों को लंबी अवधि वाले धान का बिचड़ा गिराने की सलाह दी गयी है. कहा गया है कि निचली जमीन जहां जल जमाव ज्यादा होता हो उस खेत में लंबी अवधि वाले धान की किस्में राजश्री, राजेन्द्र मंसुरी, राजेन्द्र स्वेता, किशोरी,स्वर्णा, स्वर्णा सब-1 वीपीटी-5204 तथा सत्यम की नर्सरी 25 मई से लगा सकते हैं. नर्सरी के लिये किसान खेत की तैयारी करें. स्वस्थ पौध के लिये नर्सरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें. नर्सरी में क्यारी की चौराई 1.25 से 1.5 मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार रखें. एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई के लिये 800 से 1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल की नर्सरी तैयार करें. बीज की व्यवस्था प्रमाणित स्त्रोत से करें. खरीफ मक्का की बोआई के लिए खेत की तैयारी करें. खेत की जुताई में 10 से 15 टन गोबर की सड़ी खाद प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित मक्का की किस्में सुआन, देवकी, शक्तिमान-1, शक्तिमान-2, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 है. खरीफ मक्का की बोआई 25 मई से करें. किसान अदरक की बोआई शुरू करें. अदरक की मरान एवं नदिया किस्में उत्तर बिहार के लिये अनुशंसित है. खेत की जुताई में 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद, नेत्रजन 30 से 40 किलोग्राम, स्फूर 50 किलोग्राम, पोटास 80 से 100 किलोग्राम जिंक सल्फेट 20 से 25 किलोग्राम एवं बोरेक्स 10 से 12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें. अदरक के लिए बीज दर 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें. बीज प्रकन्द का आकार 20 से 30 ग्राम जिसमें 3 से 4 स्वस्थ कलियां हो. रोपाई की दूरी 30 गुणा 20 सेमी रखें. अच्छी उपज के लिये रीडोमिल दवा के 0.2 प्रतिशत घोल से उपचारित बीज की बोआई करें. भिंडी की फसल में फल एवं प्ररोह बेधक कीट की निगरानी करें. इसके पिल्लू भिंडी फलों के अन्दर छेद बनाकर उसके अन्दर घुसकर फलों को खाते हैं तथा इसे पूरी तरह नष्ट कर देते हैं. इसकी रोकथाम के लिए सर्वप्रथम प्रभावित फलों को तोड़कर मिट्टी के अन्दर दबा दें. अधिक नुकसान होने पर डाईमेथोएट 30 ईसी दवा का 1.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें. भिंडी की खड़ी फसल पर जैसीड एवं बोरर का प्रकोप होने पर नीम आधारित दवायें नीमीगोल्ड, नीमीसाईड का प्रयोग 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें. उड़द और मूंग की फसल में पीला मोजैक वायरस से ग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें. यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है. इसके शुरुआती लक्षण पत्तियों पर पीले धब्बे के रूप दिखाई देता है, बाद में पत्तियां तथा फलियां पूर्णरूप से पीली हो जाती है. इन पत्तियों पर उत्तक क्षय भी देखा जाता है. फलन काफी प्रभावित होता है. लत्तर वाली सब्जियों नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करें. इन फसलों को क्षति पहुंचाने वाला यह प्रमुख कीट है. यह घरेलू मक्खी की तरह दिखाई देने वाली भूरे रंग का होता है. मादा कीट मुलायम फलों की त्वचा के अन्दर अंडे देती है. अंडे से पिल्लू निकलकर अन्दर ही अन्दर फलों के भीतरी भाग को खाता है. जिसके कारण पूरा फल सड़ कर नष्ट हो जाता है. इस कीट का प्रकोप शुरू होते ही 01 किलोग्राम छोआ 2 लीटर मैलाथियान 50 ईसी को 1000 लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिनों के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें.

प्रभात खबर
Thursday, May 15, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6824e9f1aa92a3e6713ee150

कृषि • नींबू लगाने के लिए जून जुलाई का महीना होता है उपयुक्त, कोरोना के बाद बढ़ी और मांग

कागजी नींबू की खेती कर किसान प्राप्त कर सकते हैं अच्छी आय : कृषि वैज्ञानिक

दैनिक जागरण 15/5/25 P-15 भास्कर न्यूज | पूसा

सुझाव : नींबू में पर्याप्त मात्रा में विटामिन सी पाए जाने से फायदेमंद

कुदरत ने मानव कल्याण के लिए धरती पर तरह-तरह के फलों को उत्पन्न किया है। इन्हीं फलों में से एक हैं कागजी नींबू जो लोगों के बीच काफी लोकप्रिय है। नींबू की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि अब यह फल लोगों के चटनी और सलाद तक ही सीमित नही बल्कि यह इन सबसे ऊपर उठकर नींबू आधारित पेक्टिन उद्योग, अचार उद्योग, शर्बत उद्योग, सिट्रिक एसिड उद्योग, लाइम ऑयल उद्योग सहित कई अन्य उद्योगों तक पहुंच गया हैं। इन उद्योगों ने खासकर नींबू की बागवानी लगाने वाले किसानों के लिए न सिर्फ व्यावसायिक द्वार खोल दिए हैं। बल्कि अब बिहार के हजारों किसान नींबू की खेती कर कम लागत और कम मेहनत में बेहतर आय भी प्राप्त करने लगे हैं। ये जानकारी डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ सालों में देश दुनिया के लोगों ने कोरोना जैसी वैश्विक महामारी का सामना किया हैं। इस वैश्विक महामारी के कारण जहां कई चीजों की बिक्री बुरी तरह से प्रभावित हुई। वही कई चीजों का डिमांड भी अचानक से मार्केट में बढ़ गया। नींबू में पर्याप्त मात्रा में विटामिन सी पाएं जाने के कारण कोरोनाकाल से ही ज्यादातर लोग प्रतिदिन किसी न किसी रूप में कागजी नींबू का सेवन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मार्केट में नींबू की मिल रही अच्छी रेट और जलवायु परिवर्तन के इस दौर में किसान नींबू की बागवानी लगाकर बेहतर उत्पादन और आय दोनों प्राप्त कर सकते है।

नर्सरी में रखे गए नींबू के पौधे।

नींबू की बागवानी लगाने के लिए समतल बलुआर दोमट मिट्टी उत्तम, होगी अच्छी फसल

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि नींबू एक ऐसा फल है जिसका उत्पादन लगभग सभी प्रकार के भूमि में अच्छा ही होता है। हालांकि ऐसी भूमि जिसमें जिवांशम पदार्थ की अधिकता हो तथा जल निकास की अच्छी व्यवस्था हो ऐसी सभी भूमि पर नींबू लगाया जा सकता हैं। उन्होंने बताया कि समतल बलुआर दोमट मिट्टी जिसकी गहराई दो ढाई मीटर या उससे अधिक हो कागजी नींबू के बाग के लिए आदर्श मानी जाती है।

क्या कहते है नींबू उत्पादक किसान

बड़े स्तर पर कागजी नींबू की खेती करने वाले पूसा के मोरसंड गांव के किसान राजीव कुमार सिंह ने बताया कि उन्होंने शुरुआती दौर में अपने एक बीघे के प्लॉट में कागजी नींबू के बाग को लगाया था। अभी उस बाग से वे सालाना लगभग तीन लाख रुपए तक की आय प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि नींबू से मिलने वाली अच्छी आय को ध्यान में रखकर वे अन्य खेतों में भी नींबू का बाग लगा रहे हैं।

किसान जून व जुलाई माह में अपने खेतो में लगाएं नींबू का बाग

कृषि वैज्ञानिक की मानें तो नींबू की बागवानी को लगाने का सबसे सही समय बरसात के दिनों में जून व जुलाई का माह होता है। किसान कृषि विवि, केवीके या किसी अन्य प्रतिष्ठित व रजिस्टर्ड नर्सरी से नींबू के पौधें की खरीदारी कर उसे अपने खेतों में 5 मीटर की दूरी पर लगाएं। उन्होंने बताया कि किसान पौंधा लगाने से एक से दो दिन पूर्व ही अपने खेत में पूर्व से खोदकर रखें गए गड्ढों में गोबर और मिट्टी को मिलाकर डाल दें तथा इसके अलावे प्रति गड्ढा 2 किलोग्राम सुपरफॉस्फेट तथा 20 ग्राम थाइमेट भी निश्चित रूप से डालें। उन्होंने बताया कि कागजी नींबू में वर्ष में कई बार पुष्पन तथा फलन होता हैं। फलों को पकने में जहां 160 से 180 दिनों का समय लगता हैं। वही 8 से 10 साल के आयु का एक नींबू पौधा प्रतिवर्ष आठ सौ से एक हजार फल भी देता हैं। इन फलों का वजन लगभग 80 से 100 किलोग्राम होता हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 18 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अनेक स्थानों पर गरज वाले बादल बनने के साथ हल्की वर्षा होने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
15 मई	35.2	24.4
16 मई	36.0	24.4
दरभंगा		
15 मई	36.0	24.4
16 मई	36.0	26.0
पटना		
15 मई	38.0	27.0
16 मई	38.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

Rashtriya Sahara 15-05-2025

समय से पहले आ सकता है मानसून, अगले पांच दिनों में उमस और गरज वाले बादलों के साथ हल्की बारिश के आसार

समस्तीपुर। देशभर में मौसम का मिजाज तेजी से करवट ले रहा है। भीषण गर्मी के बीच अब राहत की खबर सामने आ रही है। जिसके मुताबिक अगामी 18 मई तक पूरवा हवा के कारण उमस और आसमान में गरज वाले बादलों के साथ बारिश की संभावना है। इस बाबत जिले के डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 14-18 मई, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते है। इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों के अनेक स्थानों पर गरज वाले बादलों के बनने के साथ हल्की वर्षा होने का अनुमान है। बारिश के समय हवा की गति थोड़ा तेज रह सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 35 से 39 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 24-27 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है।

Rashtriya Sahara 15-05-2025

बहुउपयोगी है सहजन • किसान सहजन की बागवानी लगाकर कम लागत में प्राप्त कर सकते हैं बेहतर उपज और आमदनी

सहजन में प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व और विटामिन

दैनिक भास्कर · 175,258·22

भास्कर न्यूज़|पूसा

सहजन की खेती किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी, अच्छी आमदनी होगी : कृषि वैज्ञानिक

सहजन एक बहुउपयोगी पौधा है। इस पौधे के सभी भागों का प्रयोग भोजन, दवाओं और औद्योगिक कार्यों में किया जाता है। सहजन में प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व व विटामिन पाएं जाते हैं जो मानव शरीर के लिए अत्यंत ही लाभकारी है। एक अध्ययन के अनुसार सहजन में दूध की तुलना में चार गुणा अधिक पोटाशियम और संतरे की तुलना में सात गुणा अधिक विटामिन सी पाया जाता है। बिहार के किसान इसकी खेती कर न सिर्फ अपना स्वास्थ्य बेहतर बनाएं रख सकते है बल्कि इससे वो अपनी आर्थिक स्थिति भी काफी मजबूत बना सकते है।

ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि सहजन के फूल, फल एवं पत्ती का प्रयोग जहां मानव भोजन के रूप में करते है। वहीं सहजन के छाल, पत्ती, बीज, गोंद, जड़ आदि से आयुर्वेदिक दवाएं बनाई जाती है जो लगभग 300 से ज्यादा बीमारियों के इलाज में काम आता है। सहजन के पौधा से गूदा निकालकर कपड़ा और कागज जैसे महत्वपूर्ण चीजें भी बनाई जाती है। उन्होंने बताया कि इन दिनों भारत की कई कंपनियां सहजन से पाउडर, कैप्सूल, तेल आदि जैसे आयुर्वेदिक दवाओं को बनाकर विदेशों में निर्यात कर रही हैं। उन्होंने बताया कि बिहार के सभी किसान खासकर दियारा क्षेत्र के किसान सहजन के नए नए प्रभेदों की खेती कर न सिर्फ स्थानीय बल्कि दूर-दराज के बाजारों में भी सहजन को सब्जी के रूप में अच्छी कीमत पर सालों भर बेचकर अपनी आमदनी को बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि सहजन बिना किसी विशेष देखभाल एवं शून्य लागत पर आमदनी देनी वाली फसल है।

बारहमासी सहजन के पेड़ों पर लगे फल।

25 से 30 डिग्री सेलिसयस औसत तापमान की ही जरूरत होती है

उन्होंने बताया कि बिहार के किसानों और खासकर अपनी भू-भागीय पसंद के कारण दियारा क्षेत्र के किसानों के लिए सहजन की खेती उनकी फसल प्रणाली का एक आर्थिक महत्व का उपयुक्त फसल साबित हो सकता है। सहजन की खेती के लिए सामान्यतः 25 से 30 डिग्री सेल्सियस औसत तापमान की आवश्यकता होती है। इसके पौधें में ठंढ को भी सहने की क्षमता अधिक होती है।

किसान साल में एक पौधे से कम से कम 40 से 50 किलोग्राम तक फल प्राप्त कर सकते हैं

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि वर्ष में दो बार फलने वाली सहजन की प्रजाति पी.के.एम.1, पीकेएम 2, कोयेंबटूर 1 तथा कोयेंबटूर 2 प्रमुख हैं। इन प्रभेदों को लगाकर किसान व्यवसायिक स्तर पर अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया इन प्रभेदों का पौधा 4 से 6 मीटर उंचा होता है तथा 90 से 100 दिनों में इसमें फूल आने लगते है। उन्होंने बताया कि सहजन का पौधा लगाने के बाद 160 से 170 दिनों में पेड़ो पर फल लगकर तैयार हो जाते हैं। किसान साल में एक पौधा से कम से कम 40 से 50 किलोग्राम फल प्राप्त कर सकते है।

आमतौर पर सहजन में किसी भी तरह के रासायनिक दवा का स्प्रे नहीं करना पड़ता है

आमतौर पर सहजन में किसी भी तरह के रासायनिक दवाओं का स्प्रे नहीं करना पड़ता हैं जिससे इसका सेवन फायदेमंद हैं। उन्होंने कहा कि सहजन की खेती भारत ही नहीं बल्कि फिलीपिंस, मैक्सिको, श्रीलंका, मलेशिया आदि जैसे दर्जनों देशों में व्यापक स्तर पर की जाती है। उन्होंने बताया कि सहजन के बीज से तेल निकालने के साथ-साथ बीज को उबालकर सुखाने के बाद उससे पाउडर भी बनाया जाता है। इस पाउडर का सेवन मानव शरीर के लिए अत्यंत ही लाभकारी होता है। उन्होंने बताया कि सहजन का वैज्ञानिक नाम मोरिंगा ओलीफेरा है।

सहजन का पौधा एक बहुवर्षीय, कमजोर तना वाला तथा छोटी-छोटी पत्तियों वाला लगभग दस मीटर से भी उंचा पौधा होता है। जो कम उपजाऊ भूमि में भी बिना सिंचाई के सालों भर तेजी से बढ़ते हुए हरा भरा रह सकता है। उन्होंने बताया कि हाल के दिनों में कृषि वैज्ञानिकों ने साल में दो फलन देने वाला सहजन का प्रभेद विकसित किया है जो न सिर्फ उत्पादन ज्यादा देता है बल्कि इसमें प्रोटीन, लवण, लोहा, विटामिन-बी और विटामिन-सी जैसे महत्वपूर्ण तत्व भी पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं और यह लाभकारी है।

सहजन एक बार लगाने पर कम से कम 4 से 5 साल फलेगा

उन्होंने बताया कि सहजन को एक बार लगाने के बाद किसान इससे कम से कम 4 से 5 वर्षो तक फलन प्राप्त कर सकते है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान प्रत्येक वर्ष सहजन से फल प्राप्त करने के बाद पौधे को जमीन से एक मीटर ऊँचाई तक छोड़कर उसे निश्चित रूप से काट दें। किसान चाहे तो वे कटे हिस्से को भी कही अन्य अपने खेतों में लगा सकते है। उन्होंने बताया कि पौधों की कटाई से सहजन के पेड़ में और अधिक टहनियां निकलती है जिससे उसमें फलन अधिक होता है।

उत्तर बिहार में अगले दो दिन बाद मौसम में बदलाव के आसार

दैनिक जागरण 17/5/25 P-6

संस, जागरण • पूसा : उत्तर बिहार में अगले दो दिनों के बाद मौसम में बदलाव आने की संभावना है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मौसम वैज्ञानिक डा. ए सत्तार के अनुसार इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं।

अगले 24 घंटों तक आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है। 18 मई के आसपास मौसम में बदलाव आने की संभावना है। जिसके कारण अनेक स्थानों पर बूंदा-बूंदी या हल्की वर्षा की संभावना बन सकती है। वर्षा के दौरान मेघ गर्जन एवं तेज हवा भी चल सकती है।

इस अवधि में अधिकतम तापमान 35 से 40 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 25 से 28 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। इस दौरान 18 से 20 किलो मीटर प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है।

- मौसम 18 मई को लेगा यू-टर्न, कई स्थानों पर बूंदा-बूंदी या हल्की बारिश की संभावना
- अगले 24 घंटों तक संभावित रूप से मौसम रहेगा शुष्क, आसमान में मंडराते दिखेंगे हल्के बादल

मक्का की कटाई व धौनी करना जरूरी : वर्षा की संभावना को देखते हुए मक्का तथा अरहर की कटाई एवं दौनी अविलंब करते हुए सुरक्षित स्थानों पर भंडारित करें। पशुओं को कीड़े की दवा देने के 10 दिनों बाद खुरपका मुंहपका रोग का टीका लगवाना चाहिए। गर्मी के महीना में पशुओं को 50 ग्राम नमक एवं 50 ग्राम खनिज मिश्रण दें। भूसा खरीदकर पूरे वर्ष के लिए रख लेना चाहिए।

लंबी अवधि वाले धान की किस्में जैसे राजश्री, राजेन्द्र मंसुरी, राजेन्द्र स्वेता, किशोरी, स्वर्णा, स्वर्णा सब-1 वीपीटी-5204 एवं सत्यम की नर्सरी 25 मई से लगा सकते है। नर्सरी के लिए खेत की तैयारी करें। स्वस्थ पौध के लिए नर्सरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करना चाहिए। नर्सरी में क्यारी की चौराई 1.25 से 1.5 मीटर तथा लंबाई सुविधानुसार रखना चाहिए। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई हेतु 800 से 1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल की नर्सरी तैयार करना है। बीज की व्यवस्था प्रमाणित स्त्रोत से करें। बीज गिराने के पूर्व बीजोपचार अवश्य कर लें।

किसान शुरू कर सकते हल्दी की बुआई, यह मौसम अनुकूल

हल्दी की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। किसान इसकी बुआई शुरू कर सकते हैं। हल्दी की राजेन्द्र सोनिया, राजेन्द्र सोनाली किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है। खेत की जुताई में 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद, नेत्रजन 60 से 75 किलोग्राम, स्फूर 50 से 60 किलोग्राम, पोटास 100 से 120 किलोग्राम एवं जिंक सल्फेट 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। हल्दी के लिए बीज दर 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। बीज प्रकन्द का आकार 30-35 ग्राम जिसमें चार से पांच स्वस्थ कलियों हो। रोपाई की दूरी 30 गुणा 20 सेंटी मीटर तथा गहराई पांच से छह सेंटी मीटर रखना है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 21 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में हल्के बादल दिख सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में मौसम शुष्क रहेगा लेकिन एक-दो दिनों में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
17 मई	38.0	26.0
18 मई	38.5	26.0
	दरभंगा	
17 मई	38.5	26.0
18 मई	38.5	26.0
	पटना	
17 मई	40.0	27.0
18 मई	40.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

वीसी ने कृषि फॉर्म का किया निरीक्षण

कल्याणपुर। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ पीएस पांडे ने शुक्रवार को दरभंगा से पूसा लौट के दौरान कल्याणपुर कृषि फार्म का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने ईख के विभिन्न प्रभेद का निरीक्षण करते हुए कई आवश्यक दिशा निर्देश दिया। फार्म के चारदीवारी के अंदर साफ सफाई एवं रंग रोगन करने का भी निर्देश दिया। दोनों फार्म का निरीक्षण के उपरांत मौके पर मौजूद वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी को कुलपति ने कई आवश्यक दिशा निर्देश दिया। मौके पर फार्म प्रभारी डॉ डीएन कामत, अशोक कुमार नंदन, उग्र मोहन यादव आदि लोग मौजूद थे।

Hindustan 17-05-2025

किसानों की चिंता बढ़ी • हरे भरे पौधों को जल्द ही सूखने के कगार पर पहुंचा देता है दीमक का प्रकोप

फलदार पौधों में दीमक का प्रकोप बढ़ा मिश्रित फसल प्रणाली से मिलेगा लाभ

भास्कर न्यूज | पूसा

दीमक का प्रकोप ऐसे तो विभिन्न फसलों में देखने को मिलता है। परंतु फलदार पौधों पर इसका प्रकोप एक श्राप के समान है। दीमक का झुंड फलदार पौधों पर आक्रमण कर उसे जल्द ही सूखने के कगार तक पहुंचा देते हैं। किसान वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर अपने फसल और पौधों को दीमक के प्रकोप से बचा सकते हैं।

ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने बताया कि दीमक का प्रकोप पौधों के जड़ों के अलावे मुख्य तनों और पतले पतले टहनियों पर भी होता है। दीमक प्रायः रात्रि के समय सक्रिय रहते है और दिन में प्रकाश के कारण अपने घरों में चले जाते है। उन्होंने बताया कि वैसी भूमि जहां की मिट्टी खासकर बलुई, हल्की और सूखी होती है। वहां दीमक का प्रकोप अधिक देखने को मिलता है। उन्होंने बताया कि आम एवं अन्य पेड़ों पर दीमक आमतौर पर भूरे रंग का एक गैलरी या सुरंग जैसा कवच बनाकर रहते हैं। ये कवच दीमक की रक्षा भी करता है। किसान जब इस गैलरी या कवच को तोड़ेंगे तब उसके अंदर काफी संख्या में दीमक व उसके अंडे दिखाई पड़ेंगे। उन्होंने बताया कि सामान्यतः दीमक स्वस्थ पेड़ों पर हमला न के बराबर करते हैं। दीमक प्रायः वैसे पेड़ को अपना शिकार बनाते है जो बीमारी से ग्रस्त होते है या काफी कमजोर होते है।

उन्होंने कहा कि दीमक जीवित लकड़ी से नहीं बल्कि मृत लकड़ी से भोजन प्राप्त करते हैं। उन्होंने बताया कि सभी किसानों को दीमक से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए स्वस्थ पौधों के विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियों को निश्चित रूप से बढ़ावा देना चाहिए।उन्होंने बताया कि किसानों को पौधों को अनावश्यक चोट पहुंचाने से बचना चाहिए क्योंकि पौधों को चोट पहुंचाने से दीमक को उस जगह पर प्रवेश करने में काफी आसानी होती है।

वैज्ञानिक तकनीकों को अपना कर पौधों को बचाएं

आम के पौधों में लगा दीमक।

दीमक को कम करने के लिए फसल चक्र भी है उपाय

उन्होंने बताया कि पेड़ो में लगे दीमक के घोंसले और उनके सुरंगों को नष्ट करने के लिए किसान एक मजबूत सींक वाले झाड़ू से सबसे पहले उस जगह को खूब अच्छे तरीके से साफ कर दें। उनके घर को तोड़कर साफ करने से दीमक व उसके अंडो को चींटी और पक्षी चुन चुनकर खा जाते है। इसके अलावे किसान अन्य फसलों में लगने वाले दीमक के निर्माण को कम करने के लिए फसल चक्र को जरूर अपनाएं। किसी खेत में बार बार एक ही फसल लगाने से दीमक का हमला वातावरण के अनुकूल हो जाता है। उन्होंने बताया कि दीमक की क्षति को कम करने के लिए किसान मिश्रित फसल प्रणाली के तहत फसलों को उगाएं।

दीमक के प्रबंधन के लिए किसान इन दवाओं का करें प्रयोग, होगा लाभ

डॉ. सिंह ने बताया कि दीमक को मारने के लिए किसान रसायनों का प्रयोग या तो सुबह जल्दी करें या फिर दोपहर बाद करें। दीमक से प्रभावित पौधों या टहनियों को अच्छे से खुरचने के बाद किसान दीमक से प्रभावित जगह पर 1.5 प्रतिशत वाले मैलाथियान दवा का छिड़काव करें। इसके अलावे किसान प्रति लीटर पानी में 4 एमएल क्लोरपायरीफॉस मिलाकर पेड़ो के जड़ों में डालें साथ ही साथ प्रति लीटर पानी में 1 एमएल मोनोक्रोटोफोस मिलाकर जड़ों के समीप स्थित मिट्टी को अच्छे से भिंगोये। किसान प्रति लीटर पानी में 5 एमएल इमिडाक्लोप्रिड 20 ईसी भी मिलाकर छिड़काव करते हुए दीमक से निजात पा सकते है।दीमक से बचाव के लिए किसान प्रति लीटर पानी में 10 ग्राम बिवेरिया बेसियाना दवा भी मिलाकर छिड़काव कर सकते हैं।

Dainik Bhaskar 19-05-2025

पूसा के उमा पांडेय कॉलेज में आयोजित हुआ रोजगार मेला

पूसा . स्थानीय उमा पांडेय कॉलेज के सभागार में आगा खान रूरल सपोर्ट प्रोग्राम भारत और इन्फोसिस फाउंडेशन के सहयोग से रोजगार मेले का आयोजन किया गया. इस मेले में 90 उम्मीदवारों ने भाग लिया. इसमें से 25 उम्मीदवारों का चयन टाटा मोटर्स, साणंद, गुजरात में, 10 उम्मीदवारों का चयन सुजुकी मोटर्स में और 15 उम्मीदवारों का चयन फ्यूजन माइक्रोफाइनेंस में हुआ. इन्हें टाटा और मारुति द्वारा तकनीकी आईटीआई और डिप्लोमा डिग्री भी प्रदान की जायेगी. उद्घाटन कॉलेज के प्राचार्य डॉ. भवेश शांडिल्य ने किया. मौके पर महमदपुर देवपार के सरपंच मनीष कुमार, संस्था के अधिकारी रजनी रंजन कौशल, प्लेसमेंट अधिकारी कोमल रानी, ब्लॉक प्रबंधक अभिषेक कुमार, युवा जंक्शन पूसा केंद्र प्रबंधक शालिनी प्रिया और ट्रेनर कल्याण, पूजा, मुन्नी आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, May 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/682b8115dc0759a2cb5391

भास्कर दैनिक जागरण - 20/5/25 P-16

कृषि • बीजों को उपचारित कर बुआई करने से कीट व रोगों के लगने की आशंका कम

बुआई और रोपाई से पूर्व बीजों को संशोधित व उपचारित करना जरूरी

भास्कर न्यूज| पूसा

खरीफ फसलों की रोपाई और बुआई का समय धीरे-धीरे अब नजदीक आ रहा है। बिहार के किसान किसी भी फसल की बुआई और रोपाई से पूर्व फसल के बीजों को संशोधित और उपचारित जरूर करें। बीजों को उपचारित कर बुआई करने से जहां फसल में कीट व रोगों के लगने की संभावना काफी कम हो जाती है। वहीं बीजोपचार कर किसान फसलों से अधिक पैदावार और गुणवत्तापूर्ण उत्पाद भी प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की विषय वस्तु .विशेषज्ञ (फसल उत्पादन) भारती उपाध्याय ने दी है। उन्होंने कहा कि वैसे किसान जो प्रत्येक सीजन में फसलों के नए बीज को खरीदकर बुआई करते है तथा वैसे किसान जो एक साल बीज खरीदते है तथा उसे घर पर ही अच्छे से रखकर दो सालों तक उस बीज से ही बुआई करते रहते है बीजोपचार दोनों के लिए अत्यंत ही जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि किसान किसी भी बीज को सबसे पहले उसकी अच्छी तरह से साफ-सफाई कर लें। इसके बाद बीजों से छोटे एवं टूटे हुए बीजों को अलग कर साफ व बड़े आकार के बीजों को बुआई के लिए चुनें। बुआई से पहले बीज को किसी भी अच्छे फफूंदनाशक कीटनाशक रसायन से उपचारित करें तत्पश्चात ही उसकी बुआई खेतों में करें। उन्होंने कहा कि किसान फसलों की बुआई खेतों में करने से पूर्व फसलों को कीट व रोगों के प्रकोप से बचाने के लिए बुआई से पहले भूमि की जांच भी अवश्य करायें तथा उसके बाद ही जरूरत के अनुरूप उर्वरक और रसायनों का प्रयोग करें। उन्होंने बताया कि किसान बीज के उपचार के लिए ट्राईकोडर्मा हारजेनियम नामक दवाई की 4 से 6 ग्राम मात्रा अथवा कार्बेंडाजाइम नामक दवाई की 2 से 2.5 ग्राम मात्रा अथवा थीरम दवाई की 2 ग्राम मात्रा को पानी में घोलकर प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज को उपचारित करने के बाद उसकी बुवाई करें। उन्होंने बताया कि बीज को उपचारित करने से बीज जमीन में सुरक्षित रहते हैं। बीजोपचार से बीज के चारों ओर एक तरह का रक्षक लेप चढ़ जाता है जो बीज को कवकों के आक्रमण से सुरक्षित रखता है। इससे बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ जाती है।

अपने खेत से तैयार बीजों के रख-रखाव पर दें विशेष ध्यान

पूसा में उपचारित किए जा रहे बीज।

किसान बीज उपचार के दौरान बरतें सावधानी, ऐसे बीज को खुली धूप में न सुखाएं, बच्चों से रखें दूर

पूसा | कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसानों को बीज के उपचार के दौरान कई तरह के सावधानियों को बरतने की आवश्यकता होती है। किसान बीजोपचार के लिए खरीदे जाने वाले रासायनिक दवा के एक्सपायर होने की अंतिम तिथि अवश्य देखकर ही दवा खरीदें अन्यथा दवा काम नहीं करेगी। रोग के अनुसार ही संबंधित रसायन का चयन करें। रसायन का प्रयोग संतुलित मात्रा में ही करें। कम या अधिक मात्रा में रसायन का प्रयोग बिल्कुल नहीं करें। बीजोपचार के बाद उपचारित बीज को कभी भी खुली धूप में नहीं सुखाएं। उपचारित बीज को हमेशा छायादार स्थान पर ही सुखाना चाहिए। बीजोपचार के बाद उपचारित बीज को 4 घंटे के अंदर ही बुआई कर देना चाहिए। बीज शोधन के समय हाथ में दस्ताने तथा चेहरे पर साफ कपड़ा बांधना चाहिए। बीज शोधन के पश्चात हाथ-पांव व चेहरा साबुन से भली-भांति धोना चाहिए।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 21 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में हल्के बादल देखे जा सकते हैं। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी का कहना है कि इस अवधि में मौसम शुष्क रहेगा लेकिन एक-दो दिनों में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
20 मई	31.0	23.0
21 मई	32.0	23.0
	दरभंगा	
20 मई	32.0	23.0
21 मई	32.0	23.5
	पटना	
20 मई	35.0	25.0
21 मई	35.0	25.0

डिग्री सेल्सियस में

पूसा में बनेगा गन्ना का अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च सेंटर : कृष्ण नंदन पासवान

ऑनलाइन लाइसेंसिंग पोर्टल का हुआ शुभारंभ

संवाददाता,पटना

पूसा में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर का गन्ना शोध संस्थान बनाया जाएगा. इसकी स्थापना को लेकर विभागीय स्तर पर कवायद तेज कर दी गयी है. यह जानकारी मंगलवार को गन्ना उद्योग मंत्री कृष्ण नंदन पासवान ने विकास भवन सचिवालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कही. इस मौके पर उन्होंने ऑनलाइन लाइसेंसिंग पोर्टल का शुभारंभ किया. मौके पर गन्ना उद्योग मंत्री पासवान ने बताया कि इस नये एप के जरिये किसानों को गन्ना की खेती से जुड़ी कई महत्वपूर्ण जानकारी दी जायेंगी.

किसानों को उन्नत खेती के गुर बताए जाएंगे. उन्होंने कहा कि आने वाले समय में हमारा उद्देश्य रहेगा कि गन्ना किसानों को उच्च गुणवत्ता का बीज और यंत्र मिले.

प्रभात खबर
Wednesday, May 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/682cd9a0ba51941685188fc4

विवि का न्यू शॉपिंग कॉम्प्लैक्स रहा बंद

दुकान बंद कर विरोध जताते दुकानदार.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित न्यू शॉपिंग कंप्लैक्स की सभी दुकानें विश्वविद्यालय प्रशासन के रवैया के कारण हड़ताल पर रहे. परिसर की दर्जनों दुकानें बंद होने से आमजनों एवं विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं पदाधिकारियों को भी काफी परेशानी उठानी पड़ी. क्योंकि विश्वविद्यालय परिसर में जरूरत की समान सभी इसी परिसर में उपलब्ध रहती है. दुकानदारों का कहना है कि विश्वविद्यालय के द्वारा पूर्व में एग्रीमेंट के तहत 2805 रुपए लगभग लिये जाते थे. वहीं 3 वर्षों बाद 10 प्रतिशत बढ़कर उसे 3086 रुपये के आसपास कर दिया गया. अब विश्वविद्यालय प्रशासन का कहना है कि पिछले एग्रीमेंट को तोड़कर नये सिरे से एग्रीमेंट बनाये जायेंगे. इसमें 65 प्रतिशत किराया बढ़ाया गया जो अब एक दुकान का 5100 रुपये किराया हो जाता है. दुकानदारों का कहना है कि पुराने एग्रीमेंट को तोड़ना और नये सिरे से विश्वविद्यालय प्रशासन के द्वारा एग्रीमेंट करने की बात कहा जाना यह कतई नियमानुकूल नहीं है. दुकानदारों का यह भी बताना है कि पूसा के नगर निगम क्षेत्र ग्रामीण में 8 रुपए प्रति स्क्वायर फुट एवं शहरी क्षेत्र में 15 रुपये स्क्वायर फुट किराया लिया जाता है. जबकि यहां अब 30 रुपया प्रति स्क्वायर फीट भारा वसूली की जाती है. नगर निगम के शहरी क्षेत्र से दोगुनी किराया दुकानदारों से वसूल कर रही है. मौके पर सहदेव दास, सत्येंद्र राय, अर्जुन ठाकुर आदि दुकानदारों ने विवि प्रशासन के खिलाफ रोषपूर्ण प्रदर्शन किया.

प्रभात खबर
Wednesday, May 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/682cd9a0ba51941685188fcd

दैनिक जागरण, दि०- 21/05/2025, पृ०सं०- 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 25 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में वर्तमान मौसमीय परिस्थितियों के कारण अभी भी वर्षा की संभावना बनी रहेगी। जिसके चलते अधिकांश जिलों में हल्की वर्षा होने की संभावना है तथा कुछ जिलों में मध्यम वर्षा हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
21 मई	33.0	23.5
22 मई	33.8	23.5
	दरभंगा	
21 मई	33.8	23.5
22 मई	33.8	24.0
	पटना	
21 मई	35.0	24.0
22 मई	35.0	24.0

डिग्री सेल्सियस में

मक्के की फसल के कटनी, दौनी व भंडारन में सावधानी बरते किसान : डॉ सत्तार

समस्तीपुर (एसएनबी)। अगले पांच दिनों में वर्षा की संभावना को देखते हुए तैयार मक्के के फसल की कटनी, दौनी तथा दानो को सुखाने के कार्य में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। सब्जी आदि फसलो पर कीटनाशकों का छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम वैज्ञानिक सह ग्रामीण मौसम सेवा के नोडल पदाधिकारी डॉ सत्तार ने मौसम पुर्वानुमान के मद्देनजर किसान भाईयों केलिए सलाह व सुझाव जारी करते हुए उक्त बातें कही। उन्होंने मौसम को देखते हुए जारी अपने सुझाव में बताया है कि किसान भाई लम्बी अवधि वाले धान की किस्में जैसे राजश्री, राजेन्द्र मंसुरी, राजेन्द्र स्वेता, स्वर्णा, स्वर्णा सब-1 वी0पी0टी0-5204 एवं राजेंद्र कस्तूरी की नर्सरी 25 मई से लगा सकते है। नर्सरी के लिए खेत की तैयारी अभी से कर लें। स्वस्थ पौध के लिए नर्सरी में सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करे। नर्सरी में क्यारी की चौराई 1.25-1.5 मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार रखें।

Rashtriya Sahara 21-05-2025

अधिकांश जिलों में हल्की बारिश के आसार, हो सकती है कहीं-कहीं मध्यम वर्षा

समस्तीपुर । मौजूदा हालात में सुहाने मौसम का दौर बरकरार रहने की संभावना है। अधिकांश जिलों हल्की वर्षा तो कुछ जिलों में मध्यम वर्षा का अनुमान है। इस बाबत जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ग्रामीण .षि मौसम सेवा,एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 25 मई, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में वर्तमान मौसमीय परिस्तिथियाँ के कारण अभी वर्षा की संभावना बनी रहेगी। जिसके चलते अधिकांश जिलों में हल्की वर्षा होने की संभावना है तथा कुछ जिलों में मध्यम वर्षा भी हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 28 से 32 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 23 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 18 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है। कभी-कभी पछिया भी चलने की सम्भावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara 21-21-05-2025

कैंपस अलर्ट

प्राकृतिक खेती पर्यावरण व स्वास्थ्य को फायदेमंद : डा तिवारी

पूसा. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सभागार में फसल उत्पादन प्रशिक्षण के अंतर्गत प्राकृतिक खेती विषय पर जिले के कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया. अध्यक्षता करते हुए केंद्र प्रधान डा आरके तिवारी ने कहा कि प्राकृतिक खेती का किसानों के लिए बहुत महत्व है. यह न केवल उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाता है बल्कि पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है. प्राकृतिक खेती में, किसान रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और खर-पतवारनाशकों का उपयोग नहीं करते हैं. इसके बजाय वे प्राकृतिक तरीकों से मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं. कीटों और बीमारियों से फसलों की रक्षा करते हैं. प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना जैसे कार्यक्रम किसानों को इस तकनीक को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं. मौके पर विशेषज्ञ भारती उपाध्याय, सुमित कुमार सिंह आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Thursday, May 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/682e2422e80fa54ad81efa6

सामाजिक सेवा सम्मान से डा राजेश सम्मानित

पूसा. डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में सहायक के पद पर कार्यरत डा राजेश कुमार को सामाजिक सम्मान से नवाजा गया है. वे मूल रुप से मुजफ्फरपुर जिले के बंदरा प्रखंड अंतर्गत हसननगर वसुआरी उर्फ तेपरी के निवासी हैं. उन्हें सामाजिक सेवा में महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित राजाराम मोहन राय सामाजिक सेवा सम्मान 2025 ब्रह्म समाज के संस्थापक राजाराम मोहन राय की 253 वीं जयंती पर भारत सरकार, लघु उद्योग मंत्रालय से मान्यता प्राप्त भावना कला एवं साहित्य फाउंडेशन जयपुर,राजस्थान द्वारा अलंकृत किया गया है.

प्रभात खबर
Thursday, May 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/682e2422e00fa54ad81efa6a

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 25 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में वर्तमान मौसमीय परिस्थितियों के कारण अभी भी वर्षा की संभावना बनी रहेगी। जिसके चलते अधिकांश जिलों में हल्की वर्षा होने की संभावना है तथा कुछ जिलों में मध्यम वर्षा हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
22 मई	31.0	23.0
23 मई	32.0	23.0
दरभंगा		
22 मई	32.0	23.5
23 मई	32.0	24.0
पटना		
22 मई	33.5	24.5
23 मई	33.5	24.5

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 22-05-2025

एनसीसी कैडेटों को ड्रोन उड़ाना सिखाया

बुधवार को जवाहर नवोदय विद्यालय बिरौली में ड्रोन संचालन की जानकारी देते प्रशिक्षक।

पूसा,निज संवाददाता। पीएमश्री जवाहर नवोदय विद्यालय, बिरौली में 12 बिहार बटालियन के तत्वाधान में जारी 10 दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर के 6ठे दिन बुधवार को एनसीसी कैडेटो के लिए आधुनिक ड्रोन टेक्नोलॉजी पर विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान ड्रोनीयर एविगेशन प्राइवेट लिमिटेड के प्रतिनिधि अमृतेश राजवीर रंजन के नेतृत्व में टीम ने एनसीसी कैडेटो को ड्रोन की कार्यप्रणाली, उसके प्रकार, उपयोग और कृषि व सुरक्षा में इसकी उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

मौके पर लाइव ड्रोन फ्लाइंग डेमो ने कार्यक्रम को और भी रोचक बना दिया। मौके पर वक्ताओं ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य युवाओं को उभरती हुई तकनीकों से जोड़ना और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना है। मौके पर प्रशिक्षक टीम ने कहा कि बिहार में ड्रोन तकनीक से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने, ड्रोन पायलट व प्रशिक्षक बनाने की दिशा में वह डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। यह रक्षा, सर्वेक्षण एवं कृषि क्षेत्र में अहम भूमिका निभा रहा है। कमान्डेंट सीओ कर्नल रवीन्द्र रावत के मार्गदर्शन में सुबेदार मेजर केबी थापा, ले.डॉ.धीरज कुमार पाण्डेय, फस्ट ऑफिसर विष्णु प्रिया व डॉ.कमल किशोर, थर्ड आफिसर अवधेश कुमार झा व राजेश रंजन की देखरेख में एनसीसी कैडेटो को विशेष प्रशिक्षण शिविर आयोजित की जा रही है।

Hindustan 22-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 25 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार के जिलों में वर्तमान मौसमीय परिस्थितियों के कारण अभी भी वर्षा की संभावना बनी रहेगी। जिसके चलते अधिकांश जिलों में हल्की वर्षा होने की संभावना है तथा कुछ जिलों में मध्यम वर्षा हो सकती है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	बगहा	
23 मई	31.0	23.0
24 मई	32.0	23.0
	बेतिया	
23 मई	32.0	23.5
24 मई	32.0	24.0
	पटना	
23 मई	33.5	24.5
24 मई	33.5	24.5

डिग्री सेल्सियस में

विवि की सुरक्षा व्यवस्था राम भरोसे, सुरक्षा कर्मियों व पुलिस के नाक के नीचे से वैज्ञानिक की मोटरसाइकिल गायब

पूसा। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में गुरूवार को सनसनी फैल गई जब लोगों को ज्ञात हुआ कि न्यू बॉयज हॉस्टल परिसर से वानिकी विभाग में कार्यरत डॉक्टर हेमंत कुमार की मोटरसाइकिल हिरो एसपेलेंडर बुधवार की शाम चोरी हो गई। इसको लेकर पीडित ने स्थानीय थाना में आवेदन देते हुए कहा है कि हॉस्टल परिसर में यूपी 70 सीएच 4630 मोटरसाइकिल खड़ा कर मेस में भोजन करने गया था। जब भोजन कर लौटा तो बाइक उस जगह से गायब थी। जिसकी सुचना विवि प्रशासन को भी दे दी है। यह घटना उल्लेखनीय इसलिए भी है कि विश्वविद्यालय सुरक्षा के नाम पर प्रतिवर्ष करोडों रूपये खर्च करती है। जिसमें चप्पे-चप्पे पर सुरक्षा गार्ड और सीसी कैमरे का खर्च शामिल है। गौरतलब यह भी है कि घटनास्थल से स्थानीय थाना की दुरी महज 700 से 800 मीटर की है। इसके बावजूद परिसर से चोरों ने मोटरसाइकिल गायब करने का दुस्साहस कर दिया यह विवि के सुरक्षा तंत्र के साथ-साथ पुलिस की चौकसी पर सवालिया निशान खडे करता है।

Rashtriya Sahara 23-05-2025

वैज्ञानिक तरीके से करें मक्का की खेती, होगा मुनाफा

डॉ रंजू कुमारी
वरीय वैज्ञानिक
बी ए यू सबौर

डॉ अनिल कुमार
सिंह,वरीय वैज्ञानिक एंड
प्रधान,केवीके वैशाली

डॉ रजनीश सिंह
वैज्ञानिक
केवीके सरैया

मक्का ऐसी फसल है, जो अनाज और चारा दोनों के लिए इस्तेमाल की जाती है. मक्का को 'अनाज की रानी' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि बाकी फसलों के मुकाबले इसकी पैदावार सब से ज्यादा है. इससे भोजन पदार्थ भी तैयार किए जाते हैं जैसे कि स्टार्च, कॉर्न फ्लैक्स और गुलूकोज आदि. इसका इस्तेमाल पॉल्ट्री फीड के तौर पर भी किया जाता है. मक्के की फसल हर तरह की मिट्टी में उगाई जा सकती है. इस फसल को पकने में तीन महीने का समय लगता है, जो कि धान की फसल के मुकाबले बहुत कम है. धान की फसल पकने के लिए 145 दिनों का समय लेती है.

पहाड़ी क्षेत्रों के लिए प्रजातियां

संकर प्रजातियां : विवेक संकर मक्का 23, विवेक क्यूपीएम 9, प्रकाश.
संकुल प्रजातियां : विवेक संकुल मक्का 11, विवेक संकुल मक्का 31, विवेक संकुल मक्का 35, वीएल अंबर पॉपकॉर्न.

मिट्टी का चुनाव

मक्के की फसल लगाने के लिए उपजाऊ, अच्छे जल निकास वाली, मैरा और लाल मिट्टी जिसमें नाइट्रोजन की उचित मात्रा हो, जरूरी है. मक्की रेतली से लेकर भारी हर तरह की ज़मीनों में उगाई जा सकती हैं समतल ज़मीनें मक्की के लिए बहुत अनुकूल हैं, पर कई पहाड़ी इलाकों में भी यह फसल उगाई जाती है. अधिक पैदावार लेने के लिए मिट्टी में जैविक तत्वों की अधिक मात्रा पी एच 5.5-7.5 और अधिक पानी रोककर रखने में सक्षम होनी चाहिए. बहुत ज्यादा भारी ज़मीनें भी इस फसल के लिए अच्छी नहीं मानी जाती.

जलवायु : मक्के की खेती तमाम देशों में कई तरह की जलवायु में की जाती है. वैसे यह गरम जलवायु की फसल है. इस के साथ ही आजकल विभिन्न प्रकार की जलवायु में उगाने योग्य मक्के की अनेक किस्में भी विकसित की जा चुकी हैं. इसे शीत और उष्ण कटिबंध दोनों ही तरह की जलवायु के स्थानों पर उगाया जा रहा है.

मैदानी इलाकों के लिए संकर प्रजातियां

- **लंबी अवधि** : एचक्यूपीएम 1, एचक्यूपीएम 4, एचक्यूपीएम 5, एचएम 11.
- **मध्यम अवधि** : एचएम 10, एचएम 4.
- **जल्दी पकने वाली** : डीएचएम 107, प्रकाश.
- **अतिशीघ्र अवधि** : विवेक संकर मक्का 17, विवेक संकर मक्का 21, विवेक संकर मक्का 25, विवेक संकर मक्का 33, विवेक संकर मक्का 39, विवेक क्यूपीएम 9.

मैदानी इलाकों के लिए संकुल प्रजातियां

- **मध्यम अवधि** : प्रताप मक्का 4, बिन औरेंज स्वीट कार्न, बजोरा मक्का, तरुण, श्वेता.
- **शीघ्र अवधि** : विवेक संकुल मक्का 11, नर्मदा, मोती, गौरव, कंचन, सूर्या, नवीन.
- **अतिशीघ्र अवधि** : बीएल बेबी कार्न 1, प्रताप, कचंन 2.

बीजों की मात्रा

मक्के की फसल की बोआई के लिए हमेशा प्रमाणित बीजों का ही इस्तेमाल करना चाहिए. मक्के की संकुल किस्मों के लिए 14-16 किलोग्राम, संकर किस्मों के लिए 18-20 किलोग्राम और दाने की फसल के लिए 40-45 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से इस्तेमाल करें.

बोआई का समय

खरीफ की फसल की बोआई मध्य जून से जुलाई तक कर लेना चाहिए. रबी की फसल की बोआई सितंबर के अंत से मध्य नवंबर तक किसी भी समय की जा सकती है. फसल की बोआई 60 सेंटीमीटर दूर बनी कतारों में 20-30 सेंटीमीटर की दूरी पर की जाती है.

बीज उपचार

रोगों से बचाव के लिए बीजों को थीरम या कार्बेंडाजिम से 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करना चाहिए. प्ररोह बेधक कीट के प्रकोप से बचने के लिए बीजों को 5 मिलीलीटर इमिडाक्लोप्रिड से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए.

बोआई की विधि

किसान मक्के की बोआई बिखेर कर करते हैं. इस से कम उपज प्राप्त होती है. लिहाजा बोआई लाइन में ही करनी चाहिए और लाइन से लाइन की दूरी 60 से 75 सैंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सैंटीमीटर रखनी चाहिए. इस तरह बोआई करने से एक हेक्टेयर रकबे में 66000 से 83000 पौधों की संख्या प्राप्त हो जाती है. मेड़ों पर बोआई कर के सिंचाई की जरूरत को 20-30 फीसदी कम किया जा सकता है. इस विधि में भी मेंड़ की दूरी 20-25 सैंटीमीटर रखनी चाहिए.

उर्वरकों की मात्रा व इस्तेमाल का तरीका

उर्वरकों का इस्तेमाल मिट्टी की जांच के आधार पर करना चाहिए. वैसे तो आमतौर पर मक्के के लिए 10 टन गोबर की खाद, 120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस, 40 किलोग्राम पोटाश व 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से इस्तेमाल करना चाहिए. सड़ी हुई गोबर की खाद को बोआई से 10 से 15 दिनों पहले खेत में डाल कर मिट्टी में मिला देना चाहिए. फास्फोरस, पोटाश व जिंक सल्फेट की पूरी मात्रा बोआई के समय कूंड़ों में इस्तेमाल करना चाहिए. नाइट्रोजन का इस्तेमाल 5 भागों में निम्न अनुसार करने से अधिक उपज हासिल होती हैं:

- 10 फीसदी बोआई के समय.
- 20 फीसदी जब पौधे में 4 पत्तियां आ जाएं.
- 30 फीसदी जब पौधे में 8 पत्तियां आ जाएं.
- 30 फीसदी नरमंजरी निकलते समय.
- 10 फीसदी दानों के भरने की अवस्था में.

यांत्रिक विधि

शाकनाशी पदार्थों के न होने पर मक्के की फसल में 2-3 बार निराईगुड़ाई करना जरूरी होता है. इस में पहली निराई बोने के 15 दिन बाद, दूसरी 25-30 दिन बाद और तीसरी 40-45 दिन बाद की जानी चाहिए. दूसरी निराई के समय कमजोर पौधों की छंटनी भी की जाती है. फसल के घुटनों तक बढ़ जाने पर निराईगुड़ाई नहीं करनी चाहिए. निराई खुरपी, हैंडहो व बैलों या ट्रैक्टर चालित हो या कल्टीवेटर से की जाती है, पर ध्यान रखना चाहिए कि गुड़ाई 4-5 सैंटीमीटर से अधिक गहरी न की जाए.

सिंचाई

मक्के की बढ़िया उपज के लिए दूसरी फसलों के मुकाबले ज्यादा पानी लगता है. मक्के में बढ़वार के 25 से 30 दिनों व मादा फूल आते समय भुट्टे बनने की दशा में किसी भी हाल में पानी की कमी नहीं होनी चाहिए. खरीफ मौसम में बारिश की स्थिति में जरूरतानुसार 2-3 सिंचाई करना जरूरी है. यदि 6 बार सिंचाई की सुविधा हो तो 4-5 पत्ती अवस्था, पौध घुटनों तक आने से पहले व तुरंत बाद, नरमंजरी निकलते समय, दाना भरते समय और दाना सख्त होते समय सिंचाई करना फायदेमंद रहता है. मक्के के खेत में जलभराव की स्थिति में फसल को भारी नुकसान होता है. लिहाजा, खेत में जलनिकासी का इंतजाम जरूरी है.

निराई, गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण

खरपतवारों को बढ़ने से पहले (बोने के 5-6 हफ्ते तक) नष्ट कर के खेत को खरपतवार रहित रखना जरूरी होता है. प्रयोग के आधार पर पाया गया है कि फसल की बोआई के 45 दिनों तक खेत को खरपतवारों से रहित रखने से पूरे जीवनकाल तक खरपतवारों को नष्ट करने के समान ही उपज प्राप्त होती है.

कटाई

मक्के की विभिन्न प्रजातियों की फसल बोआई के 80-115 दिन बाद पक कर तैयार हो जाती है. साधारणतया मक्के की फसल निषेचन के 40-50 दिन बाद पक जाती है. लिहाजा, इसके बाद फसल के सूखने का इंतजार नहीं करें. भुट्टे के लिए फसल की कटाई बोआई के 75-90 दिनों बाद की जाती है. इस अवस्था में पौधे में 30-35 फीसदी के आसपास नमी होनी चाहिए.

उपज

मक्के की फसल की औसतन उपज 80 से 100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है. खरीफ मक्के के मुकाबले रबी मक्के से ज्यादा उपज मिलती ?है, क्योंकि खरीफ के मुकाबले रबी में खेत की तैयारी अच्छी हो जाती है.

भंडारण

गहाई के बाद दानों को धूप में अच्छी तरह इतना सुखाना चाहिए कि नमी 12 फीसदी से ज्यादा न हो. तब इसे भंडारित करना चाहिए. सुरक्षित भंडारण के लिए 1 ईडीबी एंपुल प्रति क्विंटल के हिसाब से रखना चाहिए. एंपुल को चिमटी की सहायता से टंकी की आधी गहराई तक ले जा कर फोड़ देना चाहिए और ढक्कन बंद कर देना चाहिए.

रासायनिक विधि

मक्के की फसल में रसायनों के इस्तेमाल से खरपतवार नियंत्रण के लिए टैफाजीन 2.5 किलोग्राम, सिमैजीन 2.5 किलोग्राम, मेटाबुट्रीन 1.2 किलोग्राम, एट्राजीन 1.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 1000 लीटर पानी के साथ घोल कर बोआई के फौरन बाद छिड़काव करना चाहिए. छिड़काव के समय जमीन में नमी रहने पर इन रसायनों की ताकत बढ़ जाती है. वैसे ये रसायन पानी में कम घुलनशील होते हैं और इन के पानी के साथ बह कर बेकार होने की उम्मीद कम होती है, पर इन के इस्तेमाल के बाद खेत में निराईगुड़ाई नहीं करनी चाहिए.

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 28 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस दौरान आसमान में बादल छाए रहेंगे। उत्तर बिहार के जिलों में वर्षा हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 24-28 डिग्री सेल्सियस रहन सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
24 मई	33.2	22.1
25 मई	33.2	22.5
दरभंगा		
24 मई	33.2	22.5
25 मई	33.5	22.5
पटना		
24 मई	35.0	23.0
25 मई	35.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

जिले में हल्की बारिश की रहेगी संभावना

संस, जागरण • पूसा : जिले के आसमान में बादल छाए रहने के साथ वर्षा की संभावना बनी रहेगी। मौसम वैज्ञानिक डा. ए सत्तार ने कहा, उत्तर बिहार में अधिकतर स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। 25 व 26 जून के आसपास कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा की संभावना है। अगले चार दिनों के पूर्वानुमान अवधि में 32 से 34 डिग्री व न्यूनतम तापमान 24 से 28 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

Dainik Jagran 24-05-2025

अधिकतर स्थानों पर हल्की बारिश की संभावना बरकरार
कहीं-कहीं हो सकती है मध्यम वर्षा

समस्तीपुर । अभी अगले 5 दिनों में मौसम की नरमी बरकरार रहने की संभावना है। आसमान में सुरज के साथ अठकेलियां करते हल्के से मध्यम बादलों और हल्की से मध्यम वर्षा की संभावना के बीच धूप-छांव का खेल चलता रहेगा। इस बीच जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण .षि मौसम सेवा,एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 28 मई, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते है। उत्तर बिहार में अभी भी वर्षा की सम्भावना बनी हुई है। जिसके कारण अधिकतर स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। 25-26 मई के आसपास कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा भी होने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम तापमान 24 से 28 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 18 से 25 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है। इस अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara 24-05-2025

लगातार मौसम में बदलाव दिख रहा • कभी धूप और उमस तो कभी बारिश के कारण परेशान हो रहे लोग

24 घंटे में 11.2 एमएम बारिश हुई, आगे भी वर्षा की संभावना

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

इन दिनों लगातार मौसम के बदलाव से कभी बारिश और तेज धूप फिर उमस वाली गर्मी से लोग परेशान हो रहे हैं। इसमें खासकर छोटे बच्चे को बदलते में मौसम में सर्दी-खासी व बुखार की शिकायतें मिलती है। जिले में पिछले 24 घंटे में 11.2 एमएम बारिश रिकॉर्ड की गयी। इसमें जिले के कुछ इलाकों में जहां जल निकासी की व्यवस्था नहीं हैं वहां हल्की बारिश के बाद जलजमाव हो गया। इससे लोगों को आने-जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। वहीं उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रह सकते हैं। उत्तर बिहार में अभी भी वर्षा की सम्भावना बनी हुई है। इसके कारण अधिकतर स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है। 25-26 मई के आसपास कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा भी होने की संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 24-28 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूसा मौसम वैज्ञानिक के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 18 से 25 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है। वहीं सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है।

धूप और उमस वाली गर्मी से बचाव कर बच्चे को ले जाती महिला।

किसान कृषि कार्यों में सतर्कता बरतें, निर्देश का पालन करना जरूरी है

पूर्वानुमानित अवधि में वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान कृषि कार्यों में सतर्कता बरते। मक्का की कटनी, दौनी एवं दाने सुखाने का कार्य में सावधानी बरतें। मूंग की तैयार फसल की तुड़ाई वर्षा की सम्भावना को देखते हुए सावधानी पूर्वक करें। खेत की जुताई में 10 से 15 टन गोबर की सड़ी खाद प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करे। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 30 किलो नेत्रजन, 60 किलो सल्फर एवं 50 किलो पोटाश का व्यवहार करें। उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित मक्का की किस्में जैसे देवकी, शक्तिमान 1, शक्तिमान 2 शक्तिमान-5, राजेन्द्र संकर मक्का-3, गंगा-11 है। लंबी अवधि वाली धान की प्रजातियां जैसे राजश्री, राजेन्द्र मंसूरी राजेन्द्र स्वेता, स्वर्णा, स्वर्णा सबट्टा, वी.पी.टी.दृ5204 तथा राजेन्द्र कस्तूरी आदि की नर्सरी की बुवाई 25 मई से प्रारंभ की जा सकती है।

भिंडी की फसल में कीट की करें निगरानी, यह जरूरी

भिंडी की फसल में फल एवं प्ररोह वेधक कीट की निगरानी करें। इसके पिल्लू भिंडी फलों के अन्दर छेद बनाकर उसके अन्दर घुसकर फलों को खाते हैं तथा इसे पूरी तरह नष्ट कर देते हैं। इसकी रोक थाम के लिए सर्वप्रथम प्रभावित फलों को तोड़कर मिट्टी के अन्दर दबा दें। अधिक नुकसान होने पर डाईमेथोएट 30 ईसी दवा का 1.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ रहने तथा हवा की गति सामान्य रहने पर ही करें। लत्तर वाली सब्जियों में फल मक्खी कीट की निगरानी करें।

उत्तर बिहार में अभी भी वर्षा की सम्भावना बनी हुई है। इसके कारण अधिकतर स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है।

- डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी, मौसम विभाग पूसा।

Dainik Bhaskar 24-05-2025

लीची व शहद के निर्यात को लेकर कई तरह के मानकों की जरूरत : डॉ प्रभात

संबोधित करते आयुक्त डॉ प्रभात कुमार .

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में लीची की विविधता व जीआईं आधारित लीची शहद के विषय पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई. जिसका शुभारंभ उपस्थित मुख्य अतिथि और विवि के कुलपति ने किया. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भारत सरकार के बागवानी आयुक्त डॉ. प्रभात कुमार ने अपनी बातों को रखते हुए कहा कि बिहार में लीची का काफी महत्वपूर्ण फलों में से एक है. विश्वविद्यालय लीची और लीची के शहद के विविधता से जुड़े काफी कार्य कर रहा है. वहीं जीआईं टैगिंग का भी कार्य जारी है. उन्होंने कहा कि लीची व शहद के निर्यात को लेकर कई तरह के मानकों की जरूरत होती है. इसलिए बिहार के लीची व शहद उत्पादक किसानों को जागरूक करने की जरूरत है.

उन्होंने कहा कि लीची के रोग की पहचान एवं उसके स्वाद एवं सुगंधों की पहचान को लेकर भी कार्य किया जाना चाहिये. उन्होंने ने कहा कि राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड विश्वविद्यालय के साथ मिलकर इससे जुड़े कार्य को कर रहा है. वहीं ऐसा देखा जा रहा है कि रानी मधुमक्खी के आकार एवं शक्ति में ह्रास हुआ है. जिससे शहद का उत्पादन प्रभावित हुआ है. इससे जुड़े शोध वैज्ञानिकों को करना चाहिये. उन्होंने कहा कि जीआईं टैगिंग के फायदा के बारे में किसानों को जागरूक किया जाना चाहिये.

जिससे लीची एवं लीची के शहद उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा. मुख्य अतिथि ने कहा कि उत्पादकता में विज्ञान की भूमिका अहम होती है. उन्होंने ने कहा कि उत्पाद के विपणन के लिए उपभोक्ताओं को जागरूक करने की जरूरत है. उपस्थित विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से जीआईं टैगिंग पर कार्य किया जा रहा है. वहीं लीची काफी कम समय में ख़राब हो जाता है, जिसके कारण लोगों को इसका स्वाद अल्प अवधि तक मिल पाता है. इसको लेकर विवि के वैज्ञानिक ऐसा शोध कर रहे हैं कि तुरई के एक माह तक लीची को सुरक्षित रखा जा सके. जिसके प्रत्येक पहलुओं का भी ख्याल रखा जा रहा है. उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि एआईं के माध्यम से लीची एवं लीची की शहद के गुणवत्ता मापने की कीट पर शोध करें. जिससे लीची व शहद उत्पादक किसानों को निर्यात में लाभ मिल सके. उन्होंने कहा कि दो दिवसीय सेमिनार में ऐसे बिंदु निकाल कर आएगी जिससे बिहार एवं भारत के लीची उत्पादक किसानों को लाभ मिलेगा. लीची अनुसंधान केन्द्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डॉ. विकास दास ने बगीचा के प्रबंधन व बाजार से जुड़ी अपनी बातों को रखा. निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय अधिष्ठाता सह निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने भी संबोधित किया. संचालन छात्रा शांभवी कुमारी एवं अभिषेक कुमार ने किया. वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मोहित शर्मा ने किया. मौके पर कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार, अधिष्ठाता डॉ. उषा सिंह, अधिष्ठाता डॉ. पीपी श्रीवास्तव, निदेशक शिक्षा डॉ. उमाकांत बेहरा, डॉ. कुमार राज्यवर्धन सहित कई वैज्ञानिक, शिक्षक छात्र छात्रायें मौजूद थे.

प्रभात खबर
Sunday, May 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6832127319c872f281e106ec

भास्कर 25/5/25 पेज 19

आयोजन • लीची की विविधता और जीआई आधारित लीची शहद के विषय पर संगोष्ठी

लीची के रोग एवं स्वाद व सुगंधों की पहचान के लिए भी करें शोध

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कृषि विवि के विद्यापति सभागार में कार्यक्रम

संगोष्ठी में वैज्ञानिकों को संबोधित करते मुख्य अतिथि।

संगोष्ठी में मौजूद वैज्ञानिक।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में लीची की विविधता और जीआई आधारित लीची शहद के विषय पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन शनिवार को किया गया। संगोष्ठी का शुभारंभ उपस्थित मुख्य अतिथि भारत सरकार के बागवानी आयुक्त डॉ. प्रभात कुमार एवं पूसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर अपनी बातों को रखते हुए मुख्य अतिथि भारत सरकार के बागवानी आयुक्त डॉ. प्रभात कुमार ने कहा कि बिहार के लीची का काफी महत्व है। विश्वविद्यालय लीची और लीची शहद के विविधता के विषय पर काफी कार्य कर रहा है। लीची शहद को जीआई टैगिंग दिलाने की दिशा में भी कार्य जारी है। उन्होंने कहा कि लीचीं व लीची शहद के निर्यात को लेकर कई तरह के मानकों की जरूरत होती है। इसलिए बिहार के लीची व शहद उत्पादक किसानों को जागरूक करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि लीची के रोग की पहचान एवं उसके स्वाद एवं सुगंधों की पहचान को लेकर भी कार्य किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड विश्वविद्यालय के साथ मिलकर इससे जुड़े कार्य को कर रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा देखा जा रहा है कि रानी मधुमक्खी के आकार एवं शक्ति में ह्रास हुआ है। इससे शहद का उत्पादन प्रभावित हुआ है। रानी मधुमक्खी के आकार एवं शक्ति में हुए ह्रास पर भी शोध वैज्ञानिकों को करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जी आईं टैगिंग के फायदे के बारे में भी किसानों को जागरूक किया जाना चाहिए जिससे लीची एवं लीची शहद के उत्पादन को बढ़ावा मिले।

उत्पादकता में विज्ञान की भूमिका काफी अहम होती है : कुलपति

कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि उत्पादकता में विज्ञान की भूमिका काफी अहम होती है। उन्होंने ने कहा कि उत्पाद के विपणन के लिए उपभोक्ताओं को जागरूक करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से जी आईं टैगिंग पर कार्य किया जा रहा है। लीची काफी कम समय में खराब हो जाता है जिसके कारण लोगों को इसका स्वाद अल्प अवधि तक ही मिल पाता हैं। इसको लेकर भी विवि के वैज्ञानिक ऐसा शोध कर रहे हैं कि लीची तुड़ाई के एक माह तक लीची को सुरक्षित रखा जा सके। इस प्रक्रिया में प्रत्येक पहलुओं का ख्याल रखा जा रहा है। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि वे एआई तकनीक के माध्यम से लीची एवं लीची शहद के गुणवत्ता को मापने तथा लीची में लगने वाले कीटों पर भी शोध करे। इस तरह के शोध से लीची व शहद उत्पादक किसानों को निर्यात में लाभ मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि इस दो दिवसीय सेमिनार में ऐसे बिंदु निकलकर सामने आएंगे जिससे बिहार एवं भारत के लीची उत्पादक किसानों को काफी लाभ मिलेगा। लीची अनुसंधान केन्द्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डॉ.विकास दास ने लीची के बगीचा व लीची प्रबंधन व बाजार से जुड़े विषय पर अपनी बातों को रखा। निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय अधिष्ठाता सह निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। संचालन छात्रा शांभवी कुमारी एवं अभिषेक कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मोहित शर्मा ने किया। संगोष्ठी के दौरान विद्यापति सभागार के बाहरी परिसर में लीची महोत्सव के तहत छात्र व वैज्ञानिकों के लिए लीची खाने वाली प्रतियोगिता, लीची शहद व लीची से जुड़े अन्य उत्पादों का स्टॉल लगाया गया था। मुख्य अतिथि ने इस स्टॉल का विजिट कर लीची उत्पादों के बारे में विस्तार से जानकारी ली।

बिहार के लीची उत्पादक किसानों को जागरूक करने की जरूरत

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में लीची विविधता और शहद पर राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

संस, जागरण•पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में शनिवार को लीची विविधता और लीची शहद विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि भारत सरकार के बागवानी आयुक्त डा. प्रभात कुमार ने कहा कि बिहार की लीची का काफी महत्व है। विश्वविद्यालय लीची और लीची की शहद पर कार्य कर रहा है। जीआइ टैगिंग का भी कार्य जारी है। लीची व शहद के निर्यात को लेकर कई तरह के मानकों की जरूररत होती है। इसलिए यहां के किसानों को जागरूक होने की जरूरत है। लीची के रोग की पहचान व उसके स्वाद व सुगंधों की पहचान को लेकर भी कार्य किया जाना चाहिए। कहा कि रानी मधुमक्खी के आकार एवं शक्ति में ह्रास हुआ है। इससे शहद का उत्पादन प्रभावित हुआ है। इससे जुड़े शोध विज्ञानियों को करनी चाहिए।

कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय की ओर से जीआइ टैगिंग पर कार्य किया जा रहा है। विज्ञानी ऐसा शोध कर रहे हैं कि तुराई के एक माह तक लीची को सुरक्षित रखा जा सके। एआई माध्यम से लीची एवं लीची की शहद के गुणवत्ता मापने की कीट पर शोध करने की अपील की ताकि लीची व शहद उत्पादक किसानों को निर्यात में लाभ मिल सके।

प्रदर्शनी का अवलोकन करते मुख्य अतिथि व मौजूद अन्य • जागरण

लीची अनुसंधान केन्द्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डा. विकास दास ने बगीचा प्रबंधन व बाजार से जुड़ी अपनी बातों को रखा। निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह व स्नातकोत्तर महाविद्यालय अधिष्ठाता सह निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय ने भी संबोधित किया। संचालन छात्रा शांभवी कुमारी व अभिषेक कुमार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. मोहित शर्मा ने किया। मौके पर कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार, अधिष्ठाता डा. उषा सिंह, अधिष्ठाता डा. पीपी श्रीवास्तव, निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, डा. कुमार राज्यवर्धन सहित विज्ञानी, शिक्षक छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

Dainik Jagaran 25-05-2025

वैज्ञानिकों ने बताए उन्नत खेती के तरीके

संवाद सहयोगी, जागरण • शाहपुर पटोरी : भारतीय कृषि अनुसंधान के क्षेत्रीय केंद्र पूसा द्वारा पटोरी में शनिवार को अनुसूचित जाति के कृषकों एवं सब्जी उत्पादक किसानों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण देने के बाद उनके बीच निशुल्क बीज का वितरण भी किया गया। प्राथमिक सब्जी उत्पादक सहकारी समिति लिमिटेड के तत्वावधान में अनुसूचित जाति उप परियोजना अंतर्गत इस कार्यक्रम का समारोहपूर्वक संचालन किया गया। कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को उन्नत खेती के तरीके बताए। इस अवसर पर फसलों के संरक्षण के तरीके पर भी चर्चा की गई। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक सह अध्यक्ष डा. केके सिंह ने कार्यक्रम की शुरुआत की। कृषि वैज्ञानिक डा. सतीश नायक, मो. हसनैन, रंजीत राय, रमेश कुमार, सुशील कुमार आदि ने कार्यक्रम को संबोधित कर किसानों को परामर्श दिया। कार्यक्रम को भेजफेड़ के अध्यक्ष राधेश्याम सिंह, नगर परिषद अध्यक्ष प्रियंका सुमन, मुखिया प्रमिला देवी आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में 200 किसानों के बीच धान की उत्तम प्रजाति पूसा 44 तथा तथा पूसा सांबा 1850 के बीज का वितरण किया गया। डा. केके सिंह ने किसानों की आय दोगुनी करने और खेती को व्यवसाय के रूप में समुन्नत करने पर बल दिया।

प्राप्त बीज के साथ किसान • जागरण

Dainik Jagaran 25-05-2025

प्रयोगशाला के मंत्र से नवाचार का अंकुरण

पूर्णेंदु कुमार, जागरण

2019 से पांच वर्ष तक के लिए चला यह अभियान 2024 में समाप्त हुआ

- जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के तहत चयनित पांच गांवों में कृषि उपज में वृद्धि, आ रही समृद्धि
- डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय एवं बीसा का लैब टू लैंड कार्यक्रम हो रहा सफल

मोरवा के एक खेत में प्रत्यक्षण करते विज्ञानी व किसान • जागरण

पूसा (समस्तीपुर) : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय एवं बीसा (बोरलाग इंस्टीट्यूट आफ साऊथ एशिया) की ओर से जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित किसान के खेतों की उपज में वृद्धि हुई है। सतत प्रत्यक्षण-परीक्षण व जागरूकता के बाद किसानों के खेतों में यह समृद्धि मिली। विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में विकसित मंत्र से खेती के नवाचार का अंकुरण हो रहा है। इसके तहत तकनीक एवं जानकारी उपलब्ध कराई गई। वर्ष 2019 से पांच वर्ष तक के लिए चला यह अभियान 2024 में समाप्त हुआ। इस योजना के तहत जिले के पांच गांव चयनित किए गए। इसमें ताजपुर एवं मोरवा प्रखंड के गांव शामिल थे। इसमें ताजपुर के रामपुर महेशपुर एवं मोरवा के चकपहाड़, हरपुर भिंडी, चाको भिंडी गांव शामिल किए गए। इन चयनित गांवों में किसानों को खरीफ, रबी एवं गरमा मौसम के अलावा उत्पादन में भी पहले की तुलना में वृद्धि हुई।

लेजर लैंड लेवलर से 350 एकड़ का समतलीकरण: खरीफ के मौसम में 595 एकड़ जमीन में धान, मक्का, सोयाबीन, मोटे अनाज, ज्वार-बाजरा आदि लगाए गए। रबी मौसम में गेहूं, मक्का, आलू, जौ, मसूर, चना, खेसारी का प्रत्यक्षण किया गया। इन सभी फसलों में पूर्व से ज्यादा फसलों की उत्पादकता विज्ञानी तकनीक से की गई। लेजर लैंड लेवलर से 350 एकड़ में समतलीकरण किया गया। पांचों गांव में पानी की सामूहिक सिंचाई की व्यवस्था की गई। किसानों को पूर्व में 40 से 41 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन होता था। बाद में 45 से 46 क्विंटल उत्पादन हुआ। धान की उपज भी 97 से 98 क्विंटल की तुलना में 103 से 105 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हुआ।

कृषि यंत्रों से बोआई और कटाई ने भी दिलाई मजबूती : कृषि विज्ञान केंद्र के मुख्य विज्ञानी डा. आरके तिवारी ने बताया कि किसानों को जहां एक ओर नवीनतम ज्ञान दिया गया, वहीं कृषि यंत्रों से बोआई और कटाई का ज्ञान मिला। इस कारण उत्पादन में पहले की तुलना में वृद्धि हुई। योजना के तहत विज्ञानियों ने तेलहन में तोरी की खेती भी तकनीक के माध्यम से कराई। पंक्ति विधि एवं जीरो टिलेज के माध्यम से जहां किसानों को पहले 16 क्विंटल उत्पादन प्राप्त होते थे अब उसकी उत्पादकता बढ़ाकर 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो गई। तोरी में राजेंद्र सुफलाम, आरएस 725 सहित अन्य प्रभेद लगाए गए। मसूर एवं मूंग का भी प्रत्यक्षण कराया गया। इससे प्रति हेक्टेयर दो से तीन क्विंटल उत्पादकता बढ़ी।

लैब टू लैंड तक का सीधा जुड़ाव : डा. तिवारी बताते हैं कि इस अभियान से लैब टू लैंड तक सीधा जुड़ाव हुआ। विकसित नये-नये प्रभेदों का प्रत्यक्षण हुआ। विज्ञानी फसलों का हमेशा निरीक्षण करते रहे। इससे उत्पादकता बढ़ी। किसान मनोज कुमार राय, संजीत राय, राकेश कुमार, निगम कुमार, सरोज झा, संतोष कुमार एवं राजकुमार तारा ने भी विज्ञानी तकनीक से खेती करने पर फसल के उत्पादकता बढ़ाने की बात स्वीकार की। खरीफ में किसानों के 595 एकड़ भूमि में एवं रबी में 627 एकड़ भूमि में विगत पांच वर्षों तक विज्ञानियों ने प्रत्यक्षण किया था।

Dainik Jagaran 25-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 28 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस दौरान आसमान में बादल छाए रहेंगे। उत्तर बिहार के जिलों में वर्षा हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 24-28 डिग्री सेल्सियस रहन सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
25 मई	33.2	22.1
26 मई	33.2	22.5
	दरभंगा	
25 मई	33.2	22.5
26 मई	33.5	22.5
	पटना	
25 मई	35.0	23.0
26 मई	35.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagaran 25-05-2025

डेटा आधारित शोध, बायो प्रोडक्ट निर्माण कार्यो को बढ़ावा समय की मांगः उद्यान आयुक्त

एआई की मदद से शहद की गुणवत्ता व पहचान के लिए बने किट : वीसी

कृषि विवि

शनिवार को राजेंद्र कृषि विवि पूसा में आयोजित लीची महोत्सव के दौरान लीची खाने की प्रतियोगिता में शामिल छात्र-छात्राएं व अन्य।

पूसा, निज संवाददाता। भारत सरकार के उद्यान आयुक्त डॉ.प्रभात कुमार ने कहा राज्य में लीची व शहद से जुड़े कार्यो की अपार संभावनाएं हैं। जरूरत है साईंस एवं इकोनॉमी को ध्यान में रखकर कार्य करने की। इसमें डेटा के आधार पर शोध कार्यो को गति देने, शहद के बायो प्रोडक्ट निर्माण, बी-ब्रीडींग जैसे कार्यो को बढ़ावा देने की जरूरत है। जिससे वह एक खास ब्रांड के रूप् में उभर कर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बन सके। वे शनिवार को विवि के विद्यापति सभागार में देश के विभिन्न राज्यो से आये वैज्ञानिको, किसानों व छात्रो को संबोधित कर रहे थे।

मौका था लीची की विविधता एवं जीआई टैंगिग आधारित लीची शहद विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी रानी के आकार व शक्ति में कमी आ रही है। जिससे शहद के उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इसके लिए बी-ब्रीडींग पर कार्य की जरूरत है। उन्होंने शहद के हेल्दी डिंक बनाने पर जोर देते हुए कहा कि यह युवाओं की खास पसंद हो सकती है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि लीची की सबसे बड़ी समस्या सेल्फ लाईफ की है। तुड़ाई के बाद ताजा व गुणवत्तायुक्त बनाये रखने की चुनौती है। इस दिशा में विवि कार्य कर रहा है। उन्होंने वैज्ञानिको से कहा कि वे एआई की मदद से ऐसे

- लीची शहद विषय पर दो दिवसीय सेमिनार शुरू होगा चिंतन-मंथन
- लीची की विविधता एवं जीआई टैंगिग पर की जाएगी चर्चा

किट का निर्माण करें, जिससे लीची व शहद की गुणवत्ता, स्वाद आदि की पहचान हो सके। उन्होंने मुजफ्फरपुर की अनिता कुमारी की चर्चा करते हुए कहा कि इनकी सफलता की कहानी प्रेरणादायी है। लीची अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ.विकास दास ने कहा कि लीची व लीची शहद की ब्रंाडिंग के लिए, इसके गुणो के प्रसार करने की जरूरत है। निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने विवि की गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की। स्वागत डीन डॉ.मयंक राय, संचालन शांम्भवी व अभिषेक कुमार ने एवं धन्यवाद डॉ.मोहित शर्मा ने की। इससे

दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते भारत सरकार के उद्यान आयुक्त, वीसी व अन्य।

पूर्व आगत-अतिथियों ने लीची व शहद प्रदर्शनी का अवलोकन कर किया। बाद में दीप प्रज्जवलित कर समारोह की शुरूआत की। इस दौरान साजो-सज्जा से लेकर स्वागत के सामानों तक लीची के खास तरीके से उपयोग समारोह को आकर्षक बना रहा था। मौके पर कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार, निदेशक डॉ.रामदत्त, डॉ.मिनाक्षी द्विवेदी, डॉ. कुमार राज्यबर्द्धन, डॉ.सतीश कुमार समेत डीन-डायरेक्टर, बिहार सरकार के उद्यान विभाग से जुड़े अधिकारी मौजूद थें। इस दौरान लीची खाने की प्रतियोगिता आयोजित हुईं। जिसमें वैज्ञानिकों व छात्रों ने हिस्सा लिया।

Hindustan 25-05-2025

पेड़ से टूटने के एक माह बाद तक लीची को सुरक्षित रखने पर हमारी नजर : वीसी

लीची की विविधता और जीआई आधारित लीची शहद विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में लीची की विविधता और जीआई आधारित लीची शहद के विषय पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन शनिवार को किया गया। स्वागत सम्मान एवं कुलगीत प्रसारण की औपचारिकता के बाद मुख्य अतिथि भारत सरकार के बागवानी आयुक्त डॉ प्रभात कुमार एवं विवि के कुलपति डॉ पीएस पाण्डेय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का करतल ध्वनि के बीच विधिवत उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन संबोधन में डॉ प्रभात कुमार ने कहा कि बिहार के लीची का दुनिया भर में काफी महत्व और मांग है। विश्वविद्यालय लीची और लीची के शहद के विविधता से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर काफी कार्य कर रहा है। वही जी आई टैगिंग का भी कार्य जारी है। उन्होंने बताया कि लीची व शहद के निर्यात को लेकर कई तरह के मानकों की जरूरत होती है। उन्होंने कहा कि लीची के रोग की पहचान एवं उसके स्वाद एवं सुगंधों की पहचान को लेकर भी कार्य किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड विश्वविद्यालय के साथ मिलकर इससे जुड़े कार्य को कर रहा है। डॉ प्रभात ने कहा कि हलिया दिनों में ऐसा देखा जा रहा है कि रानी मधुमक्खी के आकार एवं शक्ति में ह्रास हुआ है। जिससे शहद का उत्पादन प्रभावित हुआ है। इससे जुड़े शोध वैज्ञानिको को कारण का पता लगा कर समाधान की दिशा में पहल करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जीआईं टैगिंग के फायदों, गुणवत्तापूर्ण उत्पादन एवं विपणन के बारे में किसानों को जागरूक किया जाना चाहिए जिससे लीची एवं लीची के शहद उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। मुख्य अतिथि ने कहा कि उत्पादकता में विज्ञान की भूमिका अहम होती है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि लीची काफी कम समय में खराब हो जाता है। जिसके कारण लोगों को इसका स्वाद अल्प अवधि तक मिल पाता है। इसको लेकर विवि के वैज्ञानिक ऐसा शोध कर रहे है कि पेड से टूटने के एक माह बाद तक लीची को सुरक्षित रखा जा सके। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि एआई तकनीक के माध्यम से लीची एवं लीची की शहद के गुणवत्ता मापने के किट पर शोध करे जिससे लीची व शहद उत्पादक किसानों को निर्यात में लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि दो दिवसीय सेमिनार में ऐसे बिंदु निकाल कर आएंगे जिससे बिहार एवं भारत के लीची उत्पादक किसानों को लाभ मिलेगा। संगोष्ठी को लीची अनुसंधान केन्द्र मुजफ्फरपुर के निदेशक डॉ विकास दास, निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय अधिष्ठाता सह निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने भी सम्बोधित किया। संचालन छात्रा शांभवी कुमारी एवं अभिषेक कुमार ने किया वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ मोहित शर्मा ने किया। मौके पर कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार, अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह, अधिष्ठाता डॉ पीपी श्रीवास्तव, निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा, डॉ कुमार राज्यवर्धन सहित वैज्ञानिक, शिक्षक छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

दीप प्रज्वलित करते।

Rashtriya Sahara 26-05-2025

छोटे अनाजों पर ग्रीष्मकालीन बाजरा परिक्षेत्र दिवस मनाया गया

बाजरा आधारित उत्पादों को बेचने को वेबसाइट लांच : वीसी

प्रतिनिधि,पूसा

बाजरा की फसलों का निरीक्षण करते कुलपति.

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ तिरहुत कृषि महाविद्यालय में रविवार को छोटे अनाजों पर ग्रीष्मकालीन बाजरा परिक्षेत्र दिवस मनाया गया. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि बाजरा पौष्टिक अनाज है.

यह खरीफ के मौसम में उगाया जाता है. बिहार में फिंगर, प्रोसो, फॉक्सटेल, बार्नयार्ड, कोदो, लिटिल और पर्ल बाजरा उगाया जाता है. बिहार में औसतन 1000-1500 मिमी वार्षिक वर्षा होती है. खरीफ मौसम के दौरान उत्तर बिहार के कई जिले बाढ़ प्रभावित हो जाते हैं. इससे जब भी भारी वर्षा होती है. उपज में हानि होती है. क्योंकि बाजरा एक द्विअर्थी फसल है. इसकी जड़ प्रणाली उथली होती है. बाढ़ की स्थिति में उच्च नमी के दबाव को झेलने में असमर्थ होती है. बिहार में बाजरे के क्षेत्रफल व उत्पादन को बढ़ाने के लिए वैकल्पिक मौसम में बाजरे की खेती को बढ़ावा देने की आवश्यकता है.

आरपीसीएयू ने सूबे की पारिस्थितिकी में गर्मियों में लाभकारी रूप से उगाये जा सकने वाले बाजरे के जर्मप्लाज्म और किस्मों का मूल्यांकन किया है. जिन्हें फिंगर, फॉक्सटेल, प्रोसो और बार्नयार्ड और पर्ल बाजरा में उगाया जा सकता है. गर्मियों में बाजरे की खेती के तरीकों को अनुकूलित किया है.

केंद्र पारंपरिक बाजरा आधारित खाद्य उत्पादों में मूल्य संवर्धन के साथ-साथ विभिन्न मूल्यवर्धित बाजरा आधारित तैयार खाने योग्य और पकाने योग्य उत्पाद विकसित कर रहा है. इन नये उत्पादों का परीक्षण के बाद पेटेंट कराया जायेगा. अपने उत्पादों का ऑनलाइन विपणन शुरू कर दिया गया है. बाजरा आधारित उत्पादों को बेचने के लिए अपनी वेबसाइट भी लांच की है. मौके पर डा श्वेता मिश्रा सहित संबंधित वैज्ञानिक मौजूद थे.

प्रभात खबर
Monday, May 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68336a4936e756bf956b26df

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 28 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस दौरान आसमान में बादल छाए रहेंगे। उत्तर बिहार के जिलों में वर्षा हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 24-28 डिग्री सेल्सियस रहन सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
26 मई	33.2	22.1
27 मई	33.2	22.5
	दरभंगा	
26 मई	33.2	22.5
27 मई	33.5	22.5
	पटना	
26 मई	35.0	23.0
27 मई	35.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik jagran 26-05-2025

फसलों का वैज्ञानिक टीम ने किया निरीक्षण

पूसा। डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के सेन्टर फॉर एक्सेलेंस इन मिलेट्स एंड वैल्यू चेन के तत्वाधान में रविवार को ग्रीष्मकालीन मिलेट्स पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान कुलपति डा. पीएस पाण्डेय के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की टीम ने तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली परिसर स्थित प्रक्षेत्रों में लगी मिलेट्स से जुड़ी फसलों को देखा। मौके पर केन्द्र प्रमुख डा. श्वेता मिश्रा ने प्रक्षेत्र में लगी फसलों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी।

Hindustan_26-05-2025

रीजनल नोडल अधिकारी बने केंद्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ पीएस पांडेय

प्रतिनिधि, पूसा

किसानों को समर्पित भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान का रीजनल नोडल अधिकारी डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय को बनाया गया है.

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देश भर में तीन क्षेत्रीय नोडल अधिकारी बनाये हैं जिनमें से सभी पठारीय क्षेत्रों के लिए कुलपति डॉ पांडेय को अधिकृत किया गया है. उनके साथ कई राज्यों के नोडल अधिकारी मिलकर कार्य करेंगे. भारत सरकार का यह अभियान 29 मई से 12 जून तक चलाया जायेगा. इसमें वैज्ञानिकों की टीम गांव में जाकर किसानों से उनकी समस्याओं पर चर्चा करेगी. बिहार राज्य के स्टेट नोडल अधिकारी बामेती के निदेशक होंगे. इसके लिए डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में भी वैज्ञानिक की 33 टीम बनाई गई है.

हर टीम में विभिन्न विषयों के चार से पांच वैज्ञानिक होंगे. जानकारी के अनुसार हर टीम एक दिन में तीन गांव का दौरा करेगी. कुलपति डॉ पांडेय स्वयं बिहार के अतिरिक्त लगभग आठ अन्य राज्यों की कमान संभालेंगे. पर्यवेक्षण करेंगे कि वैज्ञानिकों की टीम किसानों की समस्याओं का समाधान करें और उनके फीडबैक से भी क्षेत्रीय नोडल अधिकारी के कार्यालय को अवगत करायें. कई राज्यों में चलने वाले इस मेगा अभियान को लेकर कुलपति ने बैठकों का दौर शुरू कर दिया है. जानकारी के अनुसार विभिन्न वैज्ञानिकों को अलग-अलग निर्देश दिये गये हैं.

कुलपति डॉ पांडेय अन्य राज्यों के राज्य नोडल अधिकारी के भी लगातार संपर्क में हैं ताकि भारत सरकार के इस मेगा अभियान को अधिक से अधिक सफल बनाया जा सके.

प्रभात खबर
Tuesday, May 27, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6834bb17df5cf2f24d1af5cd

खेती-किसानी • कृषि विवि पूसा के कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वैज्ञानिक ने दी बचाव की जानकारी

बारिश और नमी से शाही लीची पर फल वेधक कीट का प्रकोप : कृषि वैज्ञानिक

भास्कर न्यूज|पूसा

मौजूदा समय में शाही लीची की तुड़ाई जोर शोर से चल रही है। पिछले एक सप्ताह के दौरान खासकर लीची उत्पादक क्षेत्रों में अच्छी बारिश हुई है। ऐसे समय में बारिश का होना लीची में फल बेधक कीट की संभावना को बढ़ावा देता है। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वैज्ञानिक डॉ. धीरू तिवारी ने दी है। उन्होंने बताया कि इस कीट से निजात पाने के लिए लीची उत्पादक किसानों को लीची फलन के समय से ही लीची के बागों का वैज्ञानिक प्रबंधन करना चाहिए। लीची के फल को फल वेधक कीट से बचाने के लिए वैज्ञानिक अनुशंसा के अनुसार किसान थायोक्लोप्रीड और लैम्डासायहैलोथ्रिन दवाई की 0.5 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी या नोवल्युरान दवाई के 1.5 एमएल मात्रा को प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव करते है। इसके अतिरिक्त भी कुछ लीची उत्पादक किसान फल बेधक कीट के नियंत्रण के लिए अन्य शक्तिशाली कीटनाशकों का प्रयोग करते हैं। इन कीटनाशकों की प्रतिक्षा अवधि कम से कम 12 से 15 दिनों की होती है। ऐसी स्थिति में शाही लीची के फल की तुड़ाई से 15 दिन पहले कीटनाशकों का छिड़काव हर हाल में किसानों को बंद कर देना चाहिए। इन रासायनिक दवाओं का स्प्रे अगर लीची तुड़ाई से तुरंत पहले किया गया होगा और लीची तोड़ लिया जाएगा तो लीची के फलों में कीटनाशकों की मौजूदगी बनी रहेगी। फलों में कीटनाशकों की मौजूदगी स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बहुत ही नुकसानदायक है। वैज्ञानिक ने बताया कि लीची फल टूटने से पहले इन दवाओं का स्प्रे किसान हरगिज न करें। संभव हो तो लीची के फल को फल बेधक कीट से बचाने के लिए किसान रासायनिक कीटनाशकों की जगह फलों के गुच्छे को फ्रूट बैग कवर से कवर कर बांध दें। इस तकनीक से भी फलों को कीट से काफी कम क्षति पहुंचती है। फल बेधक कीट से बचाव के लिए किसान अविलंब लीची के बाग में पर्याप्त संख्या में फेरोमोन ट्रैप लगाएं।

कीट को नियंत्रित करने के लिए करें वैज्ञानिक प्रबंधन

पेडों में लगी शाही लीची।

लीची उत्पादक किसान साफ-सुथरी खेती को दें बढ़ावा, होगा मुनाफा

अगर इस समय मौसम की स्थिति सामान्य है यानी रुक-रुक कर बारिश नहीं हो रही है तब फल तुड़ाई के 10 से 12 दिन पहले निम्नलिखित तीन कीटनाशकों क्रमशः नोवलुरॉन 10 प्रतिशत ईसी दवाई का 1.5 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी या इमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एसजी 0.7 ग्राम प्रति लीटर पानी या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5 प्रतिशत ईसी दवाई का 0.7 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी यानी तीनों दवाओं में से किसी एक दवाई का घोल बनाकर लीची के पेड़ो पर छिड़काव करें।

कीट का प्रबंधन लीची फलन की शुरुआत से ही जरूरी

लीची की सफलतापूर्वक खेती के लिए यह आवश्यक है की इसमे लगने वाले फल बेधक कीट का प्रबंधन लीची फलन के शुरुआत से ही किया जाये। इस कीट के प्रबंधन के लिए लीची में फूल निकलने से पूर्व पहला स्प्रे निंबिसिडिन दवाई (0.5 प्रतिशत) या नीम का तेल या निंबिन की 4 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर या किसी भी नीम आधारित कीटनाशक जैसे एजेडिरैचिन फॉर्मुलेशन निर्माताओं की अनुशंसित खुराक को घोलकर लीची के पेड़ो पर छिड़काव करें। इसके बाद जब लीची के फूल में फल लग जाएं तब पूर्व में जिस दवाई का छिड़काव किया गया था। उसी दवाई का छिड़काव पुनः दोहराएं। इसके बाद फल लगने के दस दिन बाद जब फल लौंग के आकार का हो जाएं तब तीसरा स्प्रे थियाक्लोप्रिड 21.7 एससी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल दवाई की 0.7 से 1.0 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर पेड़ो पर करें। सभी कीटनाशक दवाओं के छिड़काव में लगभग 12 से 15 दिन का गैप रखे।

दैनिक भास्कर, दिनांक- 27/05/2025, पे० नं०- 14

कृषि संकल्प अभियान के नोडल अधिकारी बने वीसी

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने की घोषणा

भास्कर न्यूज | पूसा

किसानों को समर्पित भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान का रीजनल नोडल अधिकारी डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ. पी एस पांडेय को बनाया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देश भर में तीन क्षेत्रीय नोडल अधिकारी बनाये है जिनमें से सभी पठारीय क्षेत्रों के लिए डॉ.पी एस पांडेय को अधिकृत किया गया है। उनके साथ कई राज्यों के नोडल अधिकारी मिलकर कार्य करेंगे। भारत सरकार का यह अभियान 29 मई से 12 जून तक चलाया जाएगा।

इसमें वैज्ञानिकों की टीम गांव में जाकर किसानों से उनकी समस्याओं पर चर्चा करेगी। बिहार राज्य के स्टेट नोडल अधिकारी बामेति के निदेशक होंगे। इसके लिए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा में भी वैज्ञानिक की 33 टीम बनाई गई है। हर टीम में विभिन्न विषयों के चार से पांच वैज्ञानिक होंगे। जानकारी के अनुसार हर टीम एक दिन में तीन गांव का दौरा करेगी। कुलपति डॉ.पांडेय स्वयं बिहार के अतिरिक्त लगभग आठ अन्य राज्यों की कमान संभालेंगे और पर्यवेक्षण करेंगे कि वैज्ञानिकों की टीम किसानों की समस्याओं का समाधान करें और उनके फीडबैक से क्षेत्रीय नोडल अधिकारी के कार्यालय को अवगत कराया जाएं।

दैनिक भास्कर, दि० - 27/05/25, पे० नं० - 11

राजेंद्र परवल–3, मिठाई संग सब्जी का देगा स्वाद

- डा. राजेंद्र प्रसाद केकृवि में विकसित परवल का यह प्रभेद किसानों को दे रहा समृद्धि
- एक कट्ठा खेत में एक क्विंटल होता उत्पादन, 10 हजार किसान बीज कर चुके प्राप्त

जागरण संवाददाता, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में विकसित राजेंद्र परवल-3 किसानों को समृद्ध कर रहा है। प्रति कट्ठा एक क्विंटल तक उत्पादन देने वाला और वर्ष 2021 में विकसित यह प्रभेद सब्जी से लेकर मिठाई बनाने तक में उपयोग हो रहा है। इसकी ऊपरी परत मुलायम और बीज नहीं होने के कारण यह दोनों चीजों के लिए उपयुक्त है। पूर्वी चंपारण के अरेराज की परवल मिठाई के लिए किसान अब इसी प्रभेद का इस्तेमाल कर रहे हैं। उत्तर बिहार के समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, पूर्वी चंपारण, दरभंगा, मधुबनी सहित कई जिलों में इसकी खेती हो रही है। इसमें नर एवं मादा पौधे को साथ लगाना होता है। आपस में परागण के बाद फलन होता है। यह प्रभेद रोग सहनशील क्षमता रखने वाला है। पूसा विश्वविद्यालय से अब तक 10 हजार किसान बीज प्राप्त कर चुके हैं। यह प्रभेद गुच्छे में फलता है, जिसमें तीन या चार फल लगते हैं।

राजेंद्र परवल 3 • जागरण

बलूई दोमट मिट्टी उपयुक्त : इस प्रभेद की खेती के लिए बलूई दोमट मिट्टी उपयुक्त है। इसमें कार्बनिक पदार्थ भरपूर मात्रा में होनी चाहिए। प्रत्येक 10 पौधे पर एक न एक पौधा नर होना आवश्यक है। सितंबर से अक्टूबर के महीने में इसे लगाकर इससे मुनाफा कमाया जा सकता है। अबतक लगभग दस हजार किसानों ने इसे अपने खेतों में लगाया है। इस प्रभेद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक गांठ पर तीन फल लगते हैं एवं एक कट्ठा में एक क्विंटल उत्पादन होता है।

डा. उदित कुमार बताते हैं कि किसान अगर वैज्ञानिक ढंग से इसकी खेती करें तो अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रभेद में बीज की मात्रा कम होने से मिठाई बनाने वालों के लिए इसकी खासी मांग है। खाने में भी यह स्वादिष्ट होता है।

Dainik Jagran 27-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 28 मई तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस दौरान आसमान में बादल छाए रहेंगे। उत्तर बिहार के जिलों में वर्षा हो सकती है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 32-34 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 24-28 डिग्री सेल्सियस रहन सकता है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
27 मई	33.2	22.1
28 मई	33.2	22.5
	दरभंगा	
27 मई	33.2	22.5
28 मई	33.5	22.5
	पटना	
27 मई	35.0	23.0
28 मई	35.0	23.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik jagran 27-05-2025

कुलपति बनाए गए क्षेत्रीय नोडल अधिकारी

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डा. पीएस पांडेय को भारत सरकार द्वारा विकसित कृषि संकल्प अभियान का रीजनल नोडल अधिकारी बनाया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देश भर में तीन क्षेत्रीय नोडल अधिकारी बनाए हैं। डा. पांडेय को पठारीय क्षेत्र के लिए अधिकृत किया गया है। उनके साथ कई राज्यों के नोडल अधिकारी मिलकर कार्य करेंगे। यह अभियान 29 मई से 12 जून तक चलेगा।विज्ञानियों की टीम गांव जाकर किसानों से समस्याओं पर चर्चा करेगी। बिहार राज्य के स्टेट नोडल अधिकारी बामेती के निदेशक होंगे। इसके लिए डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में भी विज्ञानी की 33 टीम बनाई गई है। हर टीम में विभिन्न विषयों के चार से पांच वैज्ञानिक होंगे। जानकारी के अनुसार हर टीम एक दिन में तीन गांव का दौरा करेगी। कुलपति डा. पांडेय स्वयं बिहार के अतिरिक्त लगभग आठ अन्य राज्यों की कमान संभालेंगे और पर्यवेक्षण करेंगे। विज्ञानियों की टीम किसानों की समस्याओं का समाधान करेगी।

कुलपति डा. पीएस पांडेय

Dainik jagran 27-05-2025

रीजनल नोडल अधिकारी बने वीसी डॉ.पांडेय

पूसा। डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा के कुलपति डा. पीएस पांडेय को किसानों को समर्पित भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान का रीजनल नोडल अधिकारी बनाया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देश भर में तीन क्षेत्रीय नोडल अधिकारी बनाये हैं। इनमें से सभी पठारीय क्षेत्रों के लिए डा. पीएस पांडेय को अधिकृत किया गया है। उनके साथ कई राज्यों के नोडल अधिकारी मिलकर कार्य करेंगे। भारत सरकार का यह अभियान 29 मई से 12 जून तक चलाया जाएगा। इसमें वैज्ञानिकों की टीम गांव में जाकर किसानों से उनकी समस्याओं पर चर्चा करेगी।

Hindustan 27-05-2025

भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के पठारी क्षेत्र के रीजनल नोडल अधिकारी बने कुलपति डॉ पीएस पांडेय

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ पीएस पांडेय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने किसानों को समर्पित भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान का पठारी क्षेत्र का क्षेत्रीय नोडल अधिकारी बनाया है। बताते चलें कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देश भर में तीन क्षेत्रीय नोडल अधिकारी बनाया है जिसमें से पठारी क्षेत्र केलिए डॉ पांडेय को अधिकृत किया है। जिसमें उनके साथ कई राज्यों के नोडल अधिकारी मिलकर कार्य करेंगे। भारत सरकार का यह अभियान को आगामी 29 मई से 12 जून तक चलेगा। इसके तहत वैज्ञानिकों की टीम गांव में जाकर किसानों से उनकी समस्याओं पर चर्चा करेगी। वहीं बिहार राज्य के स्टेट नोडल अधिकारी बामेति के निदेशक होंगे। इस कार्य के लिए डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में भी वैज्ञानिक की 33 टीम बनाई गई है। जिसमें विभिन्न विषयों के चार से पांच वैज्ञानिक होंगे। इस बाबत मिल रही जानकारी के अनुसार हर टीम एक दिन में तीन गांव का दौरा करेगी। कुलपति डॉ पांडेय स्वयं बिहार के अतिरिक्त लगभग आठ अन्य राज्यों की कमान संभालेंगे और पर्यवेक्षण करेंगे कि वैज्ञानिकों की दल किसानों की समस्याओं का समाधान करे और उसके फीडबैक से क्षेत्रीय नोडल अधिकारी कार्यालय को अवगत कराये। कई राज्यों में चलने वाले इस मेगा अभियान को लेकर कुलपति ने बैठकों का दौर शुरू कर दिया है और जानकारी के अनुसार विभिन्न वैज्ञानिकों को अलग अलग निर्देश दिए गए हैं। कुलपति डॉ पांडेय अन्य राज्यों के राज्य नोडल अधिकारी के भी लगातार संपर्क में हैं ताकि भारत सरकार के इस मेगा अभियान को अधिक से अधिक सफल बनाया जा सके।

कुलपति डॉ पीएस पांडेय।

Rashtriya Sahara 27-05-2025

RPCAU VC to join Centre's agri campaign

Times of India Date-27/5/25-P-02

B K Mishra | TNN

Patna: In a significant development, the govt of India has nominated the vice-chancellor of Rajendra Prasad Central Agricultural University (RPCAU), P S Pandey, as one of the three regional nodal officers for the successful implementation of the Developed Agriculture Commitment Campaign (DACC) across the country.

The other two nodal officers are the vice-chancellors of Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University-Jhansi and Central Agricultural University-Imphal.

File photo

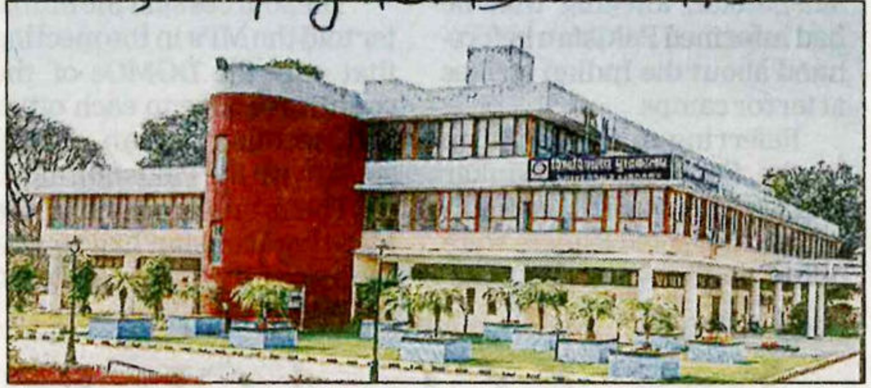

The DACC will be held from May 29 to June 12 in more than 700 districts

The DACC will be held from May 29 to June 12 in more than 700 districts. A team of scientists will travel from village to village, directly interacting with farmers. The campaign will include participation from 731 'krishi vigyan kendras', 113 Indian Council of Agricultural Research (ICAR) institutes, state-level departments and officials from agriculture, horticulture, animal husbandry, fisheries, as well as innovative farmers. The campaign aims to reach and interact directly with 1.5 crore farmers across the country.

A team of scientists will travel from village to village, directly interacting with farmers

In Bihar, the director of Bihar Agricultural Management and Extension Training Institute (BAMETI) will serve as the state nodal officer. As many as 33 teams of scientists, each consisting of four to five experts, have been constituted at RPCAU for the successful implementation of the campaign. Each team will visit three villages per day.

As the regional nodal officer, Pandey will oversee the implementation of the campaign in Bihar and eight other states, ensuring that the team of scientists addresses farmers' problems and provides feedback to the office of the regional nodal officer, said university sources.

30-31 मई को मध्यम बारिश की संभावना

समस्तीपुर. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 28 मई से 01 जून 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि के दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाये रहेंगे. 30 से 31 मई के आसपास उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों के ज्यादातर क्षेत्रों ँ हल्की वर्षा होने की संभावना है, जबकि कुछ स्थानों परमध्यम वर्षा भी भी हो सकती है. वर्षा के दौरान तेज हवा चलने और कुछ स्थानों पर आकाशीय बिजली गिरने की भी संभावना है. इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 18 से 25 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने का अनुमान है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 33.6 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.1 डिग्री कम रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 25.1 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.6 डिग्री कम अधिक रहा.

प्रभात खबर
Wednesday, May 2
Samstipur
https://epaper.p r.c

गांव-गांव जाएंगे विज्ञानी, जानेंगे खेती-किसानी का हाल

पूर्णेंदु कुमार • जागरण

- खेती के हर अवयव पर चौकसी, मिट्टी जांच से सीड रिप्लेसमेंट तक पर विज्ञानियों की नजर
- केंद्र सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत देश भर में तीन क्षेत्रीय नोडल अफसर

29 मई से 12 जून तक टीम गांवों में जाकर किसानों से समस्याओं पर करेगी चर्चा

33 टीम बनाई, एक टीम में 4-5 विज्ञानी, दिन भर में न्यूनतम तीन गांवों का करेंगे भ्रमण

पूसा (समस्तीपुर) : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अवधारणा लैब टू लैंड के प्रत्यक्षण के बाद कृषि विज्ञानी अब गांव-गांव भ्रमण करेंगे। किसानों के खेतों तक जाएंगे, फसलों का हाल जानेंगे। इसके साथ ही मौके पर ही कृषि से संबंधित सभी समस्याओं का निदान भी बताएंगे।

इसके लिए डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समेत राज्य भर के कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, बोरलाग इंस्टीट्यूट आफ साउथ एशिया, पूसा के विज्ञानियों की 33 टीम बनाई गई है। हर टीम में विभिन्न विषयों के चार से पांच विज्ञानी होंगे। एक टीम दिन भर में कम से कम तीन गांवों का दौरा करेगी। इसे केंद्र सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत किया जा रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने देश भर में तीन क्षेत्रीय नोडल अधिकारी बनाए हैं। इसे तीन क्षेत्र पठारी, बुंदेलखंड और उत्तर-पूर्व क्षेत्र में विभक्त किया गया है। कई राज्यों के नोडल अधिकारी मिलकर कार्य करेंगे। पूसा विश्वविद्यालय के कुलपति डा. पीएस पांडेय को पठारी रीजन का नोडल अधिकारी बनाया गया है। उत्तर-पूर्व क्षेत्र के लिए सेंट्रल एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी इंफाल के कुलपति डा. अनुपम मिश्रा को रीजनल नोडल पदाधिकारी बनाया गया है, जबकि बुंदेलखंड की कमान रानी लक्ष्मीबाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के कुलपति डा. एके सिंह संभालेंगे।

किसानों से मिले फीडबैक पर होगा शोध : यह अभियान 29 मई से 12 जून तक चलेगा। इसमें विज्ञानियों की टीम गांव में जाकर किसानों से उनकी समस्याओं पर चर्चा करेगी। बिहार राज्य के स्टेट नोडल अधिकारी बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रबंधन संस्थान (बामेती) के निदेशक होंगे।

कुलपति डा. पीएस पांडेय का कहना है कि भारत सरकार का यह मेगा अभियान है, जिसमें देश भर के कृषि विज्ञानी विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत लगभग 15 दिनों तक गांव-गांव जाकर किसानों से मिलेंगे। इससे विज्ञानियों को किसानों की समस्याओं को बेहतर तरीके से समझने में सहायता मिलेगी और ऐसे विभिन्न फीडबैक मिलेंगे जिन पर अनुसंधान की आवश्यकता है।

विज्ञानी सीधे खेती से जुड़ी समस्याओं पर किसानों से करेंगे बात

विज्ञानियों की एक टीम गांव-गांव जाकर किसानों से सीधी बातचीत करेगी। खेती के प्रमुख अवयव मिट्टी की सेहत, सिंचाई को पानी, उन्नत प्रजाति के बीज और तकनीक की उपलब्धता के लिए सरकारी नीतियों के माध्यम को कारगर तरीके से जमीन पर उतारा जाएगा। इसके पहले चरण में ही प्रत्येक जिले में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्रों को वाइब्रेंट बनाया जाएगा। उत्पादकता के अंतर को घटाने के लिए सीड रिप्लेसमेंट की भी बात होगी। खाद की उपलब्धता और उसके संतुलित प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा। इसी तरह बागवानी फसलों की पैदावार पर भी विज्ञानियों की नजर रहेगी। दलहन, तिलहनी फसलों की कुल पैदावार वृद्धि के उपाय पर भी टीम कार्य करेगी। इसके बाद किसानों की आमदनी बढ़ाने के उपायों पर भी गौर किया जाएगा। अभियान में कृषि विज्ञान केंद्र, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आइसीएआर) संस्थान, राज्य स्तरीय विभाग और कृषि, बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन के अधिकारी साथ ही नवोन्मेषी किसान भी शामिल होंगे। बिहार में बिहार कृषि प्रबंधन एवं विस्तार प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक राज्य नोडल अधिकारी के रूप में काम करेंगे।

Dainik Jagran 28-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा एक जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। कई जिलों में वर्षा की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33-36 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 26-29 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
28 मई	35.0	27.0
29 मई	35.5	27.0
दरभंगा		
28 मई	35.5	27.0
29 मई	35.5	27.5
पटना		
28 मई	38.0	28.0
29 मई	38.0	28.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 28-05-2025

किसानों को दी प्राकृतिक व जैविक खेती की जानकारी

सिंघिया, एक संवाददाता। शारदीय (खरीफ) महाअभियान के तहत प्रखंड स्तरीय प्रशिक्षण सह उपादान वितरण कार्यक्रम मंगलवार को ई किसान भवन में प्रखंड प्रमुख बिरजू साहू ने दीप जला कर किया। कार्यक्रम का संचालन किसान सलाहकार कुंदन चौधरी ने किया। इस कार्यक्रम में प्रभारी बीएओ इंद्र कुमार झा की अनुपस्थिति किसानों व कर्मियों के बीच चर्चा का विषय बना रहा। कार्यक्रम में कृषि विशेषज्ञ मुकेश कुमार देव ने जैविक और प्राकृतिक खेती के बारे विस्तार से बताया।

कृषि विज्ञान केन्द्र लादा के वैज्ञानिक डॉ. अमृता सिन्हा ने मूल्य संवर्धन पर प्रकाश डाला। एटीएम सुशील कुमार कुशवाहा ने उद्यान कृषि के विषय में जानकारी दी। आत्मा के पदाधिकारी गंगेश चौधरी ने उपस्थित कृषि कर्मियों को पंचायत स्तर पर किसानों से मिलकर योजनाओं से अवगत कराते हुए उन्हें लाभान्वित करने का निर्देश दिया। मौके पर उप प्रमुख रिंकू सिंह, बीससूत्री अध्यक्ष सुधीर कुमार सिंह, अरूण शेखर कुंवर, प्रमोद कुमार पटेल, कुमोद मिश्र, मो. एहसान, नरेंद्र सिंह, बलराम शर्मा सहित अन्य कृषि कर्मी मौजूद थे।

02 घंटे विलंब से शुरू हुआ खरीफ ट्रेनिंग

- कृषि विभाग की योजनाओं की दी जानकारी

प्रचार प्रसार के अभाव में नहीं पहुंचे किसान

कार्यक्रम में किसानों की उपस्थिति कम थी। जो किसान आये उन्होंने बताया कि किसानों को इसकी जानकारी ही नहीं दी जाती है। किसानों का कहना था कि किसी भी कार्यक्रम को कृषि विभाग द्वारा सिर्फ खानापूरी की जाती है। प्रभारी बीएओ इंद्र कुमार झा ने बताया कि तीन प्रखंड हसनपुर, बिथान और सिंघिया के प्रभार में हैं। एक ही डेट में हसनपुर और सिंघिया में खरीफ महाभियान और बिथान में बीस सूत्री बैठक होने के कारण अनुपस्थित रहे हैं।

Hindustan 28-05-2025

कृषि गुर सिखाने का महाअभियान 29 से

15 दिनों का होगा विकसित कृषि संकल्प अभियान

पूरे देश में 12 चून तक चलेगा अभियान

पीपराकोठी(एसएनबी)। अब कृषि का गुर सिखाने, केंद्र व राज्य सरकारों की कृषि योजनाओं की जानकारी देने वैज्ञानिकों और सरकार के पदाधिकारियों की टीम किसानों के गांवों तक पहुंचेंगे। टीम से किसान कृषि संबंधी किसी प्रकार की समस्या और योजनाओं की जानकारी सहजता से प्राप्त कर सकेंगे। यह महाअभियान 29 मई से 12 जून तक चलेगी। केविके हेड डॉ अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि कृषि को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए, .कृषि में ऊत्पादकता को बढ़ाने के लिए तथा किसानों की आय को बढ़ाने के लिए भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा एक महत्वाकांक्षी अभियान की शुरूआत की जा रही है। जिसका नाम है विकसित कृषि संकल्प अभियान। यह अभियान पूरे देश में 29 मई से 12 जून तक चलेगा। इस अभियान के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र परसौनी और पीपराकोठी के द्वारा चार टीमों का गठन किया गया है। जिसमे आईसीएआर के वैज्ञानिक, पंडित दीन दयाल उपाध्याय महाविद्यालय के वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र के साथ-साथ जिला कृषि पदाधिकारी, परियोजना निदेशक आत्मा, उपपरियोजना निदेशक आत्मा, सहायक निदेशक उद्यान व इफको के पदाधिकारी एवं कर्मचारी भी सम्मिलित होगें। इस तरह से कृषि विज्ञान केन्द्र पीपराकोठी और परसौनी के द्वारा चार टीम अगले 15 दिनों तक किसानों के बीच में रहकर तकनीकी जानकारियों को साझा करेंगे। एक टीम एक दिन मे तीन गांवों के किसानों से रू-ब-रू होगी। तथा नई तकनीकों के बारे में किसानों को बतायेगें। इस कार्यक्रम मे पंचायत या ब्लॉक में किसानों के प्रशिक्षण के लिए जगह का चयन किया गया जायेगा। वहां पर किसान अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर कार्यक्रम का लाभ उठाएंगे। इस कार्यक्रम में ब्लॉक व पंचायत स्तर पर पदस्थापित प्रखंड कृषि पदाधिकारी, प्रखंड उधान पदाधिकारी, कृषि समन्वयक, एटीएम, बीटीएम, सहायक तकनीकी और किसान सलाहकार का समन्वय रहेगा। और ये सभी पदाधिकारी किसानों की भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। अभियान के दौरान सभी वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी किसानों को खेती के गुर तथा नई-नई जानकारियों के साथ ही केंद्र सरकार की योजनाओं के बारे में किसानों को अवगत कराएंगे।

Rashtriya Sahara 28-05-2025

हल्की से मध्यम बारिश के साथ तेज हवा और बिजली गिरने के आसार प्रबल

समस्तीपुर। अगले दो दिनों में अधिकांश जिलों में हल्की से मध्यम वर्षा होने के आसार है। बारिश के दौरान तेज हवा और बिजली कडकने के भी प्रबल आसार हैं। बारिश नहीं होने की सूरत में पूरवा हवा के कारण उमस का दौर जारी रहेगा। इस बाबत जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जलवायू परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी अगामी 01 जून, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमानित अवधि के दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रहेंगे। 30-31 मई के आसपास उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों के ज्यादातर क्षेत्रों में हल्की वर्षा होने की संभावना है, जबकि कुछ स्थानों पर मध्यम वर्षा भी हो सकती है। वर्षा के दौरान तेज हवा चलने और कुछ स्थानों पर आकाशीय बिजली गिरने की भी संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 33 से 36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 18 से 25 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा के चलने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara 28-05-2025

डॉ एसके सिंह को मिला सम्मान

पूसा. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सह चीफ साइंटिस्ट डॉ. एसके सिंह को बागवानी क्षेत्र में नवाचार पूर्ण एवं उत्कृष्ट योगदान के लिए कंसोर्टियम ऑफ हॉर्टिकल्चर एसोसिएशंस ऑफ इंडिया द्वारा सीएचएआई 2025 फेलोशिप से सम्मानित किया गया है. यह सम्मान उन्हें बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर भागलपुर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान प्रदान किया गया.

प्रभात खबर
Thursday, May 29, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68375f22bf7e7d209a737b02

भास्कर 29/5/25 पेज 16

कृषि • आम उत्पादक किसान कृषि वैज्ञानिकों के सुझाव और तकनीकों को अपनाकर रोग का करें प्रबंधन

आम के पेड़ों को खा रहा विल्ट रोग, बाग उजड़ने का खतरा बढ़ा : कृषि वैज्ञानिक

रोग के लक्षण: टहनियों और पत्तियों का अचानक मुरझाना व झड़ना

भास्कर न्यूज़ | पूसा

आम के पेड़ों में लगने वाला विल्ट रोग किसानों के लिए बड़ी चिंता बन गया है। यह रोग पेड़ों को अचानक मुरझाकर सूखा देता है। बिहार और उत्तर प्रदेश के आम उत्पादक किसान इस बीमारी से पिछले कई वर्षों से परेशान हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के प्रमुख डॉ. संजय कुमार सिंह ने बताया कि यह रोग आम के बागानों के लिए विनाशकारी साबित हो रहा है। इस रोग में सबसे पहले पेड़ की कुछ पत्तियां या किसी एक डाली की सभी पत्तियां मुरझा जाती हैं। फिर धीरे-धीरे पूरी डाली या पूरा पेड़ सूख जाता है। यह रोग बरसात के समय या उसके बाद ज्यादा फैलता है। सूखे पत्ते महीनों तक पेड़ पर लगे रहते हैं। पेड़ के तने से गोंद जैसा स्राव भी निकलता है। यह संकेत होता है कि पेड़ किसी गंभीर समस्या में है। डॉ. सिंह ने बताया कि प्रारंभिक शोध में इस रोग का कारण सेराटोसिस्टिस नामक कवक पाया गया है। यह रोग पाकिस्तान और ओमान में पहले से मौजूद था। भारत में हाल के वर्षों में ही इसकी पहचान हुई है। बिहार और उत्तर प्रदेश के कई बागानों में पेड़ एक-एक कर सूखते जा रहे हैं। एक पेड़ सूखने के बाद कुछ ही दिनों में दूसरा और फिर तीसरा पेड़ भी सूखने लगता है। टहनियों को काटने पर अंदर के ऊतक लाल, भूरे या काले रंग के दिखते हैं। उन्होंने बताया कि किसान पेड़ों के तनों की सतह से लगभग 5 फीट ऊंचाई तक बोर्डो पेस्ट से पुताई करें।

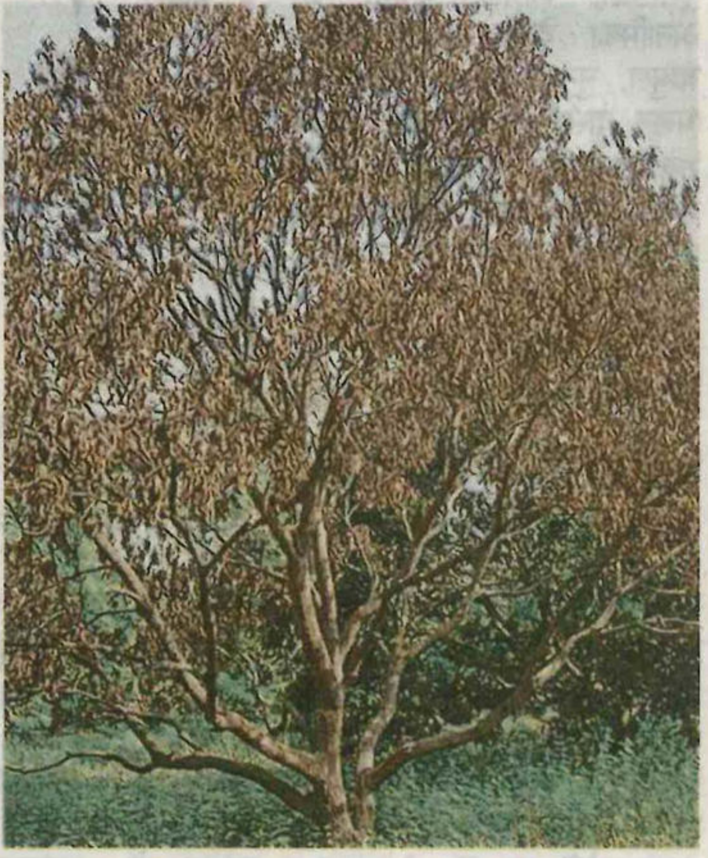

विल्ट रोग के संक्रमण से सूखे आम के पौधे।

इस रोग का पहले पाकिस्तान और ओमान में था प्रभाव

इस रोग के प्रमुख लक्षणों में आम के टहनी व पत्तियों का अचानक मुरझा जाना, पत्तियों का झड़कर गिरने लगना आदि शामिल हैं। ज्यादातर मुरझाए हुए पेड़ों के तने से गोंद का गंभीर रिसाव भी देखा जाता है। रोग से प्रभावित टहनियों को काट कर देखने पर यह पता चलता है कि संवहनी ऊतकों का रंग लाल व भूरे से लेकर गहरे भूरे या काले रंग का मलिनकिरण जैसा होता हैं। उन्होंने बताया कि भारत से आम के मुरझाने का यह रोग अभी हाल के वर्षों में ही रिपोर्ट किया गया है जबकि यह रोग पाकिस्तान और ओमान से पहले ही रिपोर्ट किया जा चुका है। आम का यह सेराटोसिस्टिस विल्ट रोग आम उत्पादन के लिए खतरा है।

बोर्डो पेस्ट से बाग में पेड़ों की पुताई करें किसान

इस रोग के प्रबंधन के लिए आवश्यक है की रोग से आक्रांत आम के पेड़ के आसपास की मिट्टी को रोको एम (थियोफानेट मिथाइल) नामक फफुंदनाशक दवाई की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर इस घोल से आम के पेड़ के आसपास की मिट्टी को खूब अच्छी तरह से भिगो दें। एक वयस्क पेड़ की मिट्टी को भींगाने के लिए कम से कम 15 से 20 लीटर दवा के घोल की आवश्यकता पड़ती है। दस दिनों के बाद उपरोक्त प्रक्रिया को पुनः दोहराएं। बाग में सभी आम के पेड़ के आस पास के सभी पेड़ों को इस घोल से भींगाना अत्यावश्यक है अन्यथा कुछ दिन के बाद दूसरे पेड़ मरना प्रारंभ हो जाएंगे।

बोर्डो पेस्ट के इस्तेमाल से शीर्ष मरण, आम के छिल्को का फटना समेत फफूंद जनित बीमारियों पर नियंत्रण

इस बात को ध्यान में रखकर किसानों को तुरंत सक्रिय होकर यह देखना चाहिए की आखिर पेड़ों से स्राव निकलने का कारण क्या है। इस रोग में भी पेड़ से गोंद निकलता है। उन्होंने बताया कि आम के पेड़ों में यह रोग न लगें इसके लिए किसान आम के पेड़ के चारो तरफ खासकर जमीन की सतह से जड़ों से लगभग 5 फीट की ऊंचाई तक बोर्डो पेस्ट से उसकी पुताई समय समय पर करते रहे। उन्होंने बताया कि किसान यदि बोर्डो पेस्ट से साल में दो बार प्रथम जुलाई एवं अगस्त तथा दुबारा फरवरी व मार्च में अगर पेड़ के जड़ों की पुताई कर देते है तो अधिकांश फफूंद जनित बीमारियों से बाग को बचाया जा सकता हैं। बोर्डो पेस्ट के इस्तेमाल से इस रोग के साथ साथ आम के रोग शीर्ष मरण, आम के छिल्को का फटना इत्यादि विभिन्न फफूंद जनित बीमारियों से भी बचाया जा सकता है।

भास्कर 29/5/25 पेज 14

पूसा विवि के वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह सीएचएआई फेलोशिप अवार्ड से सम्मानित

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के प्रोफेसर कम चीफ साइंटिस्ट के पद पर कार्यरत डॉ. संजय कुमार सिंह को बागवानी के क्षेत्र में उनके दीर्घकालिक, नवाचार पूर्ण एवं उत्कृष्ट योगदान के लिए कन्फेडरेशन ऑफ हॉर्टिकल्चर एसोसिएशंस ऑफ इंडिया द्वारा सीएचएआई 2025 फेलोशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें 28 मई 2025 को बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर भागलपुर में आयोजित हुए एक राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान दिया गया। अमृतकाल में बेहतर आजीविका के लिए बागवानी के त्वरित विकास विषय पर आधारित इस सम्मेलन में देशभर से कृषि वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों सहित प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। डॉ. सिंह अस्वस्थ होने के कारण इस सम्मेलन में स्वयं हिस्सा नहीं ले पायें। उनकी अनुपस्थिति के बावजूद वहां के वैज्ञानिक व अधिकारियों ने डॉ. सिंह के योगदानों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

विज्ञानी डा. एसके सिंह को मिला सम्मान

संस, जागरण • पूसाः बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में फल रोग विशेषज्ञ एवं डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मुख्य विज्ञानी डा. एस. के. सिंह को बागवानी में उनके दीर्घकालिक, उत्कृष्ट योगदान के लिए कंसोर्टियम ऑफ हॉर्टिकल्चर एसोसिएशंस ऑफ इंडिया (सीएचएआई) द्वारा -2025 फेलोशिप से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें बुधवार को बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर में आयोजित एक राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान प्रदान किया गया। अमृतकाल में बेहतर आजीविका के लिए बागवानी के त्वरित विकास विषय पर आधारित इस सम्मेलन में देशभर से कृषि वैज्ञानिकों, शिक्षाविदें, नीति-निर्माताओं, विस्तार अधिकारियों एवं प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

डा. एस के सिंह। • जागरण

सम्मान समारोह में उनके उल्लेखनीय योगदानों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया और उन्हें प्रशस्ति पत्र, सम्मान पट्टिका एवं प्रशंसा प्रमाण पत्र दिए गए। डॉ. सिंह को यह सम्मान सीएचएआई की खोज समिति की सिफारिश और निदेशक मंडल की स्वीकृति के बाद दिया गया। डा. एस. के. सिंह पिछले तीन दशकों से फल रोग प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान, शिक्षण और तकनीकी विस्तार में सक्रिय हैं। केले की फ्यूजेरियम विल्ट तथा पपीते की जड़ गलन रोग के जैविक प्रबंधन उनके नेतृत्व में विकसित किए गए। माइक्रोबियल कंसोर्टिया को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली। इसके अतिरिक्त, उन्होंने फलों की गुणवत्ता सुधार, उत्पादन वृद्धि, रोग प्रतिरोधी किस्मों के चयन एवं मूल्य संवर्धन जैसे क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। सीएचएआई बागवानी एवं कृषि के सतत विकास के लिए तकनीक-आधारित रणनीतियों को बढ़ावा देने वाली संस्था है। यह संगठन वैज्ञानिकों, शिक्षकों और कृषकों के लिए संवाद, शोध और नवाचार का मंच उपलब्ध कराता है तथा शोधपत्र, पुस्तकें और पत्रिकाओं का प्रकाशन करता है।

Dainik Jagran 29-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा एक जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। कई जिलों में वर्षा की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33-36 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 26-29 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
29 मई	35.0	27.0
30 मई	35.5	27.0
	दरभंगा	
29 मई	35.5	27.0
30 मई	35.5	27.5
	पटना	
29 मई	38.0	28.0
30 मई	38.0	28.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 29-05-2025

भास्कर 30/5/25 पेज 20

कार्यक्रम • विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री ने हरी झंडी दिखाकर की, गिनाई उपलब्धियां

किसान कल्याण के लिए केंद्र ले रहा बड़ा निर्णय

बढ़ेगी आमदनी : पीएम के निर्णयों का फायदा भी महसूस कर रहे किसान

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने हरी झंडी दिखाकर की। इससे पहले मंत्री ने विद्यापति सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को संबोधित भी किया। कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कृषि राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक काफी अच्छा कार्य कर रहे हैं। पिछले दो वर्षों में कुलपति डॉ.पी एस पांडेय के नेतृत्व में विवि को बारह से अधिक पेटेंट प्राप्त हुआ है। कुलपति ने लीची शो को एक तरह का राष्ट्रीय पर्व बना दिया है जिसकी चर्चा कई राज्यों में है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान की बहुत बड़ी जिम्मेदारी कुलपति डॉ.पांडेय को दी गई है। उन्हें न सिर्फ विश्वविद्यालय बल्कि अन्य राज्यों को भी विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत सफल बनाना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी किसानो के कल्याण को लेकर लगातार निर्णय ले रहे हैं जिसका फायदा सब लोग महसूस भी कर रहे हैं। कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि भारत सरकार के इस मेगा अभियान से डेढ़ करोड़ से ज्यादा किसानों को फायदा होगा। बिहार और झारखंड में 174 टीम बनाई गई है। हर टीम में पांच से छह वैज्ञानिक होंगे। उन्होंने कहा कि इस मेगा अभियान के लिए विश्वविद्यालय में एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। जहां से अभियान के सभी मूवमेंट की निगरानी की जायेगी।

कार्यक्रम को संबोधित करते कृषि राज्यमंत्री व कार्यक्रम में शामिल वीसी व अन्य।

वैज्ञानिक दिन भर की गतिविधियों की रिपोर्टिंग पोर्टल पर अपडेट करेंगे

कार्यक्रम में शामिल वैज्ञानिक व अन्य।

विकसित कृषि संकल्प अभियान के नोडल पदाधिकारी डा. रत्नेश झा ने कहा कि सभी वैज्ञानिक अपने दिन भर की गतिविधियों को रिपोर्टिंग पोर्टल पर अपडेट करेंगे। इसकी निगरानी विश्वविद्यालय स्तर पर, राज्य स्तर पर और केंद्र सरकार के स्तर पर की जा रही है। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक किसान अपनी समस्याओं से वैज्ञानिकों को अवगत करायें। डॉ.रत्नेश झा ने कार्यक्रम के दौरान धन्यवाद ज्ञापन भी किया। कार्यक्रम से पहले कृषि राज्य मंत्री ने भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा पर माल्यार्पण भी किया। मौके पर कुलसचिव डॉ. मृत्युजय कुमार, डीन बेसिक साइंस डॉ.अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉ. राम सुरेश वर्मा, डीन फिशरीज डॉ.पी पी श्रीवास्तव, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. राकेश मणि शर्मा, डॉ. पीके झा, डॉ. रामदत्त, डॉ. शिवपूजन सिंह समेत विभिन्न शिक्षक, वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी मौजूद थे।

130 टीम साढ़े छह लाख से अधिक किसानों से संपर्क कर जुटाएंगी डाटा

कुलपति ने कहा कि वैज्ञानिकों को निर्देश दिया गया है कि वे किसानों की समस्याओं को नोट करें और उसे तुरंत पोर्टल पर अपडेट करें। किसानों की समस्याओं को उसी दिन केंद्र सरकार के पास भेज दिया जाएगा। ऐसी समस्या जिस पर अनुसंधान की आवश्यकता है उस पर अनुसंधान किया जाएगा। जिन समस्याओं का समाधान तुरंत किया जा सकता है उसका तत्काल निराकरण किया जाएगा। प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में इस मेगा अभियान को लेकर 38 टीमें बनाई गई है जो पंद्रह दिनों तक गांव में किसानों से मुलाकात कर उनके कृषि से संबंधित समस्याओं को जानेगी। हर टीम एक दिन में तीन गांव का दौरा करेगी। इस तरह से लगभग डेढ़ लाख से अधिक किसानों से संपर्क किया जाएगा। पूरे बिहार में 130 टीम बनाई गई है जो साढ़े छह लाख से अधिक किसानों से संपर्क करेगी।

दैनिक जागरण 30/5/25

केंद्र सरकार का विकसित कृषि संकल्प अभियान शुरू

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने किया शुभारंभ, कंट्रोल रूम बना

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा से विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत हुई। 12 जून तक चलने वाले देशव्यापी अभियान में पठारी प्रक्षेत्र का शुभारंभ केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर ने किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के विज्ञानी बेहतरीन कार्य कर रहे हैं। पिछले दो वर्षों में कुलपति डा. पीएस पांडेय के नेतृत्व में 12 से अधिक पेटेंट हासिल किए गए हैं। हाल में यहां आयोजित लीची शो एक तरह का राष्ट्रीय पर्व बन गया, जिसकी चर्चा कई राज्यों में रही। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के इस अभियान की बहुत बड़ी जिम्मेदारी डा. पांडेय को दी गई है। उन्हें न सिर्फ विश्वविद्यालय क्षेत्र, बल्कि अन्य राज्यों में भी अभियान को सफल बनाना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी किसानों के कल्याण के लिए बेहतर कार्य कर रहे हैं, लगातार निर्णय लिए जा रहे हैं, जिसका फायदा सभी महसूस कर रहे हैं।

पूसा में कार्यकम को संबोधित करते केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर • जागरण

विज्ञानियों के दल को रवाना करते केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री, कुलपति व अन्य • जागरण

पूसा विश्वविद्यालय के कुलपति पठारी प्रक्षेत्र के बनाए गए हैं नोडल पदाधिकारी, बिहार में कुल 130 टीमें की गई हैं गठित

पूसा विश्वविद्यालय में कंट्रोल रूम स्थापित : कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि भारत सरकार के मेगा अभियान से डेढ़ करोड़ से ज्यादा किसानों को फायदा होगा। बिहार और झारखंड में 174 टीम बनाई गई है। हर टीम में पांच से छह विज्ञानी होंगे। उन्होंने बताया कि मेगा अभियान के लिए विश्वविद्यालय में एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। वहीं से अभियान के सभी मूवमेंट की निगरानी की जाएगी। टीम में शामिल विज्ञानियों को निर्देश दिया गया है कि वे किसानों की समस्याओं को नोट करें और उसे तुरंत पोर्टल पर अपडेट करें। किसानों की समस्याओं को उसी दिन केंद्र सरकार के पास भेज दिया जाएगा। ऐसी समस्या, जिस पर अनुसंधान की आवश्यकता है, उसपर अनुसंधान किया जाएगा। जिन समस्याओं का समाधान तुरंत किया जा सकता है, उसका तत्काल निराकरण किया जाएगा।

डेढ़ लाख से अधिक किसानों से संपर्क का लक्ष्य : प्रसार शिक्षा निदेशक डा. मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में मेगा अभियान को लेकर 38 टीम बनाई गई है, जिसमें शामिल विज्ञानी 15 दिनों तक गांवों में किसानों से मुलाकात करेंगे। हर टीम एक दिन में तीन गांव का दौरा करेगी। लगभग डेढ़ लाख से अधिक किसानों से संपर्क करने का लक्ष्य है। बिहार में 130 टीम बनाई गई है जो साढ़े छह लाख से अधिक किसानों से संपर्क करेगी। विकसित कृषि संकल्प अभियान के पूसा विश्वविद्यालय के नोडल पदाधिकारी डा. रत्नेश झा ने कहा कि सभी विज्ञानी दिन भर की गतिविधियों को रिपोर्टिंग पोर्टल पर अपडेट करेंगे। इसकी निगरानी विश्वविद्यालय, राज्य और केंद्र सरकार के स्तर पर की जा रही है। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक किसान अपनी समस्याओं से विज्ञानियों को अवगत कराएं। कार्यक्रम से पहले रामनाथ ठाकुर ने भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

केंद्र सरकार का विकसित कृषि संकल्प अभियान शुरू

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने किया शुभारंभ, कंट्रोल रूम बना

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा से विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत हुई। 12 जून तक चलने वाले देशव्यापी अभियान में पठारी प्रक्षेत्र का शुभारंभ केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर ने किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के विज्ञानी बेहतरीन कार्य कर रहे हैं। पिछले दो वर्षों में कुलपति डा. पीएस पांडेय के नेतृत्व में 12 से अधिक पेटेंट हासिल किए गए हैं। हाल में यहां आयोजित लीची शो एक तरह का राष्ट्रीय पर्व बन गया, जिसकी चर्चा कई राज्यों में रही। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के इस अभियान की बहुत बड़ी जिम्मेदारी डा. पांडेय को दी गई है। उन्हें न सिर्फ विश्वविद्यालय क्षेत्र, बल्कि अन्य राज्यों में भी अभियान को सफल बनाना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी किसानों के कल्याण के लिए बेहतर कार्य कर रहे हैं, लगातार निर्णय लिए जा रहे हैं, जिसका फायदा सभी महसूस कर रहे हैं।

पूसा में कार्यक्रम को संबोधित करते केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर • जागरण

पूसा विश्वविद्यालय के कुलपति पठारी प्रक्षेत्र के बनाए गए हैं नोडल पदाधिकारी, बिहार में कुल 130 टीमें की गई हैं गठित

पूसा विश्वविद्यालय में कंट्रोल रूम स्थापित : कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि भारत सरकार के मेगा अभियान से डेढ़ करोड़ से ज्यादा किसानों को फायदा होगा। बिहार और झारखंड में 174 टीम बनाई गई है। हर टीम में पांच से छह विज्ञानी होंगे। उन्होंने बताया कि मेगा अभियान के लिए विश्वविद्यालय में एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। वहीं से अभियान के सभी मूवमेंट की निगरानी की जाएगी। टीम में शामिल विज्ञानियों को निर्देश दिया गया है कि वे किसानों की समस्याओं को नोट करें और उसे तुरंत पोर्टल पर अपडेट करें। किसानों की समस्याओं को उसी दिन केंद्र सरकार के पास भेज दिया जाएगा। ऐसी समस्या, जिस पर अनुसंधान की आवश्यकता है, उसपर अनुसंधान किया जाएगा। जिन समस्याओं का समाधान तुरंत किया जा सकता है, उसका तत्काल निराकरण किया जाएगा।

विज्ञानियों के दल को रवाना करते केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री, कुलपति व अन्य • जागरण

डेढ़ लाख से अधिक किसानों से संपर्क का लक्ष्य : प्रसार शिक्षा निदेशक डा. मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में मेगा अभियान को लेकर 38 टीम बनाई गई है, जिसमें शामिल विज्ञानी 15 दिनों तक गांवों में किसानों से मुलाकात करेंगे। हर टीम एक दिन में तीन गांव का दौरा करेगी। लगभग डेढ़ लाख से अधिक किसानों से संपर्क करने का लक्ष्य है। बिहार में 130 टीम बनाई गई है जो साढ़े छह लाख से अधिक किसानों से संपर्क करेगी। विकसित कृषि संकल्प अभियान के पूसा विश्वविद्यालय के नोडल पदाधिकारी डा. रत्नेश झा ने कहा कि सभी विज्ञानी दिन भर की गतिविधियों को रिपोर्टिंग पोर्टल पर अपडेट करेंगे। इसकी निगरानी विश्वविद्यालय, राज्य और केंद्र सरकार के स्तर पर की जा रही है। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक किसान अपनी समस्याओं से विज्ञानियों को अवगत कराएं। कार्यक्रम से पहले रामनाथ ठाकुर ने भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

Dainik Jagran 30-05-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा एक जून तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस दौरान उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। कई जिलों में वर्षा की संभावना है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार ने कहा कि इस अवधि में अधिकतम तापमान 33-36 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 26-29 डिग्री सेल्सियस रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
30 मई	35.0	27.0
31 मई	35.5	27.0
	दरभंगा	
30 मई	35.5	27.0
31 मई	35.5	27.5
	पटना	
30 मई	38.0	28.0
31 मई	38.0	28.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik jagran 30-5-2025

वैज्ञानिकों की टीम ने जाना किसानों का हाल

संस, जागरण • पूसा : केंद्र सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतर्गत गुरुवार को वैज्ञानिकों की टीम ने कल्याणपुर एवं समस्तीपुर प्रखंड के सोमनाहा, मालीनगर एवं लदौरा गांव में किसानों के बीच गोष्ठी का आयोजन किया। कल्याणपुर प्रखंड के विभिन्न गांव में कार्यक्रम का नेतृत्व विषय वस्तु विशेषज्ञ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के इंजीनियर विनीत कश्यप ने किया। उन्होंने छोटे यंत्र आधारित खेती और जलवायु अनुकूल फसल विविधीकरण के बारे में जानकारी दी। विषय वस्तु विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने मृदा जांच उपरांत संतुलित उर्वरकों का उपयोग एवं फसल चयन के बारे में बताया। वरीय वैज्ञानिक डा. विजय सिंह मीणा ने किसानों को खरीफ फसलों में नवीनतम तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराई। प्राकृतिक खेती की विभिन्न वीडियो द्वारा खरीफ फसलों का उत्पादन तकनीक एवं सरकारी योजनाओं से कृषकों को डा. सुनीता कुमारी ने अवगत कराया। वहीं उत्तम फसलों के उत्पादन हेतु खरीफ फसलों के कीट की समस्या का निराकरण के बारे में भी जानकारी दी गई।

Dainik Jagran 30-05-2025

कृषि वैज्ञानिकों ने किया प्रोत्साहित

सिंघिया। प्रखंड क्षेत्र के फुलहारा गांव से गुरुवार को विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरू हुआ। इसमें कृषि विज्ञान केन्द्र लादा, प्रखंड कृषि विभाग, आत्मा सहित अन्य विभागों का समन्वय है। इस तरह का अभियान पहली बार हो रहा है जब वैज्ञानिकों के साथ कृषि विभाग समन्वय स्थापित कर गांवों में किसानों के बीच जा रहे हैं और उनकी खेती से संबंधित समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। अभियान के प्रथम दिन प्रखंड के फुलहारा, लिलहौल व लादा गांव में किसानों का चौपाल लगाया। इसमें कृषि वैज्ञानिक केंद्र लादा के वैज्ञानिक डा. अमृता सिन्हा, कृषि विभाग के प्रशिक्षु बीएओ सन्नी शर्मा व आत्मा के ब्रजेश कुमार आदि शामिल थे। चौपाल में कृषि वैज्ञानिक डा. अमृता सिन्हा ने किसानों को खेती की बारीकियां सिखाई। वहीं बीएओ सन्नी शर्मा व आत्मा के ब्रजेश कुमार ने भी किसानों के लिए केंद्र व राज्य सरकारों की विभिन्न संचालित योजनाओं की जानकारी दी। इस संदर्भ में आत्मा के ब्रजेश कुमार ने बताया कि विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत प्रतिदिन तीन तीन गांवों में कार्यक्रम करना है।

Dainik Jagran 30-05-2025

बिहार-झारखंड में 174 टीम के सहयोग से 1.5 करोड़ किसानों को मिलेगा लाभ:वीसी

विकसित कृषि संकल्प अभियान से किसानों को मिलेगा लाभ : मंत्री

कृषि विवि

- विकसित कृषि संकल्प अभियान की केंद्रीय मंत्री ने की शुरुआत
- हरी झंडी दिखाकर वाहनों को किया रवाना सूबे में बनी 130 टीमें

पूसा, निज संवाददाता। केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर ने कहा कि केन्द्र सरकार किसानों के कल्याण के लिए लगातार प्रयासरत हैं। जिसका फायदा किसानों को मिल रहा है। विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत इसी कड़ी का हिस्सा है। जरूरत है किसान हित में कार्यक्रम को शत-प्रतिशत सफल बनाने की। इसकी सफलता को ले विवि को बड़ी जिम्मेवारी दी गई है। वे गुरुवार को विवि के विद्यापति सभागार में कृषि वैज्ञानिको को संबोधित कर रहे थे। मौका था भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के शुरुआत की।

कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि भारत सरकार के इस मेगा अभियान से 1.5०. करोड़ से ज्यादा किसानों को फायदा मिलेगा। बिहार और झारखंड में 174 टीम बनाई गई है। हर टीम में 5-6 वैज्ञानिक होंगे। इस मेगा अभियान के लिए विवि में एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। जहां से अभियान के सभी मूवमेंट की निगरानी होगी। वैज्ञानिक किसानों की समस्याओं को नोट कर उसे तुरंत पोर्टल पर अपडेट करें। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.मयंक राय ने कहा कि इस मेगा अभियान को लेकर 38 टीम बनाई गई है। जो 15 दिनों तक गांवों में किसानों से मुलाकात करेगी। हर टीम 1 दिन में 3 गांव का दौरा करेगी। इस तरह से करीब डेढ़ लाख से अधिक किसानों से संपर्क का लक्ष्य रखा गया है। पूरे बिहार में 130 टीम बनाई गई है। जो साढ़े छह लाख से अधिक किसानों से संपर्क करेगी। नोडल पदाधिकारी डॉ.रत्नेश झा ने कहा कि वैज्ञानिको की रिपोटिंग की निगरानी विवि,राज्य व केन्द्र स्तर पर होगी। मौके पर कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार, एमबीए निदेशक डॉ.रामदत्त समेत डीन, डायरेक्टर व वैज्ञानिक मौजूद थे। बाद में केन्द्रीय मंत्री ने विकसित कृषि संकल्प अभियान से जुड़े वाहनो को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इससे पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने बाल उद्यान में भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। सभागार पहुंचकर दीप प्रज्जवलित कर समारोह की शुरुआत की।

विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत करते केन्द्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर, वीसी।

बेहतर उत्पादन को मृदा संतुलन जरूरी

पूसा, निसं। प्रखंड मुख्यालय परिसर स्थित ई किसान भवन में गुरुवार को खरीफ महोत्सव सह उपादान वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान कृषि विशेषज्ञ मुकेश कुमार देव, शुशील कुमार कुशवाहा ने किसानों को कृषि की नवीनतम तकनीको व सरकार के सहयोग से जुड़ी जानकारी दी। विशेषज्ञों ने कहा कि बेहतर व गुणवत्तायुक्त फसल उत्पादन के लिए मृदा संतुलन बनाये रखने की जरूरत है। समारोह की शुरुआत अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर की। संचालन राकेश कुमार सिंह ने किया। किसानों को इसका शत-प्रतिशत लाभ लेने की जरूरत है। समारोह में प्रखंड प्रमुख रविता तिवारी, बीस सूत्री अध्यक्ष रंधीर कुमार, उपाध्यक्ष रंजीत शर्मा, बीडीओ रविश कुमार रवि, बीएओ शेखर कुमार मधुकर, आत्मा अध्यक्ष महेश कुमार, प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी डॉ.विजय कुमार, माले प्रखंड सचिव अमित कुमार, पूर्व मुखिया प्रदीप मंडल, जीविका बीपीएम इन्द्र कुमार क्रांति, कृषि समन्वयक मनोज कुमार, राजेश कुमार, अवध पटेल, एटीएम आदित्य पाण्डेय, खुशबू कुमारी, पप्पू कुमार, संजीव कुमार आदि थे।

भारत सरकार का विकसित कृषि संकल्प अभियान वैज्ञानिकों के सहयोग से होगा अव्वल : रामनाथ ठाकुर

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत वैज्ञानिक तकनीक एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी, किसानों का फीडबैक, एवं कृषि क्षेत्र में नवाचार के डकुमेन्टेशन से जुड़े सीधा संवाद विषय पर आधारित एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अतिथि के स्वागत अभिनंदन, एवं कुलगीत प्रसारण के उपरांत मुख्य अतिथि भारत सरकार में कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर, विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पीएस पाण्डेय आदि ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्‌घाटन किया। अपने संबोधन में श्री ठाकुर ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक काफी अच्छा कार्य कर रहे है। भारत सरकार का विकसित कृषि संकल्प अभियान कृषि वैज्ञानिकों के सहयोग से विवि में अव्वल रहेगा। इस दरम्यान उन्होंने किसानों के द्वारा खेती में उपयोग की जाने वाली तकनीक के संग्रह करने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि भारत सरकार के इस अभियान में बहुत बड़ी जिम्मेदारी डॉ पांडेय को दी गई है। उन्हें न

वैज्ञानिकों के दल को रवाना करते मुख्य अतिथि व कुलपति।

सिर्फ विश्वविद्यालय बल्कि बिहार सहित अन्य राज्यों में भी इस अभियान को सफल बनाना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी किसानो के कल्याण को लेकर लगातार निर्णय ले रहे है, जिसका फायदा लोग महसूस कर रहे है। उन्होंने कहा कि पिछले दो वर्षों में कुलपति डॉ पीएस पांडेय के नेतृत्व में बारह से अधिक पेटेंट हासिल किये गये है। लीची शो को तो डॉ पांडेय ने राष्ट्रीय पर्व बना दिया है, जिसकी चर्चा कई राज्यों में है। उद्‌घाटन के बाद मुख्य अतिथि श्री ठाकुर ने वैज्ञानिकों के दल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया साथ ही भारत रत्न श्री कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर उपस्थित विवि के कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि भारत सरकार के इस मेगा अभियान से डेढ़ करोड़ से ज्यादा किसानों को फायदा होगा। इस अभियान केलिए बिहार एवं झारखंड में 174 टीम बनाई गई है। प्रत्येक टीम में पांच से छह वैज्ञानिक है। ये टीमें प्रतिदिन तीन गांवों का दौरा करेंगी इस दौरान वे किसानों से मिल कर उनकी समस्याओं की जानकारी लेंगे और भारत सरकार के प्रयासों का फीट बैक लेंगे। जिन समस्याओं पर अनुसंधान की आवश्यकता है उस पर अनुसंधान किया जाएगा। जिस समस्या का समाधान तुरंत किया जा सकता है उसका तत्काल समाधान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस मेगा अभियान के लिए विश्वविद्यालय में एक नियंत्रण कक्ष का स्थापित किया गया है। जहां से अभियान के सभी गतिविधि की निगरानी की जायेगी। कुलपति ने कहा कि वैज्ञानिकों को निर्देश दिया गया है कि वे किसानों की समस्याओं को नोट करें और उसे तुरंत पोर्टल पर अपडेट करें। जिसे उसी दिन केंद्र सरकार को भेज दिया जाएगा। इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में इस मेगा अभियान को लेकर 38 टीम और पूरे बिहार में 130 टीम बनाई गई है। जो इन 15 दिनों में पूरे बिहार के लगभग 6 लाख से अधिक किसानों से संपर्क करेंगी। विकसित कृषि संकल्प अभियान के विश्वविद्यालय के नोडल पदाधिकारी डॉ रत्नेश झा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि सभी वैज्ञानिकों की गतिविधियों की निगरानी विश्वविद्यालय स्तर व राज्य स्तर एवं केंद्र सरकार के स्तर पर की जा रही है। कार्यक्रम का संचालन डॉ कुमारी अंजनी ने किया। मौके पर कुलसचिव डॉ मृत्युजय कुमार, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा, डीन फिशरीज डॉ पीपी श्रीवास्तव, डीन डॉ उषा सिंह, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ पीके झा, डॉ रामदत्त, डॉ शिवपूजन सिंह समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

छात्रों व किसानों के बीच हुआ ज्ञान का आदान-प्रदान

किसानों को कृषि तकनीक से रूबरू कराते छात्र.

पूसा. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एमएससी कृषि प्रसार शिक्षा के छात्रों ने गांव में किसान स्थल का दौरा किया. कार्यक्रम का उद्देश्य अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय के छोटे और सीमांत किसानों की समस्याओं और आवश्यकताओं का मूल्यांकन करना था. ताकि उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके. यह दौरा डॉ. विनिता सत्यपथी के समन्वयन में हुआ. जिसमें छात्रों और किसानों के बीच एक बेहतर समझ और सहयोग स्थापित किया गया. इस अवसर पर केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के सहयोग से संचालित कृषि ज्ञान वाहन की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और भी महत्वपूर्ण बना दिया. कृषि विशेषज्ञों और प्रशिक्षकों ने इस ज्ञान वाहन के माध्यम से किसानों को उन्नत कृषि पद्धतियों, जलवायु परिवर्तन से बचाव, मृदा स्वास्थ्य, और आधुनिक कृषि उपकरणों के उपयोग पर मार्गदर्शन दिया. कृषि ज्ञान वाहन जो एक अभिनव पहल है विशेष रूप से ग्रामीण और दूर-दराज के इलाकों में किसानों को कृषि ज्ञान और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए शुरू किया गया है. अब तक इस पहल ने कई गांवों का दौरा किया है. किसानों को नई कृषि तकनीकों, बीज चयन, फसल सुरक्षा, और वैकल्पिक कृषि व्यवसायों के बारे में जानकारी दी है.

प्रभात खबर
Saturday, May 31, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/6839fe9b7ce370dcfde152e

अरहर : मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक

डॉ अनिल कुमरा सिंह
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान केवीके, वैशाली

डॉ रजनीश सिंह
वैज्ञानिक
केवीके सरैया

- अच्छी जल निकासी वाली दोमट या काली मिट्टी अरहर की खेती के लिए उपयुक्त
- बुवाई से पहले बीजों को फफूंदनाशक से उपचारित करना जरूरी
- सीड ड्रिल की सहायता से भी अरहर की बुवाई की जाती है

संवाददाता, मुजफ्फरपुर

अरहर को तुअर, तूअर या पीजन पी भी कहा जाता है, यह देश के प्रमुख दालों में से एक है. अरहर की दाल हर भारतीय रसोई का अहम हिस्सा है. इसके अलावा, यह मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक होती है, क्योंकि इसकी जड़ें वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करती हैं. अरहर की खेती के लिए मध्यम वर्षा (600-1000 मिमी) और गर्म तापमान (2 5 डिग्री सेंटीग्रेट से 35 डिग्री सेंटीग्रेट) की आवश्यकता होती है. अच्छी जल निकासी वाली दोमट या काली मिट्टी अरहर के लिए उपयुक्त होती है. क्षारीय या अत्यधिक अम्लीय भूमि दाल की खेती के लिये उपयुक्त नहीं है.

बीज की तैयारी और बुवाई का समय

अरहर की बुवाई मानसून की शुरुआत (जून से जुलाई) में की जाती है. बीज की मात्रा 12-15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होती है. बुवाई से पहले बीजों को फफूंदनाशक (जैसे थिरम या कार्बेन्डाजिम) से उपचारित करना चाहिये. अच्छी पैदावार के लिए गोबर की सड़ी खाद (10-15 टन प्रति हेक्टेयर) खेत में डालनी चाहिये. इसके अलावा, रासायनिक उर्वरकों में नाइट्रोजन (20-25 किग्रा हेक्टेयर), फास्फोरस (40-50 किग्रा हेक्टेयर) और पोटाश (20 किग्रा हेक्टेयर) की मात्रा दी जा सकती है. इसकी फसल काली मिट्टी में सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है. अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी, जिसका पीएच 7.0-8.5 के बीच होता है, वह भी अरहर की बुवाई के लिए उत्तम है. इसकी बुवाई 2 इंच की गहराई पर डिब्बलिंग करके रोपण की उठी हुई क्यारी विधि में भी की जाती है. सीड ड्रिल की सहायता से भी इसकी बुवाई की जाती है.

सिंचाई और खरपतवार नियंत्रण

अरहर को ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती. यह सूखे को सहन कर सकती है, लेकिन लंबे समय तक सूखे के मामले में तीन सिंचाई की आवश्यकता होती है. पहली बुवाई के 30 दिनों के बाद. दूसरी बुवाई के 70 दिनों के बाद और तीसरी बुवाई के 110 दिनों के बाद. इस दाल की फसल के पकने पर उसका रंग देखा जाता है. पौधों को आमतौर पर जमीन से 75-25 सेमी के ऊपर एक दरांती की मदद से काटा जाता है. खरपतवारों को नियंत्रण में रखने के लिए शुरुआती 30-40 दिनों में 1-2 निराई-गुड़ाई आवश्यक होती है. अरहर में पत्ती मुरझाना, फफूंद जनित रोग, पत्ती पर धब्बे तथा कीट जैसे चने की इल्ली और थ्रिप्स आम हैं. इनके नियंत्रण के लिए उचित फफूंदनाशक और कीटनाशकों का प्रयोग करना चाहिये जैसे- नीम आधारित कीटनाशक या इमामेक्टिन बेंजोएट.

फसल की कटाई और उपज

अरहर की फसल लगभग 6-8 महीने में तैयार होती है. जब फलियों का रंग भूरा होने लगे और सूखने लगें, तब फसल की कटाई करनी चाहिए. औसतन उपज 12-20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है, जो किस्म और देखरेख पर निर्भर करती है. अरहर की खेती किसानों के लिए लाभकारी है, क्योंकि यह पोषण के साथ-साथ आर्थिक दृष्टि से भी फायदेमंद होती है. यदि वैज्ञानिक तरीकों से इसकी खेती की जाए, तो इससे न केवल अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है, बल्कि मिट्टी की गुणवत्ता भी बनी रहती है.

भास्कर 3/5/25 पेज 17

कार्यक्रम • तीन राजस्व ग्राम शहरु, बोरे, रजौर में किसानों के बीच गोष्ठी का आयोजन किया गया

किसानों को छोटे-छोटे कृषि यंत्र आधारित खेती और जलवायु अनुकूल फसल विविधीकरण के बारे में बताया

भास्कर न्यूज | शिवाजीनगर

प्रखंड अंतर्गत केंद्र सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के दूसरे दिन शुक्रवार को वैज्ञानिकों की टीम ने शिवाजीनगर प्रखंड अंतर्गत दहियार रत्ना एवं रजौर रामभद्रपुर पंचायत के तीन राजस्व ग्राम शहरु, बोरे, रजौर में किसानों के बीच गोष्ठी का आयोजन किया। प्रत्येक गोष्ठी में अधिक संख्या में किसानों ने भाग लिया। गोष्ठी का नेतृत्व प्रशिक्षु बीएओ रक्षित मनु ने किया। इस अवसर पर प्रशिक्षु बीएओ रक्षित मनु ने किसानों को छोटे-छोटे कृषि यंत्र आधारित खेती और जलवायु अनुकूल फसल विविधीकरण के बारे में विस्तार से बताया। जिला उप परियोजना निदेशक आत्मा नोडल गणेश चौधरी ने मृदा जांच उपरांत मृदा में संतुलित उर्वरकों के प्रयोग एवं फसल चयन के बारे में बताया। कृषि विज्ञान केंद्र लादा से वैज्ञानिक एमिटी ने

शिवाजीनगर में विकसित संकल्प अभियान कार्यक्रम में मौजूद पदाधिकारी व किसान।

किसानों को खरीफ फसलों में नवीनतम तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराई। किसानों को बस में चल रहे वीडियो फिल्म से प्राकृतिक खेती, खरीफ फसलों का उत्पादन तकनीक, सरकारी योजनाओं आदि के बारे में बताया गया। इफको कंपनी से आए प्रशिक्षक बंशीधर सिंह , यशवंत कुमार ने किसानों को फल फसलों में लगने वाली बीमारियां और उससे बचाव के बारे में बताया गया, उन्होंने किसानों को खरीफ फसलों में उपयोग होने वाले विभिन्न तकनीकों के बारे में बताया। विभिन्न फसलों में लगने वाले रोग एवं कीटों से बचाव को लेकर किसानों को जानकारी दी। उन्होंने किसानों को फसल विविधीकरण एवं यांत्रिकीकरण के बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों को बीज उपचार के लाभ, वैज्ञानिक पद्धति से पपीते की खेती और खेत में कीटनाशक के प्रयोग की जानकारी दिया गया, डी एस आर विधि एवं श्री विधि से धान लगाने की फायदा बताया। मौके पर मुखिया रामचंद्र सिंह, नवीन कुमार सिंह, कृषि समन्वयक मणिकांत चौधरी,पुरुषोत्तम कुमार, दीपक कुमार,पुष्पेश शुभ्रांशु, सहायक तकनीकी प्रबंधक अमरदीप शर्मा, किसान सलाहकार विशंभर नाथ,संजय कुमार, मुरारी कुमार सहित अन्य कृषि कर्मी एवं किसान मौजूद थे।

भास्कर 31/5/25 पेज 17

विकसित कृषि संकल्प अभियान • नई कृषि तकनीक, फसलों के नए प्रभेद, जलवायु अनुकूल कृषि से अवगत कराया

पूसा के छह गांवों के किसानों को केवीके बिरौली के वैज्ञानिकों की दो टीमों ने दिए खेतीबाड़ी से जुड़े टिप्स

भास्कर न्यूज | पूसा

भारत सरकार के विकसित कृषि संकल्प अभियान के दूसरे दिन केवीके बिरौली द्वारा गठित वैज्ञानिकों की दो टीमों ने पुसा के मोरसंड, ठहरा, चंदौली, दिघरा, महमदपुर देवपार और दक्षिणी हरपुर गांव में पहुंचकर किसानों के साथ कृषक गोष्ठी की। गोष्ठी के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को नई-नई कृषि तकनीकों, फसलों के नए प्रभेद, जलवायु अनुकूल कृषि आदि जैसे विषयों से अवगत कराया। इस अवसर पर वैज्ञानिकों का नेतृत्व कर रहे केवीके हेड डॉ. आरके तिवारी ने किसानों को छोटे छोटे कृषि यंत्र आधारित खेती और जलवायु अनुकूल फसल विविधीकरण के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने किसानों को मृदा जांच उपरांत मृदा में संतुलित उर्वरकों के प्रयोग एवं फसल चयन के बारे में भी

गोष्ठी में किसानों को जानकारी देते वैज्ञानिक।

विस्तार से बताया। उन्होंने ड्रोन के प्रयोग तथा प्राकृतिक खेती से संबंधित तकनीकी जानकारी भी किसानों को दी। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा के वरीय वैज्ञानिक डॉ. विजय सिंह मीणा ने किसानों को खरीफ फसलों की खेती को लेकर नवीनतम तकनीकों की जानकारी दी। गोष्ठी के दौरान किसानों को बस में चल रहे वीडियो फिल्म के माध्यम से प्राकृतिक खेती, खरीफ फसलों के उत्पादन तकनीक, सरकारी योजनाओं आदि के बारे में भी बताया गया। वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी ने किसानों को फल फसलों एवं फलों में लगने वाली बीमारियां और उससे बचाव के बारे में जानकारी दी। डॉ. धीरू कुमार तिवारी और विषय वस्तु विशेषज्ञ भारती उपाध्याय ने किसानों को खरीफ फसलों में उपयोग होने वाले विभिन्न तकनीकों के बारे में बताया।

विवि के अधीन वैज्ञानिकों की 38 टीमें बिहार के किसानों को कर रहे जागरूक

कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के तहत डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा से जुड़े वैज्ञानिकों की कुल 38 टीमें पिछले दो दिनों में विभिन्न जिलों के लगभग दो सौ से अधिक गांवों का दौरा कर चुकी हैं। इन सभी 38 टीम में विभिन्न विषयों के पांच से छह वैज्ञानिक शामिल हैं। ये वैज्ञानिक किसानों की समस्याओं का तत्काल निराकरण कर रिपोर्टिंग पोर्टल पर सभी जानकारी भी अपडेट कर रहे हैं। दूसरी तरफ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.पी एस पांडेय, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. मयंक राय और नोडल पदाधिकारी डा. रत्नेश झा भी दो दिनों से विश्वविद्यालय में स्थापित कंट्रोल रूम के माध्यम से सभी टीम का लगातार अपडेट ले रहे हैं। इस अभियान के दौरान ज्यादातर किसान धान की बुआई, आम और लीची में लगने वाले रोग, पपीता के रोग तथा फसल बीमा योजना से संबंधित सवाल पूछ रहे हैं। वैज्ञानिकों से मिलकर किसान काफी खुश भी हैं।

विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के तहत वैज्ञानिक पहुंचे गांव, अपडेट लेते रहे कुलपति

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय से विकसित कृषि संकल्प अभियान कार्यक्रम के तहत दूसरे दिन वैज्ञानिकों की सभी 38 टीमें बिहार के विभिन्न जिलों के लगभग दो से अधिक गांवों में पहुंची। सभी टीमों में विभिन्न विषयों के पांच से छह वैज्ञानिक शामिल हैं। वैज्ञानिकों ने गांव में पहुंच किसानों के समस्याओं का तत्काल निराकरण एवं रिपोर्टिंग पोर्टल पर सभी जानकारी को अद्यतन करते रहे। वहीं विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पी एस पांडेय, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ मयंक राय और नोडल पदाधिकारी डॉ रत्नेश झा ने विश्वविद्यालय में स्थापित नियंत्रण कक्ष के जरिए सभी टीमों से लगातार अपडेट लेते रहे। इस दौरान अधिकतर किसानों ने धान की बुवाई एवं आम, लीची व पपीता में लगने वाले रोग एवं फसल बीमा योजना से जुड़े सवालों पर जानकारी चाही। इसी क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की दो टीमों ने विभिन्न गांवों में कुल 6 स्थान पर कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें इंजीनियर विनीता कश्यप के नेतृत्व बाली टीम

जानकारी देते वैज्ञानिक एवं उपस्थित किसान।

वन ने मोहम्मदपुर देवपार, दक्षिण हरपुर एवं दिघडा पंचायत में इस कार्यक्रम को आयोजित किया। इस टीम में विनीता के अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र पूसा के वरीय वैज्ञानिक डॉक्टर विजय सिंह मीणा ने मिट्टी के जांचोपरांत फसलों में विभिन्न पोषक तत्वों का प्रयोग तथा प्राकृतिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। वहीं विषय वस्तु विशेषज्ञ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली सुमित कुमार सिंह ने फसलों में लगने वाले विभिन्न रोगों एवं कीट व्याधि के समुचित प्रबंधन से जुड़े जानकारी किसानों को उपलब्ध कराया। सह प्राध्यापक सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ कुमारी सुनीता ने फसल के विभिन्न उत्पादों के वैल्यू एडिशन के बारे में जानकारी दी। जबकि डॉ मुकेश कुमार सिंह ने मछली पालन में आने वाली समस्याओं एवं उसके उत्पादन कर अधिक लाभ कैसे कमाया जाएं इसके बारे में विस्तृत जानकारी दी। दूसरी तरफ विषय वस्तु विशेषज्ञ उद्यान कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली डॉ धीरू कुमार तिवारी की टीम 2 ने चंदौली, मोरसंड एवं ठहरा गांव में यह कार्यक्रम आयोजित किया। इस टीम के सश्य विज्ञान पूसा के सह प्राध्यापक डॉक्टर धर्मेंद्र कुमार ने खरीफ मौसम में लगने वाले विभिन्न फसलों की वैज्ञानिक विधि की जानकारी के साथ ही सिंचाई प्रबंधन की भी जानकारी दी। वहीं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय इकाई पूसा के वैज्ञानिक डॉक्टर मोहम्मद हसनैन ने मिट्टी नमूना के संग्रहण की विधि एवं उसके जांच के महत्व व उपयोगिता के बारे मे जानकारी दी। बिहार सरकार के सहायक निदेशक उद्यान डॉ प्रशांत ने सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी देते हुए खरीफ मौसम लगाये जाने वाले प्याज पर विस्तृत जानकारी दी। इसके अलावा कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक डॉ आरके तिवारी ने किसानों को फसल में ड्रोन के प्रयोग तथा प्राकृतिक खेती से जुड़ी तकनीकी जानकारी दी।

Rashtriya Sahara 31-05-2025